फोनः-4103333, 2362400 फैक्सः-0141-2373513 वर्षः 75 संख्याः 95 प्रभात जयपुर, बुधवार 6 नवम्बर, 2024 डाक पं.सं. जयपुर सिटी/001/2021-23 पृष्ठ 8 मूल्य 2.75 रु.

जयपुर • कोटा • बीकानेर • उदयपुर • अजमेर • जालोर • हिण्डौनसिटी • चूरू

epaper.rashtradoot.com

ARBiT

राष्ट्रदूत

Metro

Rashtradoot

Being Valued is what we missed in India!

It was a completely unbounded problem. No one in the world, at that time, had recovered a liquid propellant booster after an orbital launch.

The World's Most Beautiful Cities

Can the 3-2-1 rule help you sleep better?

23 नवम्बर को वायनाड की संसदीय सीट के चुनाव बाद नये संतुलन बनेंगे लोकसभा में?

जैसी की उम्मीद है, प्रियंका गांधी जीतेंगी तथा कांग्रेस में दो टीम उभरेंगी लोकसभा में, राहुल गांधी की टीम व प्रियंका गांधी की टीम

- रेणु मित्तल -
- राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो -

नई दिल्ली, 5 नवम्बर। ऐसी आशा की जा रही है कि अगर 23 नवम्बर को प्रियंका गांधी वायनाड से लोकसभा के लिए निर्वाचित हो जाती हैं तो कांग्रेस पार्टी के अन्दर तथा संसद में सत्ता के संतुलन में एक बड़ा बदलाव देखने को मिलेगा।

संसद का शीतकालीन सत्र 25 नवम्बर को शुरू होगा तथा इस सत्र के दौरान, लोकसभा और राज्यसभा में गांधी परिवार के तीन सदस्य पहली बार दिखाई देंगे।

जहां पार्टी के दो ताकतवर नेता सोनिया गांधी तथा मल्लिकार्जुन खड़गे राज्यसभा में होंगे, वहीं सबकी निगाहें लोकसभा पर लगी होंगी, जहां राहुल गांधी एवं प्रियंका गांधी मौजूद होंगे।

लोकसभा में ही सत्ता की असली राजनीति दिखाई देगी।

प्रियंका ने अपने लिए किस प्रकार की भूमिका सोच रखी है इस बारे में काफी अटकलें चल रही हैं।

- राहुल व प्रियंका की राजनीतिक स्टाइल में काफी अन्तर है। राहुल गांधी ज्यादा समय सदन में गुजारने में विश्वास नहीं रखते, और हर समय प्रतिद्वंदी पार्टी से हर मौके पर पंजा लड़ाने में रुचि नहीं रखते।
- पर प्रियंका गांधी ''हैण्ड्स ऑन'' राजनीतिज्ञ हैं, तथा सदन में सत्ता पक्ष से भिड़ने का कोई मौका गंवाना नहीं चाहतीं, और चाहेंगी कि उनकी महिला ब्रिगेड व समर्थकों की जमात उनके बगल में खड़ी रहे, सत्तापक्ष से लोहा लेने के लिए। अतः शीघ्र ही प्रियंका गांधी अपना एक और नया ''पावर सेन्टर'' खड़ा कर लेंगी।
- इसी प्रकार प्रियंका गांधी संगठन में भी सक्रिय होंगी, तथा अपने टीम के लोगों को और पद दिलाना चाहेंगी, अतः देखना यह है कि प्रियंका कितनी बड़ी व शक्तिशाली टीम बना पाती हैं।
- यह देखना काफी रोचक रहेगा कि कांग्रेस का कौन सा नेता किस टीम से जुड़ने का प्रयास कर रहा है।

राहुल गांधी हर मौके पर नज़र आने वाले राजनेता नहीं हैं तथा वे सदन में बहुत ज्यादा समय गुजारने में विश्वास नहीं रखते।

ऐसी आशा की जा रही है कि प्रियंका लोकसभा में हमेशा नज़र आने वाली नेता के रूप में अपनी पूरी ''फार्म'' में रहेंगी तथा पार्टी के बहुत सारे सांसद, जिनमें पार्टी की महिला ब्रिगेड भी शामिल है, हर वक्त उनके साथ खड़े दिखाई देंगे।

राहुल गांधी की टीम को यह भी आशंका है कि चुनावी राजनीति में प्रियंका गांधी के प्रवेश से पार्टी में सत्ता का एक नया ढांचा अस्तित्व में आयेगा। यही कारण है कि राहुल गांधी, प्रियंका के चुनावी राजनीति में आगमन बहुत ज्यादा उत्कंठित नहीं थे।

राहुल गांधी के दायें हाथ माने जाने वाले के. सी. वेणुगोपाल वायनाड में पूरा समय दे रहे हैं क्योंकि वे प्रियंका गांधी के साथ ''वर्किंग रिलेशनशिप'' बनाना चाहते हैं। दरअसल, ऐसा माना जा रहा है कि नियुक्तियों, पदोन्नतियों तथा पद से हटाने में अब प्रियंका गांधी की ज्यादा चलेगी।

सभी लोगों की नज़रें इन भाई-बहिन पर हैं कि इनमें से कौन किस दिशा में जाता है तथा प्रियंका गांधी अपने सहयोग के लिए कितने ज्यादा सक्षम एवं समर्पित लोग तैयार कर सकती हैं।

अब ऐसी आशा की जा रही है कि अब प्रियंका संगठन में स्वयं को ज्यादा मजबूत एवं प्रबल बनायेंगी तथा अपने कुछ विश्वस्त लोगों को संगठन में

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

'यूपी मदरसा एक्ट संवैधानिक रूप से वैध है'

- जाल खंबाता -
- राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो -

नई दिल्ली, 5 नवम्बर। सर्वोच्च न्यायालय ने मंगलवार को ''यू.पी. मदरसा एजूकेशन एक्ट, 2004'' के संवैधानिक वैधता का समर्थन करते

- सुप्रीम कोर्ट ने इलाहाबाद हाईकोर्ट का आदेश रद्द किया, जिसमें यूपी मदरसा एक्ट को असंवैधानिक बताया गया था।

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

''जे.एम.एम.'' यानि ''जमकर मलाई मारो''

-जाल खंबाता-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 5 नवंबर। मंगलवार को झारखण्ड के हटिया और लोकर

- केन्द्रीय रक्षामंत्री राजनाथ सिंह ने झारखंड की एक चुनावी सभा में झारखंड मुक्ति मोर्चा पर भारी भ्रष्टाचार का आरोप लगाते हुए टिप्पणी की।

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

अमेरिका में राष्ट्रपति चुनाव के बाद भारी हिंसा होगी ?

आशंका इसलिए है, क्योंकि, मतदान सर्वेक्षकों का मानना है कि, दोनों उम्मीदवारों में से कोई भी स्पष्ट रूप से नहीं जीत पाएगा

-सुकुमार साह-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 5 नवम्बर। अमेरिका में अनियमितता के माहौल और इन खबरों के बीच मतदान हुआ है कि चुनाव नतीजे आने के बाद राजनैतिक असंतोष व हिंसा हो सकती है। देश भर के मतदान केन्द्रों पर कड़ी सुरक्षा व्यवस्था की गई है खास तौर से उन स्टेट्स में जहां मुकाबला बेहद कड़ा है। राजनैतिक विशेषज्ञों का अनुमान है कि 6 जनवरी 2020 को ट्रम्प के हारने के बाद कैपिटल हिल के जो हिंसा व तोड़फोड़ हुई थी वही स्थिति फिर से पैदा हो सकती है।

चैट जी पीटी द्वारा सृजित नॉस्ट्रडैमस के ए.आई. संस्करण ने भविष्यवाणी की है कि दोनों में से कोई भी प्रत्याशी पूरी तरह से नहीं जीतेगा। इसने चुनाव नतीजे के बाद अराजकता पैदा होने की बात कही है। नॉस्ट्रडैमस 16वीं सदी के फ्रैंच भविष्यवक्ता भौतिक शास्त्री तथा संत थे उनके लेखन में भविष्य की घटनाओं की भविष्यवाणियां निहित हैं, जिनमें युद्ध, प्राकृतिक आपदाएं और राजनैतिक हस्तियों का उदय प्रमुख हैं।

ए.आई. की भविष्यवाणी के अनुसार ''अंतिम क्षणों के एक ट्विस्ट हो सकता है और कोई भी कुर्सी पर दावा करने की स्थिति में नहीं होगा।'' इसका अर्थ है ट्रम्प और हैरिस दोनों में से किसी को भी स्पष्ट जीत नहीं मिलेगी। अगर ऐसा हुआ तो अमेरिकन संविधान के बारहवे संशोधन के अनुसार हाउस ऑफ रिप्रैजैंटेटिव्स प्रतिनिधि सभा, विजेता का निर्णय करेगा। ऐसी स्थिति में एक प्रत्याशी को जीतने के लिए सदन का बहुमत

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

- सोलहवीं शताब्दी के भविष्य वक्ता नॉस्ट्रडेमस के, चैट जी.पी.टी. द्वारा तैयार ए.आई. संस्करण की भविष्यवाणी भी यह ही जता रही है कि, ट्रम्प व हैरिस दोनों राष्ट्रपति का चुनाव नहीं जीत पायेंगे।
- इसका मतलब यह लगाया जा रहा है कि न तो ट्रम्प और न ही हैरिस साफ-सुथरी स्पष्ट जीत हासिल कर पायेंगे।
- अगर ऐसा हुआ तो हाउस ऑफ रिप्रज़ैन्टेटिव ही बहुमत से निर्णय लेगा कि किसे राष्ट्रपति बनाया जाये।
- इस अनिश्चितता की स्थिति में ए.आई. का मानना है कि तनाव बढ़ेगा, तथा हिंसा फैलेगी।
- हिंसा की आशंका के कारण, पोलिंग स्टेशन्स पर सुरक्षा सुदृढ़ की गई है।
- सर्वे के अनुसार केवल 29 प्रतिशत अमेरिकी मानते हैं कि, ट्रम्प अपनी हार आसानी से, शांति से स्वीकार कर लेंगे।
- मजे की बात यह भी है कि, 20 प्रतिशत अमेरिकी मन से हिंसा का समर्थन करते हैं, उनका मानना है कि हिंसा आवश्यक है देश के हालात सही करने के लिए, देश को सही दिशा में ले जाने के लिए।

श्री नरेंद्र मोदी
प्रधानमंत्री

सत्यमेव जयते
Government of Rajasthan

RISING™ RAJASTHAN

एजुकेशन प्री-समिट

दिनांक: 6 नवम्बर 2024

मुख्य अतिथि: माननीय मुख्यमंत्री श्री भजनलाल शर्मा

श्री भजनलाल शर्मा
मुख्यमंत्री, राजस्थान

कार्यक्रम स्थल: होटल इंटरकॉन्टिनेंटल, टोंक रोड, जयपुर

नई शिक्षा नीति: शिक्षा के क्षेत्र में भविष्य की नई संभावनाएं (कौशल और डिजिटल तकनीक)

ज्ञान संकल्प पोर्टल

FICCI

विचार बिन्दु

धन ना भी हो तो आरोग्य, विद्वता सज्जन-मैत्री तथा स्वाधीनता मनुष्य के महान ऐश्वर्य हैं। –अज्ञात

स्वास्थ्य सेवाओं के निजीकरण के खतरों को समझने की जरूरत

इंडियन मेडिकल एसोशिएशन (आईएमए) के अध्यक्ष डॉ. आर. वी. अशोकन ने सोशल मीडिया 'एक्स' पर अपनी पोस्ट में लिखा है कि कोलकाता के आरजी कर अस्पताल में जो हुआ, उसने देश के मेडिकल कॉलेजों में फैली सड़ांध को सामने ला दिया है। चिकित्सकों के सर्वोच्च संगठन का अध्यक्ष यदि ऐसा कहता है तो उसे अनदेखा नहीं किया जा सकता। बाद में एक भेंटवार्ता में उन्होंने अपनी इस टिप्पणी को व्याख्यायित भी किया है। किसी को अच्छा लगे या न लगे, डॉ. अशोकन देश में मेडिकल क्षेत्र में आई गिरावट के लिये उसके निजीकरण को मानते हैं। वे कहते हैं कि इसकी शुरुआत सरकार द्वारा लोगों की स्वास्थ्य सेवा संबंधी जरूरतों को निजी हाथों में सौंपने से हुई है। खुद सरकार के आंकड़ों का विश्लेषण भी यही बताता है। जैसे देश में स्वास्थ्य सेवा पर कुल खर्च जीडीपी का करीब 3.9 प्रतिशत है, जिसमें सरकार का योगदान 1.1 प्रतिशत है और निजी क्षेत्र का योगदान 2.8 प्रतिशत है।

इसका मतलब है कि निजी क्षेत्र स्वास्थ्य सेवा पर सार्वजनिक क्षेत्र से दो गुना ज्यादा खटच करता है। यह बहुत स्पष्ट है कि स्वास्थ्य सेवाओं से अपना पल्ला झाड़ते हुए सरकार ने निजीकरण की जो राह पकड़ी है उसका असर मेडिकल के किसी एक क्षेत्र में नहीं बल्कि सर्वत्र हुआ है। सरकारी नीति परिवर्तन से सार्वजनिक क्षेत्र में नये पदों का सृजन लगभग बंद हो गया। मेडिकल अधिकारियों की भर्ती पिछली बार कब हुई किसी को याद नहीं। नई नीतियों के चलते बढ़ती जनसंख्या के अनुपात में मेडिकल अधिकारियों की संख्या नहीं बढ़ी है और स्वास्थ्य व्यवस्था अंदर से खोखली होती चली गई है। सार्वजनिक स्वास्थ्य व्यवस्था में भी तदर्थ नियुक्तियों का चलन आम हो गया है। परंपरागत व्यवस्था को दरकिनार करते हुए राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन की समानांतर व्यवस्था बना दी गई है। ऐसा सार्वजनिक निवेश की कमी और स्वास्थ्य सेवा और चिकित्सा शिक्षा को निजी क्षेत्र को सौंपने के कारण हुआ है। चूंकि एमबीबीएस डॉक्टरों में बहुत अधिक बेरोजगारी है, इसलिए पोस्ट-ग्रेजुएशन करने के अलावा उनके सामने कोई विकल्प नहीं है, क्योंकि जब तक उनके पास विशेषज्ञता न हो, हर एमबीबीएस स्नातक अपने को बेकार महसूस करता है। दूसरी तरफ हर साल, एक लाख दस हजार छात्र एमबीबीएस पास करते हैं, लेकिन केवल 65,000 पोस्ट ग्रेजुएट सीटें हैं। इसलिए, हर साल, 45,000 एमबीबीएस स्नातकों को पोस्ट-ग्रेजुएशन के लिए प्रवेश नहीं मिलता है। वे इसे छोड़ने या कुछ और करने से पहले कम से कम तीन प्रयास करते हैं। फिर उन एमबीबीएस स्नातकों की संख्या की भी गणना करें जो कोचिंग सेंटरों में रह जाते हैं! तो, डेढ़ लाख छात्र अपना समय कोचिंग सेंटरों में बिताते हैं क्योंकि उनके पास भी और कोई विकल्प नहीं है। एक तरफ सरकार मेडिकल अधिकारियों की भर्ती नहीं कर रही है, और दूसरी तरफ सिर्फ़ एमबीबीएस की डिग्री लेकर कोई अपनी क्लिनिक नहीं खोल सकता। हम पाते हैं कि एमबीबीएस किए हुए युवाओं को दिहाड़ी मज़दूरी पर रात की नौकरी करनी पड़ती है।

क्या पश्चिम बंगाल के अस्पताल में हुई दुभाग्यपूर्ण घटना जैसी सारी समस्याएं तब शुरू हुईं जब सरकार ने शिक्षा और स्वास्थ्य सेवा से हटकर इसे निजी क्षेत्र को दे दिया? इस सवाल के जवाब में डॉ. अशोकन कहते हैं कि कोलकाता के मेडिकल कॉलेज में जो हुआ, वह कोई अकेली घटना नहीं थी। अभी स्थिति ऐसी है कि इस तरह की घटनाएं पूरे देश में होती रहेंगी। बंगाल को क्यों दोष दें? हर राज्य में यही स्थिति है। हर मेडिकल कॉलेज में यही स्थिति है। हर मेडिकल विभाग में यही स्थिति है। अधिक शौचालय बनाने और सीसीटीवी लगाने से यह नहीं बदलेगा। ऐसी हिंसा की घटनाएं स्वास्थ्य में निवेश की कमी के कारण है। अब हालात ऐसे बन गये हैं कि एक तरफ सरकारी संस्थानों में निवेश और मानव संसाधन की कमी है और दूसरी तरफ निजी क्षेत्र के अस्पताल उद्योग बन गये हैं। तो गरीब लोग लोग स्वास्थ्य सेवा के लिए कहां जाएंगे? इसी वजह से लोगों में गुस्सा है और डॉक्टर आसान निशाना बन रहे हैं क्योंकि वे मरीज के करीब होते हैं। डॉक्टर स्वास्थ्य व्यवस्था का चेहरा होते हैं, खासकर रेजिडेंट डॉक्टर और ड्यूटी डॉक्टर जो आपात स्थिति और हताहतों की देखभाल करते हैं। स्वाभाविक रूप से वे निशाने पर होते हैं। डॉक्टर भी उस तरह से प्रतिक्रिया नहीं कर सकते जिस तरह से एक आम आदमी सड़क पर प्रतिक्रिया करता है। इसके लिये डॉ. अशोकन कहते हैं: वे भी इंसान हैं...इसलिए पश्चिम बंगाल में जो हुआ, वह थमने का नाम नहीं ले रहा है। और इसका कारण स्वास्थ्य सेवा प्रणाली में सड़न है। आपको समझना चाहिए कि जो हम वहां देख रहे हैं, वह बीमारी नहीं है; यह केवल लक्षण है।

प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों को कैसे चलाया जाना चाहिए, इस मामले में तमिलनाडु सबसे आगे है। उनके चुनिंदा प्राथमिक केंद्रों में सीजेरियन भी होते हैं, और वे 24 घंटे खुले रहते हैं। केरल में, उनके पास दो ओपीडी हैं, एक सुबह और एक शाम को। इन दोनों राज्यों में मधुमेह और उच्च रक्तचाप के लिए घर-घर जाकर दवाई दी जाती है। डॉक्टरों की अगुआई वाली टीमें घर-घर जाकर ब्लड ग्लूकोज और ब्लड प्रेशर की जांच करती हैं और एक महीने की दवाई देती हैं। राजस्थान में ऐसा क्यों नहीं हो सकता!

डाक्टरों पर हिंसा की घटनाएं तब होती है जब लोग निराश हो जाते हैं। जब समाज के विशेषाधिकार प्राप्त लोगों अच्छा चिकित्सा उपचार मिलता है जबकि दूसरे लोग असहाय महसूस करते हैं। इसका कारण हैं सार्वजनिक क्षेत्र में चिकित्सा के बुनियादी ढांचे और मानव संसाधनों में निवेश की कमी, और उसके साथ 39;लाभ के लिए39; कॉर्पोरेट स्वास्थ्य सेवा की अवधारणा। सिद्धांत रूप में, स्वास्थ्य सेवा में लाभ के लिए उद्योग को लाना सही नहीं कहा जा सकता है। लाभ के लिए बीमा एजेंसियों द्वारा लाभ के लिए अस्पताल चलाए जाने का मॉडल अमरीका से आयातित है जहां सकल घरेलू उत्पाद का 15 प्रतिशत स्वास्थ्य सेवा में जाता है, लेकिन 20 प्रतिशत अमेरिकियों को देखभाल नहीं मिलती है। यहां डॉक्टर से तुरंत मिला जा सकता है, जबकि यू.के., यू.एस., ऑस्ट्रेलिया, कनाडा या न्यूजीलैंड में ऐसा नहीं है।

यह सवाल पूछा जाना उचित ही है कि क्या हमारे नीति निर्माता देश को उस राह पर ले जाना चाहते हैं? भारत में अस्पतालों का जिस प्रकार निगमीकरण हो रहा है उसमें सभी जगह छोटे और मध्यम निजी अस्पताल बंद हो रहे हैं। आजकल कोई भी नया डॉक्टर छोटा अस्पताल नहीं खोलता। ऐसी हालत समाज के लिए नुकसानदेह है। आज, चिकित्सा और स्वास्थ्य सेवा आधिकारिक तौर पर एक उद्योग बन गई है। ऐसे में हाल ही में आई इस खबर पर आश्चर्य नहीं होना चाहिए कि विलासिता वाले आवास बनाने वाली एक कंपनी भी अपना विस्तार करते हुए अब स्वास्थ्य सेवा के बाज़ार में कूद पड़ी है और अस्पताल खोल रही है।

विलासिता वाले कॉर्पोरेट अस्पतालों को मेडिकल टूरिज़्म के नाम पर बढ़ावा दिया जा रहा है। सरकार केवल बीमा को प्रोत्साहित कर रही है क्योंकि वह स्वयं लोगों को स्वास्थ्य सेवा प्रदान करने से अपना पिंड छुड़ा रही है। ऐसे में अधिक से अधिक डॉक्टर स्वतंत्र रूप से प्रेक्टिस करने के बजाय इन बड़े मुनाफे वाले अस्पतालों के कर्मचारी बन रहे हैं। व्यवस्था को ठीक करने की बजाय कानून और नीति निर्माता पलायन की राह पकड़ रहे हैं और बाज़ार की ताकतों के हाथों में खेल रहे हैं। पिछले दशक में, 2012 में, 12वीं पंचवर्षीय योजना के लिए, डॉ. श्रीनाथ रेड्डी की अध्यक्षता में उच्च स्तरीय विशेषज्ञ समूह ने जो दस्तावेज़ बना कर दिया था उसमें सार्वभौमिक स्वास्थ्य सेवा की सिफारिश की गई थी, जिसका मतलब था कि बुनियादी स्वास्थ्य कवर सरकार द्वारा बिना किसी बीमा के, बिना किसी तीसरे पक्ष के हस्तक्षेप के सुनिश्चित किया जाय, तथा स्वास्थ्य सेवा में रिश्ता रोगी और सरकार के बीच हो। मगर अब नीति आयोग हाथ खड़े कर रहा है और कह रहा है कि दस साल के समय में सरकार सभी के लिए स्वास्थ्य कवर प्रदान नहीं कर सकती है। इसका अर्थ हुआ कि 92 करोड़ लोगों के लिए, जिनके पास कोई स्वास्थ्य कवर नहीं है, सरकार उन्हें निजी बीमा उद्योग को सौंप देंगी। बड़े प्राइवेट अस्पताल भरपूर विज्ञापन कर रहे हैं और कमा रहे हैं, जबकि मरीज आसमान छूती चिकित्सा कीमतों के कारण लुट रहा है। बाजार खुश है कि भारतीय स्वास्थ्य सेवा बाजार, जिसका मूल्य 2016 में 110 बिलियन अमेरिकी डॉलर था, अब 2025 तक 638 बिलियन अमेरिकी डॉलर तक पहुंचने जा रहा है। स्वास्थ्य सेवा क्षेत्र, 2024 तक, भारत के सबसे बड़े नियोक्ताओं में से एक है, जो कुल 7.5 मिलियन लोगों को रोजगार देता है। निजीकरण के चलते राजस्व और रोजगार दोनों के मामले में स्वास्थ्य सेवा भारत के सबसे बड़े क्षेत्रों में से एक बन गई है। स्वास्थ्य सेवा में अस्पताल, चिकित्सा उपकरण, नैदानिक परीक्षण, आउटसोर्सिंग, टेलीमेडिसिन, चिकित्सा पर्यटन, स्वास्थ्य बीमा और चिकित्सा उपकरण शामिल हैं। नीतिगत रूप से दिशा बदल कर सरकार को स्वास्थ्य सेवा का मुख्य प्रदाता बनना होगा और उसे उसमें अधिक धन लगाना होगा। स्वास्थ्य सेवा को निजी उद्योग के हाथों में नहीं सौंपना चाहिए। जन स्वास्थ्य संविधान की राज्य सूची में है इसलिए यह अपेक्षा राजस्थान सरकार से है कि वह केरल और तमिलनाडु से सीखे जहां सार्वजनिक क्षेत्र निजी क्षेत्र को कड़ी टक्कर देता है। बीस साल पहले, इन दोनों राज्यों में दो तिहाई प्रसव निजी क्षेत्र में हो रहे थे। आज, दो तिहाई प्रसव सार्वजनिक क्षेत्र में हो रहे हैं।

प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों को कैसे चलाया जाना चाहिए, इस मामले में तमिलनाडु सबसे आगे है। उनके चुनिंदा प्राथमिक केंद्रों में सीजेरियन भी होते हैं, और वे 24 घंटे खुले रहते हैं। केरल में, उनके पास दो ओपीडी हैं, एक सुबह और एक शाम को। इन दोनों राज्यों में मधुमेह और उच्च रक्तचाप के लिए घर-घर जाकर दवाई दी जाती है। डॉक्टरों की अगुआई वाली टीमें घर-घर जाकर ब्लड ग्लूकोज और ब्लड प्रेशर की जांच करती हैं और एक महीने की दवाई देती हैं। राजस्थान में ऐसा क्यों नहीं हो सकता!

–अतिथि संपादक,
राजेन्द्र बोड़ा
(वरिष्ठ पत्रकार एवं विश्लेषक)

40 वर्ष तक की युवा महिलाओं में स्तन कैंसर का बढ़ता जोखिम

डॉ. अनुभा जैन

बैंगलूरू के अस्पतालों ने चिंता व्यक्त करते हुये बताया कि पिछले पांच वर्षों में 20 से 40 वर्ष उम्र की महिलाओं में ब्रेस्ट कैंसर के मामलों में सौ प्रतिशत वृद्वि दर्ज की गयी है। स्तन कैंसर सबसे अधिक 40-60 वर्ष की आयु की महिलाओं को प्रभावित करता है, जबकि आज 40 वर्ष से कम उम्र की युवा महिलाओं में भी इसका डाइगनोसिस तेजी से हो रहा है।

कर्नाटका के साथ तमिलनाडु, नई दिल्ली, तेलंगाना भारत के उन चार राज्यों में शामिल है जहां महिला स्तन या ब्रेस्ट कैंसर के मामले सर्वाधिक संख्या में दर्ज किये जा रहे हैं। इंडियन काउंसिल ऑफ मेडिकल रिसर्च (आई.सी.एम.आर) - नेशनल सेंटर फॉर डिसीस इंफोरमेटिक्स एंड रिसर्च (एन.सी.डी.आई.आर) स्टडी के अनुसार महिलाओं में ब्रेस्ट कैंसर प्राथमिक कारण है भारत में होने वाली महिला मृत्यु दर का जिसमें 13.5 प्रतिशत नये कैंसर के मामले और 10.6 प्रतिशत सभी कैंसर से होने वाली मौतों के लिये जिम्मेदार हैं। डॉ. मधुप्रिया, वरिष्ठ सलाहकार - सर्जिकल ऑन्कोलॉजी, अपोलो कैंसर सेंटर, वनागरम, चेन्नई ने कहा कि भारत में हर 4 मिनट में महिलाओं में स्तन कैंसर का निदान किया जा रहा है - जागरूकता बढ़ाना और समय रहते इसका पता लगाने को प्रोत्साहित करना समय की मांग है, जिससे अनगिनत लोगों की जान बच सकती है।

डॉ. गीता कडायप्रथ, सीनियर कंसलटेंट, ब्रेस्ट सर्जरी, अपोलो कैंसर सेंटर (दिल्ली) ने साक्षात्कार के दौरान डॉ.अनुभा जैन से बात करते हुये बताया कि अस्पतालों में 40 साल से कम उम्र के नए स्तन कैंसर के युवा मरीजों की संख्या चिंताजनक रूप से बढ़ रही है। यह एक कॉम्पलैक्स इंटरप्ले है जिसमें महिलाओं की लाइफस्टाइल, जेनेटिक्स और एनवाइरनमैंट शामिल है। ब्रेस्ट कैंसर के बढ़ते केसज पर बात करते हुये डॉ. गीता ने कहा कि स्तन कैंसर की घटनाएं बढ़ रही हैं मुख्य रूप से जीवनशैली में बदलाव के कारण। उन्होने कहा कैंसर से डर होना मनुष्य की एक सामान्य अवधारणा है।

आंकडों के अनुसार लगभग 10 प्रतिशत स्तन कैंसर जेनेटिक होते हैं, लेकिन जीवनशैली से जुड़े कारक जैसे कि साझा आहार संबंधी आदतें, परिवारों में निष्क्रियता, बच्चे के जन्म में देरी, स्तनपान में कमी, निष्क्रिय आदतें, मोटापा और खराब आहार वे कारक हैं जो जीन की तुलना में युवा महिलाओं में स्तन कैंसर के मामलों में वृद्धि में योगदान दे रहे हैं। साथ ही बांझपन के लिए हार्मोनल थेरेपी और रजोनिवृत्ति के बाद के उपचार भी स्तन कैंसर के जोखिम को बढ़ा रहे हैं।

डॉ. गीता के अनुसार समय के साथ कैंसर के ईलाज में नई तकनीकों के आने से कैंसर सर्वाइवल रेट में सुधार भी हुआ है। यंग महिलाओं में स्तन कैंसर का होना भारत में जहां यह अनुपात दुगना यानि 15-20 प्रतिशत है वहीं पश्चिमी देशों में इसका आधा महज 7 प्रतिशत ही है। लाइफस्टाइल में परिवर्तन जिसमें शारीरिक गतिविधियां, सही फूड का चयन सही सोर्स के साथ होना चाहिये क्योंकि आज पेस्टीसाइडस का बेहद उपयोग हो रहा है जो कि हमारे खाने में सर्व हो जाते हैं। डॉ.गीता ने चिंता व्यक्त करते हुये कहा कि दुर्भाग्य से भारत में आज एडवांस कैंसर स्टेज 1 और स्टेज 2 के कुल 60 प्रतिशत केसेज दर्ज किये गये हैं जो एक चिंता का विषय है। भारत की बढ़ती जनसंख्या, अवेयरनेस की कमी और ब्रेस्ट कैंसर स्क्रीनिंग के प्रोटोकॉल नहीं होने के कारण यह संख्या बढ़ती ही जा रही है।

अस्पतालों के आंकडों के अनुसार 40 वर्ष से कम आयु की महिलाओं में प्रति माह 50 स्तन कैंसर के मामले देखे जा रहे हैं, जो पांच साल पहले 25 मामलों से अधिक है। सर्जिकल ऑन्कोलॉजी फोर्टिस अस्पताल के कंसल्टेंट डॉ. भरत जी ने कहा कि वे 20-40 वर्ष की आयु की महिलाओं में हर महीने 20-25 स्तन कैंसर के मामले देखते हैं, जबकि पांच साल पहले यह संख्या 10 थी। अधिकांश निदान तब होते हैं जब रोगी लक्षणों के साथ उपस्थित होते हैं। भारत में चरण चार के मामलों की व्यापकता पश्चिमी देशों की तुलना में अधिक हो सकती है। यह स्तन कैंसर की मूक प्रकृति को उजागर करता है, क्योंकि कई महिलाएँ निदान में देरी करती हैं क्योंकि उन्हें दर्द या दिखाई देने वाले लक्षण महसूस नहीं होते हैं।

डॉ.गीता का मानना है कि महिलाओं को असामान्यताओं की जल्दी पहचान करने के लिए 21 वर्ष की आयु में स्वयं स्तन जांच शुरू कर देनी चाहिए। उनका कहना है कि 40 वर्ष की आयु से शुरू करके, वार्षिक जांच, अल्ट्रासाउंड और मैमोग्राम गांठ बनने से पहले ही जल्दी पता लगाने के लिए आवश्यक हैं। महिलाओं को अपने जीवन में स्तन कैंसर की जांच को प्राथमिकता देने, समय रहते इसका पता लगाने और इस कारण का समर्थन करने के लिए प्रोत्साहित करने के लिए चेन्नई में अपोलो कैंसर सेंटर ने मेन इन पिंक वॉकथॉन आयोजन किया।

डॉ. गीता

स्तन कैंसर महिलाओं में कैंसर से संबंधित मौतों का प्रमुख कारण बन गया है, जिसने सर्वाइकल कैंसर को पीछे छोड़ दिया है। फिर भी, कई जागरूकता प्रयासों के बावजूद, लगभग 90 प्रतिशत महिलाएं आज भी अपने स्तन स्वास्थ्य पर काम करने में झिझकती हैं।

अंत में डॉ.गीता ने कहा, "मैंने ऐसी स्टेज 4 की महिलाओं का ईलाज किया जिनके बचने की संभावना बेहद क्षीण थीं। पर 18 साल पहले जिनकी मैने सर्जरी की, जिनके ब्रेस्ट कम्पलीट ट्यूमर की जकड में थे वे आज एकदम स्वस्थ हैं। इमेजिंग करके देखा गया तो ईलाज से ट्यूमर पूरी तरह गायब हो चुका था। उनके शरीर ने सर्जरी व मेडिकेशन का सही तरह रिसपांड किया क्योंकि वे खुद आशावादी थीं।"

-डॉ. अनुभा जैन,
वरिष्ठ पत्रकार

पेसिफिक मेडिकल कॉलेज, उदयपुर की एम.बी.बी.एस. पाठ्यक्रम की 100 सीट बढ़ाने पर रोक लगाई

एम.बी.बी.एस. की 150 से 250 सीट करने के आदेश पर राजस्थान हाईकोर्ट जोधपुर ने रोक लगाई

जयपुर। राजस्थान उच्च न्यायालय जोधपुर की खण्डपीठ के न्यायाधीश चन्द्रशेखर एवं न्यायाधीश रेखा बोराना द्वारा नेशनल मेडिकल कमीशन द्वारा दायर अपील पर बहस सुनकर पेसिफिक मेडिकल कॉलेज, उदयपुर को एम.बी.बी.एस. की 150 से 250 सीट करने के आदेश पर रोक लगा दी है।

एनएमसी की ओर से उपस्थित हुए एडिशनल सॉलिसीटर जनरल राजदीपक रस्तोगी ने न्यायालय को बताया कि पेसिफिक मेडिकल कॉलेज उदयपुर को पूर्व में एम.बी.बी.एस. की 150 सीट आवंटित की गई थी परन्तु आधारभूत संरचना एवं उचित फेकल्टी ना होने के कारण सीट घटाने का नोटिस दिया गया जिस पर सुनवाई करते हुए पहले से ही अध्ययनरत विद्यार्थियों के भविष्य को देखते हुए सीट कम ना करके 6 लाख रूपयों का दण्ड पेसिफिक मेडिकल कॉलेज उदयपुर पर लगाया गया। इसी बीच पेसिफिक मेडिकल कॉलेज उदयपुर ने एम.बी.बी.एस. की 150 सीटों से बढ़ाकर 250 सीट आवंटित करने हेतु आवेदन पत्र दिया जिस पर पूर्ण विचार कर एनएमसी द्वारा उसे निरस्त कर दिया गया, जिसके विरूद्ध पेसिफिक मेडिकल कॉलेज उदयपुर द्वारा अपील भी दायर की गई और अपील के लम्बित रहने के दौरान ही राजस्थान हाईकोर्ट जोधपुर की एकल पीठ के समक्ष रिट याचिका दायर की गई। इसी बीच पेसिफिक मेडिकल कॉलेज उदयपुर की अपील भी एनएमसी द्वारा खारिज कर दी गई।

पेसिफिक मेडिकल कॉलेज उदयपुर ने उच्च न्यायालय की एकल पीठ के समक्ष यह तर्क दिया कि उनके पास 250 सीट के हिसाब से पूरी आधारभूत संरचना एवं फैकल्टी है परन्तु एनएमसी द्वारा आवेदन पत्र को गलत रूप से निरस्त कर दिया और अपील भी बिना किसी कारण के निरस्त कर दी गई। राजस्थान उच्च न्यायालय की एकल पीठ के न्यायाधीश दिनेश मेहता ने रिट याचिका मंजूर करते हुए एनएमसी को यह आदेश दिया कि पेसिफिक मेडिकल कॉलेज उदयपुर को एम.बी.बी.एस. की 100 सीटे और आवंटित की जावे। एनएमसी की ओर से इस आदेश दिनांक 8.10.2024 के विरूद्व राजस्थान उच्च न्यायालय, जोधपुर की खण्डपीठ के समक्ष अपील प्रस्तुत की गई।

अतिरिक्त सॉलिसीटर जनरल राजदीपक रस्तोगी ने अपील पर बहस करते हुए न्यायालय को बताया कि एनएमसी का निर्णय पूर्णतया सही एवं तथ्यों पर आधारित है और जब कॉलेज का निरीक्षण किया गया तब फेकल्टी एवं अन्य आधारभूत संरचनाऐं नियमों से कम पाई गई। श्री रस्तोगी ने सुप्रीम कोर्ट के बहुत सारे निर्णयों को न्यायालय के समक्ष प्रस्तुत करते हुए तर्क दिया कि ऐसे विशेष पाठ्यक्रमों में प्रवेश हेतु एनएमसी जैसी विशिष्ठ संस्था का निर्णय ही अन्तिम होता है और न्यायालय को सामान्यतया उस निर्णय को तथ्यों के आधार पर नहीं बदलना चाहिए और सुप्रीम कोर्ट ने यह भी कहा कि ऐसे मामलों में न्यायिक पुनरीक्षण का अधिकार काफी कम हद तक होता है। उनके द्वारा यह भी कहा गया कि जब कॉलेज के पास 150 विद्यार्थियों को शिक्षा देने हेतु नियमानुसार फेकल्टी एवं संरचना उपलब्ध नही है तब उस दशा में किसी भी प्रकार से 100 ओर सीटें बढ़ाने का औचित्य नहीं था। रस्तोगी ने यह भी तर्क दिया मेडिकल शिक्षा एक विशिष्ट स्थान रखती है और सुप्रीम कोर्ट के विभिन्न निर्णयों के अनुसार ऐसी विशिष्ठ शिक्षा के क्षेत्र में सामान्यतया न्यायालय को दखल नहीं देना चाहिए। उच्च न्यायालय की खण्डपीठ ने मामले पर विस्तृत सुनवाई कर और दोनों पक्षों को सुनकर उच्च न्यायालय जोधपुर की एकलपीठ के निर्णय के उस निर्णय पर रोक लगा दी जिसके द्वारा पेसिफिक मेडिकल कॉलेज उदयपुर की एम.बी.बी.एस. की सीट 150 से बढ़ाकर 250 कर दी गई थी। इस आदेश से एन.एम.सी. को बहुत बड़ी राहत मिली है।

बेटे ने मां की अंतिम इच्छा पूरी की, जेएलएन मेडिकल कॉलेज को देहदान की

अजमेर, (कासं)। वैशाली नगर में रहने वाले एक बेटे ने अपनी मां की अंतिम इच्छा पूरा करते हुए उनके निधन के बाद उनकी देह का दान किया। उनकी मां प्रसंन कंवर का सोमवार देर रात निधन हो गया था, उनकी अंतिम इच्छा को पूरा करते हुए मंगलवार सुबह जेएलएन मेडिकल कॉलेज प्रबंधन को देह का दान किया गया।

वैशाली नगर निवासी बिंदु भंडारी की मां प्रसन कंवर भंडारी का पार्थिव देह परिजन एवं रिश्तेदार मेडिकल कॉलेज लेकर पहुंचे। मेडिकल कॉलेज प्राचार्य डॉ. अनिल सामरिया और निश्चेतन विभाग के विभागाध्यक्ष सहित अन्य चिकित्सकों की मौजूगी में देहदान की गई। अब उनकी पार्थिव देह मेडिकल विद्यार्थी अध्ययन, शोध और चिकित्सा के उपयोग कर सकेंगे।

बेटे बिंदु भंडारी ने बताया कि उनकी मां हमेशा से ही समाज सेवा सक्रिय रहीं। उनकी आखिरी इच्छा थी कि उनकी मृत्यु के पश्चात उनकी देह को मेडिकल कॉलेज में देहदान कर दी जाए। उन्होंने बताया कि सोमवार देर रात उनका निधन हो गया था, इसके बाद उन्होंने महावीर इंटरनेशनल संस्थान के सहयोग से उनकी मां की अंतिम इच्छा को पूरा करते हुए जेएलएन मेडिकल कॉलेज को देहदान की गई।

देह को मेडिकल कॉलेज प्रबंधन को सौंपते हुए तथा मां की फाइल फोटो।

- **महावीर इंटरनेशनल संस्थान के सहयोग से मां की अंतिम इच्छा को पूरा करते हुए जेएलएन मेडिकल कॉलेज को देहदान की**

जेएलएन मेडिकल कॉलेज के प्रिंसिपल डॉक्टर अनिल सामरिया ने बताया कि चिकित्सा के क्षेत्र में रिसर्च के लिए देहदान जरूरी है।

राशिफल बुधवार 6 नवम्बर, 2024

पंडित अनिल शर्मा

कार्तिक मास, शुक्ल पक्ष, पंचमी तिथि, बुधवार, विक्रम संवत 2081, मूल नक्षत्र दिन 11:00 तक, सुकर्मा योग दिन 10:50 तक, बव करण दिन 12:29 तक, चन्द्रमा आज धनु राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-तुला, चन्द्रमा-धनु, मंगल-कर्क, बुध-वृश्चिक, गुरू-वृष, शुक्र-वृश्चिक, शनि-कुम्भ, राहु-मीन, केतु-कन्या राशि में।

आज यमघट योग सूर्योदय से दिन 11:00 तक है। कुमार योग दिन 11:00 तक रहेगा। रवियोग प्रात: 8:47 से दिन 11:00 तक है। आज शुक्र मूल धनु में रात्रि 3:31 से प्रवेश करेगा। आज सौभाग्य पंचमी व्रत, पांडव और लाभ पंचमी, ज्ञान पंचमी है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: लाभ-अमृत सूर्योदय से 9:27 तक, शुभ 10:44 से 12:10 तक, चर 2:54 से 4:15 तक, लाभ 4:15 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 12:00 से 1:30 तक। सूर्योदय 6:44, सूर्यास्त 5:37

मेष
नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। धार्मिक-मांगलिक कार्यों में भाग ले सकते हैं। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

सिंह
नौकरीपेशा व्यक्तियों को महत्वपूर्ण जिम्मेदारी मिल सकती है। व्यावसायिक अनुबंध प्राप्त होंगे। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। परिवार में अतिथियों का आगमन रहेगा।

धनु
व्यावसायिक कार्यों के लिए बाहर जाना पड़ सकता है। आर्थिक मामलों में संतुलन बनाए रखना ठीक रहेगा। परिवार में चल रहे आपसी मतभेद समाप्त होंगे।

वृष
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। मित्रों/रिश्तेदारों से वाद-विवाद टालना ठीक रहेगा।

कन्या
नौकरीपेशा व्यक्तियों को महत्वपूर्ण जिम्मेदारी मिल सकती है। व्यावसायिक अनुबंध प्राप्त होंगे। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। परिवार में अतिथियों का आगमन रहेगा।

मकर
घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। जीवनसाथी से वाद-विवाद हो सकता है। स्वास्थ्य का ध्यान रखें।

मिथुन
परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। परिवार में शुभ-धार्मिक-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक यात्रा संभव है।

तुला
व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी। व्यावसायिक वार्ता के लिए दिन अच्छा रहेगा। नवीन कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

कुंभ
आर्थिक/वित्तिय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं।

कर्क
विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यक्तिगत परेशानियां दूर होने लगेगी। स्वास्थ्य में सुधार होगा। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

वृश्चिक
व्यावसायिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। नौकरीपेशा व्यक्तियों को उच्चाधिकारियों की नाराजगी का सामना करना पड़ सकता है। घर-परिवार में स्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है।

मीन
व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। व्यावसायिक वार्ता के लिए दिन अच्छा रहेगा। खान-पान के कारण स्वास्थ्य खराब हो सकता है।

राज्य सरकार की पहली वर्षगांठ पर किसानों को मिलेंगी बड़ी सौगातें

हमारी जनकल्याणकारी योजनाएं आमजन के सम्पूर्ण सशक्तिकरण की ओर महत्वपूर्ण कदम : मुख्यमंत्री

जयपुर। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा राज्य सरकार के कार्यकाल का एक वर्ष पूर्ण होने के अवसर पर प्रदेश के किसानों को कई बड़ी सौगातें देने जा रहे हैं। उन्होंने मंगलवार को मुख्यमंत्री कार्यालय में जन कल्याणकारी योजनाओं की समीक्षा के लिए आयोजित बैठक में किसान कल्याण से जुड़ी योजनाओं की प्रगति और लाभ हस्तांतरण के बारे में जरूरी दिशा-निर्देश दिए। शर्मा ने कहा कि राज्य सरकार की जनकल्याणकारी योजनाएं सिर्फ योजनाएं नहीं, बल्कि आमजन के सम्पूर्ण सशक्तीकरण की ओर बढ़ाया गया महत्वपूर्ण कदम हैं। उन्होंने कहा कि सभी हितधारकों से बराबर सम्पर्क रखते हुए विकास कार्यक्रमों एवं योजनाओं का लाभ और जानकारी जन-जन तक पहुंचाने का कार्य किया जाए। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के विकसित भारत के संकल्प को पूरा करने की दिशा में विकसित राजस्थान बनाने के लिए राज्य सरकार संकल्पबद्ध होकर कार्य कर रही है।

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के नेतृत्व में राज्य सरकार के कार्यकाल का एक वर्ष पूर्ण होने के अवसर पर मंगलवार को मुख्यमंत्री कार्यालय में जन कल्याणकारी योजनाओं की समीक्षा के लिए बैठक आयोजित की गई। इसमें मुख्य सचिव सुधांश पंत, अतिरिक्त मुख्य सचिव अखिल अरोरा, शिखर अग्रवाल, कुलदीप रांका, श्रेया गुहा, मुख्यमंत्री के प्रमुख सचिव आलोक गुप्ता सहित विभिन्न विभागों के उच्चाधिकारी उपस्थित रहे।

शर्मा ने कहा कि राज्य सरकार अपनी प्रथम वर्षगांठ पर किसानों को बड़ी सौगातें देने की प्रभावी तैयारी कर रही है। उन्होंने कहा कि राजस्थान एग्रीकल्चर इंफ्रास्ट्रक्चर मिशन के अंतर्गत 5 हजार 500 फार्मपौण्ड के लिए किसानों के खातों में सहायता राशि डीबीटी के माध्यम से हस्तांतरित की जाएगी है। इसी प्रकार 2 हजार किलोमीटर पाइपलाइन, 5 हजार किसानों को तारबंदी के लिए सहायता प्रदान की जाएगी। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार नहरी क्षेत्र में 500 डिग्गियों, एक हजार किसानों को कृषि उपकरण सहायता और 2 हजार वर्मी कम्पोस्ट इकाइयों के लिए अनुदान सहायता प्रदान करेगी।

मुख्यमंत्री ने कहा कि गोवर्धन जैविक उर्वरक योजना के अंतर्गत 3 हजार किसानों को गोवंश से जैविक खाद उत्पादन के लिए सहायता उपलब्ध करवाई जाएगी। उन्होंने बताया कि नमो ड्रोन दीदी योजना में 50 क्लस्टर्स विकसित किए जाएंगे। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री किसान सम्मान निधि की दूसरी किस्त भी किसानों को जारी की जाएगी। शर्मा ने कहा कि सरकार कुसुम योजना के माध्यम से सोलर पम्प की स्थापना के लिए 15 हजार किसानों को लाभान्वित किया जाएगा। उन्होंने कहा कि राजस्थान में ड्रिप इरिगेशन ही सिंचाई हेतु एक दीर्घकालिक समाधान है। सरकार द्वारा 15 हजार किसानों को ड्रिप इरिगेशन के लिए वित्तीय सहायता डीबीटी के माध्यम से दी जाएगी। इसके साथ ही 1 हजार लाभार्थियों को कृषि एवं अकृषि ऋण ब्याज अनुदान पर प्रदान किए जाएंगे।

इस अवसर पर पशुपालकों को गोपाल क्रेडिट कार्ड वितरण के साथ-साथ एक हजार नए डेयरी बूथों का आवंटन, 200 नए बल्क मिल्क कूलर्स की स्थापना और एक हजार नए दूध संकलन केन्द्रों का उद्घाटन भी किया जाएगा। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार ने मुख्यमंत्री दुग्ध उत्पादक संबल योजना के अंतर्गत 3.25 लाख से अधिक दुग्ध उत्पादकों को 5 रुपये प्रति लीटर की दर से अनुदान राशि देते हुए 183.22 करोड़ रुपये की राशि हस्तांतरित की जा चुकी है।

इस दौरान मुख्य सचिव सुधांश पंत, अतिरिक्त मुख्य सचिव वित्त अखिल अरोरा, अतिरिक्त मुख्य सचिव मुख्यमंत्री कार्यालय शिखर अग्रवाल, अतिरिक्त मुख्य सचिव सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता कुलदीप रांका, अतिरिक्त मुख्य सचिव ग्रामीण विकास श्रेया गुहा, मुख्यमंत्री के प्रमुख सचिव आलोक गुप्ता सहित विभिन्न विभागों के उच्चाधिकारी उपस्थित रहे।

मिस फ्रांसिस का देहांत

जयपुर। सेंट जेवियर स्कूल की वरिष्ठतम पूर्व टीचर मिस एम.फ्रांसिस का मंगलवार को देहांत हो गया। वे संतोकबा दुर्लभजी अस्पताल जयपुर के अवेदना आश्रम में रहती थीं।

उनकी अंतिम यात्रा बुधवार को तीन बजे अवेदना आश्रम से रवाना होगी और घाटगेट स्थित चर्च पर साढ़े तीन बजे पहुंचेगी।

खाते से पैसे निकाले

जयपुर। मालवीय नगर थाना इलाके में बैंक कर्मचारी बनकर युवक को फोन कर किश्त की राशि जमा करने के नाम पर एटीएम की जानकारी लेकर उसके खाते से 75 हजार रुपए निकाल लिए।

जिंदा भ्रूण को मृत बताकर प्री-मैच्योर डिलीवरी की

एम.एम.एस. मेडिकल कॉलेज के प्रिंसिपल व कंट्रोलर और जनाना अस्पताल के अधीक्षक पर 5.20 लाख रुपए का हर्जाना

जयपुर। जयपुर महानगर प्रथम की स्थाई लोक अदालत ने गर्भ में पल रहे शिशु की मृत्यु बताकार प्री-मैच्योर डिलीवरी करने और बाद में शिशु की मौत को गंभीर लापरवाही माना है। इसके साथ ही अदालत ने विपक्षी एमएमएस मेडिकल कॉलेज के प्रिंसिपल व कंट्रोलर और जनाना अस्पताल के अधीक्षक पर 5.20 लाख रुपए का हर्जाना लगाया है। अदालत ने कहा कि विपक्षी हर्जाना राशि का भुगतान परिवादी को तीस दिन में करें। लोक अदालत के अध्यक्ष मनोज कुमार सहारिया व सदस्या सीमा शार्दुल ने यह आदेश बीना मीना के प्रार्थना पत्र पर दिए।

- अदालत ने इस मामले में शिशु की मौत को अस्पताल की गंभीर लापरवाही माना है

प्रार्थना पत्र में अधिवक्ता विजी अग्रवाल ने बताया कि गर्भावस्था के दौरान प्रार्थिया ने जनाना अस्पताल की देखरेख में इलाज शुरू करवाया। उसकी एक नवंबर 2023 को अल्ट्रा सोनोग्राफी की, जिसमें 25 सप्ताह के भ्रूण की मृत्यु होना बताया। जबकि प्रार्थिया ने कहा कि उसे गर्भ में भ्रूण की हरकत महसूस हो रही है, लेकिन डॉक्टर्स ने उसे कहा कि तत्काल भ्रूण नहीं निकाला तो संक्रमण होने से उसकी जान जा सकती है। इसके बाद 9 नवंबर 2023 को इंजेक्शन देकर उसकी प्री मैच्योर डिलीवरी करवाई गई। इसमें उसने जीवित शिशु को जन्म दिया और उसे बच्चा वार्ड में भेजना बताया। प्रार्थना पत्र में कहा गया कि डिलीवरी के करीब तीन घंटे बाद उसे बताया कि प्री मैच्योर डिलीवरी के चलते शिशु की मृत्यु हो गई है। इस पर अदालत में प्रार्थना पत्र पेश कर क्षतिपूर्ति राशि देने की गुहार की। इसके जवाब में अस्पताल प्रशासन की ओर से कहा गया कि मरीजों की भीड और अधिक कार्य होने के कारण सोनोग्राफी बदलने से इनकार नहीं किया जा सकता। यूनिट के डॉक्टर ने सोनोग्राफी पर ही प्रसव का निर्णय लिया था। शिशु को बचाने का हर संभव प्रयास भी किया गया था और उसे पहले एनआईसीयू में भर्ती करने के बाद वेंटीलेटर पर भी रखा गया, लेकिन बाद में उसकी मृत्यु हो गई। ऐसे में उनकी ओर से लापरवाही नहीं बरती गई है। दोनों पक्षों की बहस सुनने के बाद अदालत ने अस्पताल पर हर्जाना लगाया है।

महेश जोशी की मुश्किलें बढ़ेंगी, ए.सी.बी. ने मुकदमा दर्ज किया

जे.जे.एम. घोटाले में जोशी सहित 20 आरोपियों के नाम

जयपुर, (का.प्र.)। कांग्रेस सरकार में पीएचईडी मंत्री रहे महेश जोशी पर ईडी के बाद राजस्थान ने भ्रष्टाचार निरोधक ब्यूरो ने भी जल जीवन मिशन में घोटाले में जोशी सहित 20 लोग और दो फर्मों के खिलाफ नामजद मुकदमा दर्ज किया है। इनमें पीएचईडी के अधिकारियों, पीएचईडी के ठेकेदार और निजी व्यक्तियों के नाम भी शामिल हैं।

- इसी मामले में ई.डी.भी कर रही है जांच, जोशी के नजदीकी संजय बड़ाया और फर्म प्रोपराइटर की हो चुकी है गिरफ़्तारी

एसीबी के डीजी डॉ. रविप्रकाश मेहरड़ा ने बताया कि एसीबी के अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक विशनाराम की रिपोर्ट के आधार पर जल जीवन मिशन में गड़बड़ियों के संबंध में 20 लोगों और दो फर्मों के खिलाफ नामजद मुकदमा दर्ज किया गया है। जिसकी जांच एसीबी की विशेष शाखा के एएसपी पुष्पेंद्र सिंह को सौंपी गई है। एसीबी में दर्ज प्राथमिकी के अनुसार पूर्व मंत्री महेश जोशी, जल जीवन मिशन के वित्तीय सलाहकार सुशील शर्मा, पीएचईडी के तत्कालीन मुख्य अभियंता रामकरण मीणा, दिनेश गोयल, तत्कालीन अतिरिक्त मुख्य अभियंता, रमेश चंद मीणा, अरुण श्रीवास्तव, परितोष गुप्ता, तत्कालीन अधीक्षण अभियंता अजय कुमार सिंघानी, विकास गुप्ता, महेश प्रकाश सोनी, भगवान सहाय जाजू, जितेंद्र शर्मा, विशाल सक्सेना, मैसर्स श्रीगणपति ट्रयूबवेल कंपनी, शाहपुरा के प्रोप्राइटर महेश मित्तल, फर्म श्री गणपति ट्रयूबवेल कंपनी, शाहपुरा, श्रीश्याम ट्रयूबवेल कंपनी के प्रोप्राइटर पदमचंद जैन, फर्म श्रीश्याम ट्रयूबवेल कंपनी, शाहपुरा, इरकॉन इंटरनेशनल के ऑफिस सहायक मुकेश पाठक, जोशी के नजदीकी संजय बड़ाया, किशन गुप्ता, तपन गुप्ता, नमन खंडेलवाल सहित अन्य के खिलाफ जल जीवन मिशन घोटाले को लेकर नामजद मुकदमा दर्ज किया गया है।

इससे पहले जल जीवन मिशन घोटाले में अवैध रूप से धन के लेन-देन को लेकर प्रवर्तन निदेशालय ने भी केस दर्ज किया था। ईडी ने इस मामले में पदमचंद जैन, महेश मित्तल, पीयूष जैन सहित कई आरोपियों को गिरफ्तार कर पूछताछ भी की थी। इसी मामले में सीबीआई ने भी पीएचईडी के अधिकारियों व अन्य के खिलाफ भी मुकदमा दर्ज किया था। अब एसीबी ने महेश जोशी सहित 20 लोगों और दो फर्मों के खिलाफ नामजद मुकदमा दर्ज किया है।

यह मामला एसीबी ने खोला था। राजस्थान में विधानसभा चुनाव से पहले एसीबी ने जल जीवन मिशन के बिल पास करने की एवज में रिश्वत का लेन-देन करते ठेकेदार और पीएचईडी के अधिकारियों को गिरफ्तार किया था। जांच में सामने आया कि कई जगहों पर बिना पाइप लाइन बिछाए ही भुगतान कर दिया गया। इसके साथ ही हरियाणा से चोरी के पाइप बिछाने की बात भी सामने आई थी। अब एसीबी आरोपियों को कभी भी पूछताछ के लिए बुला सकती है।

प्रदेश के पूर्ण विकास के लिए भाजपा ही जरूरी : भजनलाल

- मुख्यमंत्री लगातार ले रहे पार्टी पदाधिकारियों और कार्यकर्ताओं से चुनावी फीडबैक
- उप चुनाव में कांग्रेस के जातिवाद पर भारी भाजपा का विकास का एजेण्डा
- 'कांग्रेस राज में घोटालेबाजों और माफियाओं ने मचा रखी थी लूट'

जयपुर। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा सात विधानसभा क्षेत्रों में उप चुनाव पर लगातार नज़र बनाए हुए हैं। वे दिन की शुरुआत उप चुनाव की तैयारियों के लिए बूथ, मंडल स्तर से लेकर जिला स्तर तक के सैकड़ों पदाधिकारियों से फोन पर बातचीत करके करते हैं। मुख्यमंत्री ने सोमवार को मुख्यमंत्री निवास पर महत्वपूर्ण कार्यकर्ताओं और पदाधिकारियों से मुलाकात कर उप चुनाव की तैयारियों का फीडबैक लिया।

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने कार्यकर्ताओं से मुलाकात के दौरान कहा कि विधानसभा उप चुनाव में कांग्रेस के जातिवाद के एजेण्डे पर हमारी सरकार का विकास का एजेण्डा भारी है। उन्होंने कहा कि दस महीने के छोटे समय में हमने रिकॉर्ड काम किए हैं जिससे कांग्रेस की नींव हिल चुकी है और जनता का हमारी सरकार पर विश्वास जमा है। जिन मुद्दों पर कांग्रेस वर्षों तक राजनीति करती रही, हमारी डबल इंजन सरकार उनसे संबंधित समझौते कर तेजी से उन्हें धरातल पर उतारने का कार्य कर रही है।

उन्होंने कहा कि राइज़िंग राजस्थान से पहले ही हमारी सरकार ने 18 लाख करोड़ के निवेश एमओयू किए हैं और इन एमओयू को धरातल पर लाने के लिए सरकार पूरी तरह समर्पित होकर कार्य कर रही है, ये निवेश राजस्थान को विकसित राजस्थान बनाने में अहम भूमिका निभाएंगे। पेपर लीक जैसे मामलों में एसआईटी ने 190 से अधिक आरोपियों को गिरफ्तार किया है। इससे अनुमान लगाया जा सकता है कि कांग्रेस राज में किस कदर माफियाओं और घोटालेबाजों ने लूट मचा रखी थी। उन्होंने कहा कि हम दिखावे के बिना निरंतर जन कल्याण के कार्य करते हैं, जबकि कांग्रेस काम का नाम करने में भी बेईमानी करती है। उप चुनाव में कांग्रेस के बागी ही अपने प्रत्याशियों को निपटाएंगे।

कालवाड़ महाविद्यालय में बढ़ी प्रवेश तिथि

जयपुर। कैबिनेट मंत्री झोटवाड़ा के विधायक कर्नल राज्यवर्धन राठौड़ के अथक प्रयासों और समर्पण से युवाओं के लिए एक बड़ी खुशखबरी आई है। कालवाड़ महाविद्यालय में प्रवेश की तिथियों को बढ़ा दिया गया है, जिससे अब भी इच्छुक छात्र दाखिला ले सकते हैं। यह कदम युवाओं के भविष्य को सुरक्षित करने और उन्हें शिक्षा के नए अवसर प्रदान करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण प्रयास है।

कर्नल राज्यवर्धन राठौड़ ने कहा कि राज्य की भाजपा सरकार युवाओं की शिक्षा और विकास के लिए समर्पित है। यह महाविद्यालय झोटवाड़ा क्षेत्र के विकास में मील का पत्थर साबित होगा। कर्नल राठौड़ ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की प्रेरणा और विजन से राजस्थान की भाजपा सरकार सुनिश्चित कर रही है कि क्षेत्र के हर युवा को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा मिले।

पर्याप्त मानव संसाधन नहीं रखने वाले अस्पतालों पर कार्रवाई की सिफारिश

सरकारी योजनाओं से भी असम्बद्ध होंगे

जयपुर। राज्य मानवाधिकार आयोग ने राज्य सरकार को कहा है कि संपूर्ण प्रदेश में अभियान चलाकर सभी अस्पतालों की जांच की जाए और वर्ष 2010 के प्रावधानों के तहत उचित मानव संसाधन नहीं रखने पर उनके खिलाफ दंडात्मक कार्रवाई की जाए। आयोग ने कहा कि संसाधनों की अनुपलब्धता के बावजूद मानव जीवन के साथ खिलवाड करने वाले अस्पतालें को चिरंजीवी योजना सहित अन्य सभी सरकारी योजनाओं से भी डी-लिस्ट किया जाए। आयोग ने भवानीमंडी के निजी अस्पताल में बच्चे की मौत के मामले में उसके पिता को पांच लाख रुपए की मुआवजा राशि देने को कहा है। अदालत ने राज्य सरकार को छूट दी है कि वह इसमें से ढाई लाख रुपए की राशि दोषी अस्पताल नवजीवन हॉस्पीटल एंड रिसर्च सेंटर के प्रबंधन या दोषी चिकित्सकों से वसूल कर सकती है। आयोग सदस्य जस्टिस आरसी झाला ने यह आदेश आशीष पारेता के परिवाद पर दिए। आयोग ने कहा कि दोषी अस्पताल की शिशु रोग इकाई को बंद करने, अस्पताल प्रबंधन पर एक लाख रुपए का हर्जाना लगाने और चिरंजीवी योजना से डी-लिस्ट करने मात्र से परिवादी के आठ साल के बेटे की मौत से हुई क्षित की पूर्ति संभव नहीं है।

परिवाद में बताया गया कि 25 जनवरी, 2023 को उसके आठ साल के बेटे प्रहल पारेता के पेट दर्द होने पर उसे नवजीवन अस्पताल, भवानीमंडी लेकर गए। अस्पताल में पूछने पर पता चला कि यहां बच्चों के डॉक्टर शैलेन्द्र पाटीदार हैं। वहीं वहां मौजूद दूसरे चिकित्सक कुलदीप सिंह ने इलाज करना शुरू कर दिया। दो घंटे बाद कुलदीप सिंह के स्थान पर डॉ. हरिवल्लभ ने आकर इलाज किया और डॉ. शैलेन्द्र पाटीदार का थोडी देर में आना बताया। इसके बाद दोपहर में हरिवल्लभ ने बताया कि डॉ. पाटीदार के शादी में जाने के कारण वे अस्पताल नहीं आ सकते हैं। इस पर वे बच्चे को गंभीर हालत में दूसरे अस्पताल ले गए। इस दौरान रास्ते में उसने दम तोड दिया। परिवाद में बताया गया कि हरिवल्लभ एमबीबीएस चिकित्सक ही नहीं है। ऐसे में अयोग्य चिकित्सक के इलाज के कारण बच्चे की मौत हुई है। मामला आयोग में आने के बाद राज्य सरकार की ओर से अस्पताल प्रशासन पर कार्रवाई कर उसकी जानकारी आयोग को दी गई। इस पर आयोग ने राज्य सरकार को सभी अस्पतालों के संबंध में विस्तृत सिफारिशें की हैं।

शहर की सफाई व्यवस्था को लेकर मांगा जवाब

जयपुर। राजस्थान हाईकोर्ट ने 12 साल पहले शहर की सफाई व्यवस्था को लेकर 16 बिन्दुओं पर दिए निर्देशों की पालना को लेकर राज्य सरकार से 11 नवंबर तक जवाब पेश करने को कहा है। जस्टिस इन्द्रजीत सिंह और जस्टिस शुभा मेहता की खंडपीठ ने यह आदेश अधिवक्ता विमल चौधरी के प्रार्थना पत्र पर सुनवाई करते हुए दिए।

प्रार्थना पत्र में अधिवक्ता विमल चौधरी और अधिवक्ता योगेश टेलर ने अदालत को बताया कि शहर की सफाई व्यवस्था को लेकर हाईकोर्ट ने 21 मई 2012 को राज्य सरकार को 16 बिंदुओं पर विस्तृत दिशा-निर्देश दिए थे। इसके तहत हर वार्ड में सौ सफाई कर्मचारी लगाने, सप्ताह के हर दिन सफाई करने, सिंगल टियर सिस्टम से सफाई, कचरा पात्र लगाने, डोर टू डोर कचरा संग्रहण और चार मोबाइल मजिस्ट्रेट सहित अन्य निर्देश दिए थे। इसके साथ ही अदालत ने इन निर्देशों की पालना को लेकर हर तीन माह में रिपोर्ट पेश करने को कहा था।

परीक्षा स्थगित

जयपुर। जगद्गुरु रामानंदाचार्य राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय ने शिक्षा शास्त्री के प्रथम वर्ष और द्वितीय वर्ष की सात नवंबर से चौदह नवंबर तक चलने वाली परीक्षा में आंशिक संशोधन किया है। परीक्षा नियंत्रक डॉ. शंभु कुमार झा ने बताया कि प्रदेश के 42 केंद्रों पर दो पारियों में होने वाली परीक्षा में 13 नवंबर को विधानसभा उपचुनाव के चलते स्थगित किया गया है। झा ने बताया कि अब यह परीक्षा संशोधित कार्यक्रम के अनुसार पूर्व निर्धारित समय और परीक्षा केंद्र पर 16 नवंबर को होगी। उन्होंने बताया कि इसी प्रकार इंटीग्रेटेड शास्त्री-शिक्षा शास्त्री की 13 नवंबर को होने वाली परीक्षा 23 नवंबर को होगी।

जल जीवन मिशन के कार्यों के लिए 658.12 करोड़ रुपए स्वीकृत

जयपुर। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के अथक प्रयासों एवं पहल पर प्रदेश में जल जीवन मिशन के कार्यों को गति प्रदान करने के लिए 23 जिलों के 46 पंचायत समितियों के 507 गांवों में 181 कार्यादेश जारी करने के लिए 658.12 करोड़ रुपए स्वीकृत किए गए हैं। इससे न केवल प्रदेश में जल जीवन मिशन के कार्यों को गति मिलेगी बल्कि इन जिलों के 1.12 लाख घरों में घरेलू जल कनेक्शन उपलब्ध करवा कर लाभान्वित किया जाएगा।

मुख्यमंत्री ने बताया कि जल जीवन मिशन योजना केंद्र सरकार की एक महत्वाकांक्षी योजना है। लेकिन पूर्ववर्ती सरकार सरकार ने इस योजना को गंभीरता से नहीं लिया, जिसकी वजह से निर्धारित समय अवधि में काम पूरे नहीं हो सके। अब राज्य सरकार हर घर नल से जल पहुंचाने के लिए दृढ़ संकल्पित है। योजना को गति देने के लिए 658.12 करोड रुपए स्वीकृत किए गए हैं।

जलदाय मंत्री कन्हैया लाल ने बताया कि प्रदेश के अजमेर, बालोतरा, बारां, भरतपुर, चित्तौडगढ़, डीग, धौलपुर, गंगापुरसिटी, हनुमानगढ, जैसलमेर, झालावाड़, जोधपुर, करौली, केकड़ी, पाली, सवाईमाधोपुर, सिरोही, श्री गंगानगर एवं उदयपुर के 33 पंचायत समितियों के 413 गांवों के लिए 520.28 करोड़ रूपये की 137 कार्यादेश जारी किये जायेगे। इन स्वीकृतियों से ना केवल जल जीवन मिशन के कार्यों को गति मिलेगी बल्कि इन जिलों के गांवों में रहने वाले व्यक्तियों को योजना के तहत स्वच्छ पेयजल उपलब्ध होगा जो कि हर घर जल के सपने को साकार करेगा।

भाजपा में परिवार भाव के साथ एकजुटता से किया जा रहा है कार्य : श्रवण सिंह बगडी

- केंद्रीय मंत्री अर्जुनराम मेघवाल, उपमुख्यमंत्री दीया कुमारी, मंत्री कर्नल राज्यवर्धन सिंह राठौड़ सहित 17 मंत्री, विधायक और भाजपा पदाधिकारी 6 नवम्बर को रहेंगे प्रवास पर

जयपुर। भाजपा प्रदेश के उपचुनावों को लेकर पूर्णरूप से सक्रिय नजर आ रही है। भाजपा के प्रदेशाध्यक्ष मदन राठौड़ जहां हर उपचुनाव वाले विधानसभा क्षेत्रों का दौरा कर भाजपा कार्यकर्ताओं के साथ बैठकर चुनावी रणनीति तय कर रहे है, वहीं भाजपा प्रत्याशी के समर्थन में विकास के नाम पर आमजन से मतदान की अपील भी कर रहे है। इधर दूसरी ओर भाजपा पदाधिकारी, कैबिनेट के मंत्री सरकार के कार्यों को लेकर जनता के बीच पहुंच रहे है। संगठन स्तर पर भाजपा का एक-एक पदाधिकारी, कार्यकर्ता चुनावों में जुटा हुआ है। भाजपा प्रदेश कार्यालय से महामंत्री श्रवण सिंह बगड़ी और उनकी टीम लगातार उपचुनावों में प्रवास कार्यक्रमों के साथ क्षेत्र की राजनीति में सक्रिय जननेताओं को आमजन के बीच भेज रहे है। भाजपा प्रदेश कार्यालय पर नियमित रूप से चुनाव प्रबंधन के साथ प्रवास कार्यक्रम की रूपरेखा तय की जा रही है।

भाजपा प्रदेश महामंत्री ने कहा कि प्रदेश के उपचुनावों में भाजपा सभी सातों सीटों पर भारी बहुमत के साथ जीत दर्ज कराएगी। भाजपा में कार्यकर्ता से लेकर आमजन एकजुट होकर कमल के लिए कार्य कर रहे है। भाजपा में एकजुटता नजर आ रही है, वहीं कांग्रेस में भितरघात देखने को मिल रहा है। भाजपा सरकार के मंत्रीगण मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के 10 माह में किए ऐतिहासिक कार्यों को जनता के बीच पहुंचा रहे है, फिर चाहे वो बजट घोषणाएं हो या फिर रोजगार सृजन के लिए राइजिंग राजस्थान 2024 की कार्य योजना। मुख्यमंत्री शर्मा विकसित राजस्थान के लिए लगातार प्रयासरत है और उनके विकास कार्यों के आधार पर भाजपा प्रदेश की सभी सातों सीट जीतेगी।

बगडी ने कहा कि भाजपा में परिवार भाव के साथ काम किया जाता है, भाजपा पदाधिकारियों के साथ कार्यकर्ता और आमजन मिलकर चुनाव लड़ रहे है। ऐसे में उपचुनावों के माहौल को देखते हुए कांग्रेस भाजपा के सामने कहीं भी नजर नहीं आ रही, माहौल भाजपा के पक्ष में है और निश्चित रूप से सभी प्रत्याशी जीतेंगे।

श्रवण सिंह बगडी ने बताया कि बुधवार 6 नवंबर को खींवसर विधानसभा क्षेत्र में केंद्रीय मंत्री अर्जुनराम मेघवाल, राज्य सरकार के मंत्री कर्नल राज्यवर्धन सिंह राठौड और भाजपा प्रदेश महामंत्री जितेंद्र गोठवाल प्रवास पर रहेंगे। इसी तरह रामगढ में उप मुख्यमंत्री दीया कुमारी, गुजरात योग बोर्ड के चैयरमैन शीशपाल, विधायक भागचंद टांकडा, झुंझुनूं में पूर्व प्रदेशाध्यक्ष सतीश पूनियां, सांसद राजेंद्र गहलोत, पूर्व सांसद सुमेधानंद सरस्वती और सैनिक कल्याण बोर्ड अध्यक्ष प्रेम सिंह बाजौर, दौसा में पूर्व नेता प्रतिपक्ष राजेंद्र राठौड़, प्रदेश उपाध्यक्ष प्रभूलाल सैनी, सलूंबर में मंत्री जोराराम कुमावत, विधायक सुरेंद्र सिंह, दीप्ति माहेश्वरी, समाराम गरासिया तथा चौरासी में मंत्री बाबूलाल खराडी प्रवास पर रहेंगे।

समृद्ध विरासत और परम्पराओं का प्रदेश है राजस्थान : देवनानी

जयपुर। विधानसभा अध्यक्ष वासुदेव देवनानी चार देशों की यात्रा के दौरान मंगलवार को सिडनी (ऑस्ट्रेलिया) पहुँचे। देवनानी का सिडनी पहुँचने पर अधिकारियों ने स्वागत किया। देवनानी ने सिडनी में आयोजित भारत रीजन के 67वें राष्ट्र मण्डल संसदीय संघ के सम्मेलन की डेलीगेट ब्रीफिंग में भाग लिया। देवनानी ने सम्मेलन में मौजूद उत्तर प्रदेश, उत्तराखण्ड, कर्नाटक, तमिलनाडू सहित भारत के विभिन्न प्रदेशों के विधान सभा अध्यक्षगण और सांसदगण से मुलाकात की।

- विधान सभा अध्यक्ष देवनानी पहुँचे सिडनी

इस मौके पर देवनानी ने कहा कि राजस्थान प्रदेश की अपनी समृद्ध विरासत, परम्पराओं और प्राकृतिक सुंदरता के लिए विशिष्ट पहचान है। जयपुर के महल, उदयपुर की झीले और जोधपुर, बीकानेर व जैसलमेर के भव्य दुर्ग देशी तथा विदेशी सैलानियों के लिए पंसदीदा स्थान है। राज्य के प्रसिद्ध पर्यटन स्थलों का भ्रमण करने के लिए प्रति दिन हजारों की संख्या में पर्यटक आते है।

विधानसभा अध्यक्ष वासुदेव देवनानी ने सिडनी में आयोजित भारत रीजन के 67वें राष्ट्र मण्डल संसदीय संघ के सम्मेलन की डेलीगेट ब्रीफिंग में भाग लिया।

देवनानी इस अध्ययन यात्रा के दौरान विभिन्न देशों के विधायी निकायों का अवलोकन करने के साथ संसदीय प्रतिनिधिगण से लोकतांत्रिक मूल्यों के सुदृढीकरण से संबंधित विभिन्न विषयों पर विचार-विमर्श करेंगे। उल्लेखनीय है कि प्रति वर्ष आयोजित होने वाले इस सम्मेलन में विभिन्न राज्यों की विधान सभाओं के अध्यक्षगण एक मंच पर एकत्रित होकर लोकतांत्रिक व्यवस्थाओं के लिए विभिन्न विषयों पर संवाद करते है। इस बार का राष्ट्र मण्डल संसदीय संघ का सम्मेलन आस्ट्रेलिया में 5 से 8 नवम्बर तक हो रहा है। संसदीय संघ का यह 67वां सम्मेलन है। इस सम्मेलन में भाग लेने के लिए अध्यक्ष देवनानी के साथ विधान सभा के विशिष्ट सचिव भारत भूषण शर्मा भी गये है।

ब्यावर कलेक्टर ने की अवैध खनन कर रही फर्म पर कार्रवाई, 38 करोड़ का जुर्माना लगाया

रायपुर उपखंड क्षेत्र के ग्राम अमरगढ़ में करणी कृपा ग्रेनाइट फर्म ने लीज क्षेत्र से बाहर 1.30 लाख टन से ज्यादा अवैध खनन और अतिक्रमण कर रखा था

- जांच में अवैध खनन क्षेत्र कुल 5571 वर्ग मीटर एवं अवैध अतिक्रमण क्षेत्र 22274 वर्ग मीटर पाया गया
- उपखंड अधिकारी की मौजूदगी में जब खनिज विभाग की टीम ने मौके पर नाप-जोख की तो इस फर्म द्वारा तय क्षेत्र से ज्यादा जगह पर अवैध खनन किए जाने की पोल खुली

जयपुर/ब्यावर, (कासं)। ब्यावर जिला कलेक्टर डॉ. महेंद्र खड़गावत के आदेश पर रायपुर उपखंड अधिकारी के नेतृत्व में प्रशासन, पुलिस और खनिज विभाग की टीम ने मंगलवार को अवैध खनन के विरुद्ध बड़ी कार्रवाई को अंजाम दिया। रायपुर क्षेत्र की चांग तहसील के ग्राम अमरगढ़ में करणी कृपा ग्रेनाइट फर्म द्वारा लीज क्षेत्र से बाहर अवैध खनन करते हुए पाए जाने पर नाप-जोख किया। खनिज विभाग की जांच में 1 लाख 30 हजार 110.96 टन अवैध खनन सामने आया। इस पर पेनल्टी राशि रॉयल्टी का 10 गुना वसूली योग्य मानते हुए 37 करोड़ 73 लाख 21 हजार रु. जुर्माना लगाया। जांच में अवैध खनन क्षेत्र कुल 5571 वर्ग मीटर एवं अवैध अतिक्रमण क्षेत्र 22274 वर्ग मीटर पाया गया ।

ब्यावर कलेक्टर डॉ. महेन्द्र खड़गावत के आदेश पर रायपुर उपखंड अधिकारी के नेतृत्व में प्रशासन, पुलिस और खनिज विभाग की टीम ने अवैध खनन के विरुद्ध कार्रवाई की।

कलेक्टर डॉ. महेन्द्र खड़गावत ने बताया कि इस फर्म के द्वारा अवैध खनन और अतिक्रमण की लगातार ग्रामवासियों द्वारा शिकायत की जा रही थी। इस पर शिकायतों की जांच और सत्यापन कराया तो यह पूरा कारनामा सामने आया। इस पर उपखंड अधिकारी रायपुर को संयुक्त दल के साथ मौके पर पहुंचकर जांच करने और शिकायत सही होने पर कार्रवाई के निर्देश दिए। इस पर मंगलवार को उपखंड अधिकारी, तहसीलदार, पटवारी हल्का चांग व खनिज व पुलिस टीमें ग्राम अमरगढ़ के खसरा नंबर 84 पर मौके पर पहुंची। जांच दल को मौके पर लीज होल्डर उपस्थित नहीं मिले।

जांच करने पर माइनिंग लीज एम.एल. 39/02 का राजस्व रिकॉर्ड में अंकन नहीं होना पाया गया। खनिज विभाग के अनुसार खसरा नंबर 84 में एम.एल. 39/02 में क्षेत्रफल 4 हैक्टेयर लीज क्षेत्र स्वीकृत है। मौके पर खनिज विभाग ने इस लीज के दो सीमा चिन्ह ए व डी बताए गए जो मौके पर पाए गए। शेष दो सीमा चिन्ह मौके पर न तो पाये गए न हीं खनिज विभाग द्वारा बताए गए । मौके पर राजस्व विभाग व खनिज विभाग द्वारा संयुक्त रूप से खनन क्षेत्र एम.एल. 39/02 क्षेत्रफल 4 हैक्टेयर का सीमांकन किया गया। लीज होल्डर द्वारा लीज क्षेत्र से अधिक क्षेत्र व सिवायचक भूमि में अवैध खनन करना व मैटेरियल डालकर अतिक्रमण करना पाया गया। इस पर दोषी फर्म पर कार्रवाई करते हुए लगभग 38 करोड़ की राशि का जुर्माना लगाया। इस कार्रवाई में उपखंड अधिकारी गुलाब सिंह, तहसीलदार रायपुर, खनिज अभियंता जगदीश मेहरावत सहित प्रशासन, पुलिस व खनिज विभाग के वरिष्ठ अधिकारी मौजूद रहे।

पांच हजार की रिश्वत लेते बाबू को पकड़ा

- स्वास्थ्य विभाग जोन डायरेक्टर के कार्यालय में कार का बिल बनाने की एवज में रिश्वत मांगी

जोधपुर, (कासं)। एसीबी ने कार्रवाई कर चिकित्सा विभाग के बाबू नरेंद्र भारती को पकड़ा है। जोधपुर की एसीबी टीम ने बिल बनाने की एवज में रिश्वत राशि लेते चिकित्सा और स्वास्थ्य विभाग जोन डायरेक्टर ऑफिस के कार्यालय कर्मचारी को रंगे हाथों ट्रैप किया है। उससे पांच हजार की रिश्वत राशि बरामद की गई। फिलहाल उसके मकान और अन्य ठिकानों पर एसीबी की ओर से सर्च की कार्रवाई को अंजाम भी दिया जा रहा है।

जानकारी के अनुसार इसको लेकर पूर्व में परिवादी की ओर से शिकायत दी गई थी। इसके बाद से ही एसीबी की टीम एक्टिव थी। फिलहाल इस पूरे रिश्वत के मामले में शामिल अन्य लोगों की भूमिका की भी जांच की जा रही है। एसीबी के उप अधीक्षक गोवर्धन राम ने बताया कि 24 अक्टूबर को एसीबी की स्पेशल यूनिट में परिवादी ने लिखित रिपोर्ट पेश की। बताया कि स्वास्थ्य विभाग जोन डायरेक्टर के कार्यालय में उनकी एक कार लगी हुई थी। जिसका बिल बनाने की एवज में कार्यालय में कार्यरत बाबू नरेंद्र भारती की ओर से रिश्वत राशि की मांग की जा रही है। शिकायत मिलने के बाद 24 अक्टूबर को एसीबी की टीम ने वेरिफिकेशन करवाया और ट्रैप की कार्रवाई को अंजाम दिया गया। दीपावली के अवकाश खत्म होने के बाद आज ऑफिस के बाबू ने परिवादी से 5 हजार रुपए जैसे ही लिए। रंगे हाथों एसीबी टीम ने उसे ट्रैप कर लिया। फिलहाल बाबू को हिरासत में लिया गया है। उसके शिकारगढ़ स्थित मकान पर भी सर्च किया जा रहा है। एसीबी इस रिश्वत के खेल में शामिल अन्य लोगों की भूमिका की भी जांच कर रही है।

25 हजार का इनामी गिरफ्तार

मासलपुर/करौली, (निसं) । मासलपुर थाना पुलिस ने नाबालिग से सामूहिक दुष्कर्म के मामले में एक वर्ष से फरार चल रहे 25 हजार रुपए के इनामी बदमाश को गिरफ्तार किया है। पुलिस आरोपी से पूछताछ कर रही है। मासलपुर थानाधिकारी नीरज कुमार शर्मा ने बताया कि नाबालिग से सामूहिक दुष्कर्म के मामले में एक साल से फरार चल रहे गोविंद गुर्जर को पुलिस ने गिरफ्तार किया है। मामले में पुलिस एक आरोपी को पूर्व में गिरफ्तार कर चुकी है। थानाधिकारी बताया कि गत 24 सितंबर 2023 को मासलपुर थाने में एक नाबालिग के पिता ने अपनी पुत्री के अपहरण कि एफआईआर दर्ज कराई।

डिप्टी सीएम दिया कुमारी ने राजेन्द्र भांबू को जीताने की अपील की

झुंझुनू। उपमुख्यमंत्री दिया कुमारी ने कांग्रेस पर हमला करते हुए कहा कि झुंझुनू विधानसभा में जनता को झूठ के अलावा कुछ नहीं मिला। दिया कुमारी चावों सती मंदिर हॉल, बगड़ में एक सभा को संबोधित कर रही थी। दिया कुमारी ने देश के सैन्य इतिहास में झुंझुनू के बलिदान को याद करते हुए कहा कि एक सैनिक की बेटी के रूप में शेखावाटी के वीर सपूतों को श्रद्धांजलि अर्पित करती हूं।

डिप्टी सीएम दिया कुमारी ने कहा कि मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के नेतृत्व में राजस्थान में विकास के नये आयाम स्थापित करने के लिए तेजी से प्रयास किये जा रहे हैं और राइजिंग राजस्थान के माध्यम से राज्य में 15000 करोड़ के निवेश किये जायेंगे, जिससे युवाओं के लिए रोजगार के अवसरों में बढ़ोतरी होगी। दिया कुमारी ने कहा कि शेखावाटी की पर्यटन के क्षेत्र में विशेष पहचान है और भाजपा की जीत यहाँ विकास के नये आयाम स्थापित करेगी।

उपमुख्यमंत्री दिया कुमारी का झुंझुनू पहुँचने पर भाजपा के कार्यकर्ताओं ने स्वागत किया।

इस अवसर पर मंत्री राज्यवर्धन सिंह राठौड़, मंत्री अविनाश गहलोत, सैनिक कल्याण बोर्ड अध्यक्ष प्रेम सिंह बाजोर, जिलाध्यक्ष बनवारी लाल सैनी, नवलगढ़ विधायक विक्रम सिंह जाखल, कोलायत विधायक अंशुमान भाटी, पूर्व विधायक रणवीर सिंह गुढा, बगड चेयरमैन गोविंद सिंह, पूर्व चेयरमैन विक्रम सिंह, विजेंद्र सिंह, जिला उपाध्यक्ष शेरसिंह, किसान मोर्चा जिला अध्यक्ष रतन सिंह, पूर्व जिला अध्यक्ष राजीव सिंह, पार्षद अजय सिंह, कीर्ति सिंह, दशरथ सिंह पार्टी पदाधिकारी एवं कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

उपमुख्यमंत्री के झुंझुनू पहुँचने पर भाजपा के कार्यकर्ताओं ने नवलगढ़ और झुंझुनूं शहर की सीमा पर स्वागत किया। डिप्टी सीएम दिया कुमारी ने परमवीर चक्र विजेता शहीद पीरु सिंह की मूर्ति पर माल्यार्पण कर श्रद्धांजलि दी। देर शाम दिया कुमारी झुंझुनू स्थित चुनाव कार्यालय पहुँची जहां उन्होंने कार्यकर्ताओं से बातचीत की और उनका उत्साहवर्धन किया।

प्रदेश में सात सीटों पर हो रहे विधानसभा चुनावों को लेकर भाजपा ने ताकत झोंकी

- रामगढ़ में दीपावली मिलन समारोह का आयोजन, गृह राज्यमंत्री जवाहर बेढम ने भाजपा के समर्थन में मतदान की अपील की
- मुख्यमंत्री भजन लाल शर्मा से जवाहर सिंह बेढम ने गुर्जर समाज के लोगों से फ़ोन पर बात कराई

जयपुर। प्रदेश में सात सीटों पर हो रहे विधानसभा चुनावों को लेकर भाजपा ने पूरी ताकत झोंक रखी है। भाजपा के मंत्री, विधायक और संगठन के लोग सभी समाजों तक पहुंचकर भाजपा के पक्ष में वोट डालने की अपील कर रहे हैं और सभी समाजों को अपनी और आकर्षित करने का प्रयास कर रहे हैं।

जानकारी के अनुसार मंगलवार को भाजपा प्रत्याशी सुखवंत सिंह के समर्थन में गुर्जर समाज का दीपावली मिलन समारोह रामगढ़ में आयोजित किया गया जिसमें रामगढ़ विधानसभा के गुर्जर समाज के लोगों ने शिरकत की। कार्यक्रम में गृह राज्य मंत्री जवाहर सिंह बेढ़म, पूर्व कैबिनेट मंत्री हेम सिंह भड़ाना, गंगापुर सिटी विधायक मानसिंह गुर्जर ने समाज के लोगों से रामगढ़ सीट को भाजपा की झोली में डालने की अपील की। गृह राज्य मंत्री जवाहर सिंह मैडम ने फोन पर मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा से भी समाज के लोगों की बात कराई। इस दौरान मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने लोगों से रामा श्यामा की और भारतीय जनता पार्टी के पक्ष में वोट डलवाने की अपील की। इस दौरान भाजपा नेता राजेंद्र कसाना, जिला अध्यक्ष अशोक गुप्ता, सुदेश खम्बरा, बह्मं मुनि,महेंद्र कुमावत मौजूद रहे।

भाजपा टोंक द्वारा देवली उनियारा विधानसभा चुनावों को लेकर उनियारा में मीडिया सेंटर का उद्घाटन भीलवाड़ा सांसद एवं विधानसभा चुनाव प्रभारी दामोदर अग्रवाल द्वारा किया गया। इस अवसर पर मीडिया को सम्बोधित करते हुए कहा कि भाजपा प्रत्याशी की चुनावी सभाओं में उमड़ रहा जन सैलाब चुनाव परिणामों की दिशा बता रहा है और हम बूथ मैनेजमेंट पर ध्यान दे रहे हैं और अधिक से अधिक मतदान हो यही हमारा लक्ष्य है। वहीं खींवसर विधानसभा क्षेत्र में भाजपा प्रत्याशी रेवन्तराम डांगा ने मंगलवार को आचीणा, करणू, शिवनाड़ा, साटिका, पाचौड़ी, हनुमान सागर, भोजास, खटौड़ा, झाड़ेली, बिरलोका, मोतीनाथरापुरा, जसनाथपुरा, पाबुसर, हेमपुरा में जनसंपर्क कर अपने पक्ष में समर्थन मांगा। इस मौक़े पर पूर्व सांसद ज्योति मिर्धा ने सम्बोधित करते हुए कहा कि आपका एक एक मत खींवसर के विकास के लिए आगामी वर्षों की दशा और दिशा तय करेगा।

उप चुनाव को लेकर विधानसभा के चुनावी दौरे पर आई राजस्थान सरकार की उप मुख्यमंत्री दिया कुमारी ने कहा कि कांग्रेस ने ज़िले सहित शेखावाटी को यमुना नदी के पानी के नाम पर हमेशा धोखा देकर वोट की राजनीति की है जबकि भाजपा जो कहती है वो करती है। अब जल्द ही झुंझुनू ज़िले के लोगो को यमुना का पानी पेयजल व सिंचाई के रूप में मिलेगा। उन्होंने कहा कि डबल इंजन की सरकार में राजेंद्र भांबू के विजय होने से विधानसभा क्षेत्र में बहुत विकास कार्य होंगे व एक लहलहाता झुंझुनूं आपको तोहफ़े में मिलेगा। चौरासी सीट पर कारीलाल ननोमा ने झोथरी मंडल में जनसंपर्क किया और चौकी, माल, बावड़ी खेड़ा, सुराता, बेड़ा, नगरिया, पंचेला में घर-घर जाकर प्रचार-प्रसार किया। सलूम्बर सीट से भाजपा प्रत्याशी शांता देवी ने कहा कि विकसित राजस्थान के साथ सलूम्बर को समृद्ध बनाने के लिए भाजपा को वोट देकर भजनलाल सरकार को मजबूत बनाना है। भाजपा प्रत्याशी शांता देवी ने मल्लाडा मंडल में गांव गांव जाकर जनसंपर्क किया।

सर्राफा व्यवसायी के घर जेवर सहित नगदी चोरी

चोरी की वारदात के बाद मकान में पुलिस ने जांच की।

- सात किलो चांदी, सोने के जेवरात सहित एक लाख की नकदी चोरी

नारायणपुर, (निसं)। कस्बे के पुराने बाजार में एक सर्राफा व्यापारी के घर से लाखों रुपए के सोने-चांदी के आभूषण और नकदी चोरी हो गए। ज्वैलर्स दीपावली मनाने के लिए अपने परिवार के साथ जयपुर गया हुआ था और पीछे से चोर सूने घर से लाखों रुपए के आभूषण और नकदी लेकर फरार हो गए।

ज्वैलर्स राकेश कुमार सोनी ने बताया कि धनतेरस के दिन वह अपनी पत्नी और बच्चों के साथ जयपुर अपने माता-पिता के पास दीपावली मनाने गया था। राकेश सोनी नारायणपुर के सीएचसी में एकाउंटेंट के पद पर कार्यरत हैं, पार्ट-टाइम में वह अपने घर पर स्वर्णकार का काम करता है। उन्होंने बताया कि सोमवार शाम करीब सात बजे जब वह नारायणपुर स्थित अपने घर पहुंचा तो घर के मुख्य दरवाजे का ताला खोला, लेकिन दरवाजा अंदर से बंद था। उन्होंने पड़ोसियों को बुलाया और दरवाजा खोलने की कोशिश की, लेकिन दरवाजा नहीं खुला। इसके बाद वह दूसरे मकान की छत से घर के अंदर गया, जहां सीढ़ियों का दरवाजा खुला हुआ था। घर के अंदर जाने पर उन्होंने देखा कि सभी कमरे का सामान बिखरा पड़ा था और अलमारी टूटी थी।

जांच करने पर पता चला कि सोने-चांदी के सभी आभूषण गायब थे। राकेश सोनी ने बताया कि करीब 7 किलो चांदी, सोने की चैन, सोने की 2 अंगूठी, सोने की झुमकी, सोने का पेंडल, 8 नग सोने की नोज पिन, बच्चों की और पत्नी की चांदी की पायजेब सहित लगभग एक लाख रुपए की नकदी चोरी हो गई। उन्होंने बताया कि ज्वेलरी का काम करने के साथ-साथ वह चांदी की सप्लाई का भी काम करता हैं। चोर उनके घर से लगभग10-12लाख रुपए का सामान लेकर फरार हो गए। घटना की सूचना पुलिस को दी गई,जिस पर थानाधिकारी शिम्भुदयाल मीणा मय जाप्ते के मौके पर पहुंचकर घटना की जानकारी ली। पुलिस ने चोरी का मुकदमा दर्ज कर चोरों की तलाश शुरू कर दी है।

कन्हैयालाल हत्याकांड के आरोपी रियाज समेत चार की मेडिकल जांच

- रियाज को यूरोलॉजी विभाग में दिखाने के बाद बाकी तीन हार्डकोर अपराधियों का उपचार करवाया
- आरोपियों को हथियारबंद जवान, सिविल लाइन सहित और कोतवाली थाना पुलिस की मौजूदगी में हाई सिक्योरिटी जेल में शिफ्ट किया

अजमेर, (कासं)। उदयपुर में हुए टेलर कन्हैयालाल हत्याकांड के आरोपी रियाज अत्तारी समेत 4 हार्डकोर आरोपियों को पुलिस मंगलवार को हाई सिक्योरिटी जेल से जवाहर लाल नेहरू अस्पताल लेकर पहुंची। रियाज को यूरोलॉजी विभाग में दिखाने के बाद बाकी तीन हार्डकोर अपराधियों का ओपीडी में उपचार करवाया गया। आरोपियों को हथियारबंद जवान, सिविल लाइन सहित और कोतवाली थाना पुलिस की मौजूदगी में हाई सिक्योरिटी जेल में शिफ्ट किया गया।

गौरतलब है कि कन्हैयालाल हत्याकांड के आरोपी गौस मोहम्मद, रियाज अत्तारी सहित अन्य आरोपी हाई सिक्योरिटी जेल में बंद है। रियाज अत्तारी को मंगलवार को बाथरूम में तकलीफ होने पर हाई सिक्योरिटी जेल से हथियारबंद जवानों और सिविल लाइन कोतवाली थाना पुलिस की मौजूदगी में यूरोलॉजी विभाग लेकर पहुंचे। रियाज की जांच करवाने के बाद संबंधित डॉक्टर को दिखाया गया। डॉक्टर द्वारा उसे प्राथमिक उपचार दिया। इसके बाद रियाज को वापस कड़ी सुरक्षा में हाई सिक्योरिटी जेल शिफ्ट किया गया। जानकारी अनुसार कन्हैयालाल हत्याकांड के आरोपी रियाज अत्तारी के साथ अन्य 3 हार्डकोर अपराधियों को भी जेएलएन हॉस्पिटल लेकर पहुंचे थे। रियाज को सबसे पहले कार्डियोलॉजी विभाग में दिखाने के बाद बाकी तीन हार्डकोर अपराधियों को जेएलएन अस्पताल की ओपीडी में लेकर पहुंचे। जहां हार्डकोर अपराधी सिकंदर ऑफ जीवण, दिलीप और अन्य हार्डकोर अपराधी को उपचार करवाने के बाद जेल में शिफ्ट कर दिया गया।

सड़क हादसे में महिला की मौत

हिण्डौन, (निसं)। लपावली मार्ग स्थित एक पेट्रोल पंप के पास अज्ञात बाइक की टक्कर से घायल हुई महिला की रविवार शाम को मौत हो गई। परिजन महिला को जिला अस्पताल से जयपुर ले जा रहे थे। मृतका हिण्डौन के भंडारण का पुरा निवासी शिमला सैनी के पति मोहन सैनी ने बताया कि भाई दूज पर उसकी पत्नी शिमला, बेटा रवि सैनी तीनों बाइक से टोडाभीम गए हुए थे। महिला शिमला देवी पीहर में भाईदूज मनाकर बाइक से गांव भंडारण का पुरा लौट रही थी। इस दौरान लपावली के पास वह उतरी।

पुष्कर में उमड़ रही आस्था की भीड़

पुष्कर, (निसं)। ब्रह्मा की नगरी पुष्कर में कार्तिक माह के धार्मिक मेले में आस्था का महाकुंभ लगने लगा है। पवित्र ब्रह्म सरोवर के तट पर बने घाटों पर स्नानार्थियों का तांता लगा हुआ है। वहीं ब्रह्मा मंदिर सहित अन्य मंदिरों में दर्शनार्थियों की लंबी कतारें देखी जा रही हैं। बाजारों, गलियों, मुख्य स्थानों पर श्रद्धालुओं की भारी भीड़ लगी हुई है। मंदिरों में अन्नकूट महोत्सव आयोजित किए जा रहे हैं।

नगर के आश्रमों, मठों, मंदिरों, घाट किनारे साधु संतो ने डेरा जमाना शुरू कर दिया है। धर्मशालाएं, होटल, रिजॉर्ट की बुकिंग फुल हो चुकी है। धार्मिक मान्यता के अनुसार कार्तिक माह में पुष्कर सरोवर में स्नान पूजा अर्चना करने का महत्व है, लेकिन पुराणोक्त महत्व का पंचतीर्थ महास्नान का आगाज 12 नवंबर कार्तिक शुक्ल पक्ष की देव प्रबोधिनी एकादशी से होगा जिसकी पूर्णाहुति 15 नवंबर कार्तिक पूर्णिमा के महास्नान के साथ होगी। 9 नवंबर शनिवार को गोपाष्टमी, 10 नवंबर को आंवला नवमी का विशेष स्नान होगा। गोपाष्टमी 9 नवंबर को पुरोहित समुदाय की संस्था श्रीतीर्थ गुरु पुष्कर पुरोहित संघ ट्रस्ट के सानिध्य में सरोवर के मुख्य घाट पर धार्मिक ध्वजारोहण की रस्म अदायगी के साथ धार्मिक मेले का शुभारंभ होगा। इसी दिन हजारों किलो सामग्री का अन्नकूट व सरोवर के छप्पन भोग की झांकी सजाकर महाआरती की जाएगी।

सूने मकान से लाखों की चोरी

बिजयनगर, (निसं)। बीती रात बरल रोड स्थित महावीर कामेश कॉलोनी में स्थित हरीश पुत्र छोटू लाल सोनी के सूने आवास से अज्ञात चोरों ने चोरी की घटना को अंजाम देते हुए लाखों के जेवरात व नकदी चुराकर ले गए। प्राप्त जानकारी के अनुसार महावीर कामेश कॉलोनी निवासी हरीश सोनी दीपावली पर अपने परिवार के साथ ससुराल गए हुए थे। इसी बीच सोमवार रात्रि को अज्ञात चोरों ने सूने मकान के मुख्य द्वार का ताला तोड़कर भीतर प्रवेश किया और घर के कमरे में रखी अलमारी को खंगालते हुए उसमें रखी 4 किलो चांदी, 30 ग्राम सोना सहित दो लाख रुपये की नगदी चुराने में कामयाब हो गए। मंगलवार प्रात:पड़ोसियों ने घर के मुख्य द्वार को खुला हुआ देखकर मकान मालिक हरीश सोनी को चोरी की घटना की जानकारी दी। चोरी की वारदात की पुलिस को सूचना दी गई।

राजस्थान सरकार

कार्यालय अधिशाषी अभियन्ता, चिकित्सा एवं स्वास्थ्य विभाग
प्रथम तल, स्वास्थ्य भवन, भीनमाल रोड, जालोर

क्रमांक-अ.अ./चि.वं स्वा./2024-25/2451-59 दिनांक-23.10.2024

ई-निविदा सूचना संख्या 13/2024-25

राजस्थान के राज्यपाल महोदय की ओर से इस खण्ड के अन्तर्गत विभिन्न चिकित्सालयों पर रू. 105 लाख का 1 सिविल कार्य हेतु उपयुक्त श्रेणी में सार्वजनिक निर्माण विभाग एवं राज्य सरकार/केन्द्रीय सरकार के अधिकृत संगठनों/केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग/डाक एवं दूर संचार विभाग/रेलवे इत्यादि में पंजीकृत संवेदकों के समकक्ष हो, से निर्माण कार्य हेतु निर्धारित प्रपत्र में ई-टेन्डिरिंग प्रक्रिया ऑन लाईन निविदायें आमंत्रित की जाती है। निविदा से संबंधित विवरण डीआईपीआर की वैबसाईट WWW.dipronline.org, http://eproc.rajasthan.gov.in व विभागीय वैबसाईट http://rajswasthya.nic.in पर देखा जा सकता है।

NIB NO. NRH2425A0347
1 NRH2425WSOB01359
DIPR/C/10828/2024

(रणवीर सिंह कछवाहा)
अधिशाषी अभियंता
चिकित्सा एवं स्वास्थ्य, जालोर

जयपुर विद्युत वितरण निगम लिमिटेड
कार्यालय संभागीय मुख्य अभियंता (भ.सं.), भरतपुर
पावर हाउस के पास, मोतीझील, भरतपुर (ई-मेल -zcebz@jvvnl.org फोन नं.- 05644-236080)

ई-निविदा सूचना

टी.एन.-22, टी.एन.-23, टी.एन.-24 एवं टी.एन.-25 के लिए योग्य निविदादाताओं ऑनलाईन-निविदा दो भागों (तकनीकी-वाणिज्यिक), में श्रम दर पर आमंत्रित किऐ जाते है। टीएन-22:- सहायक अभियन्ता (एच.टी.एम.), जयपुर डिस्कॉम, भरतपुर के अन्तर्गत भरतपुर वृत में 33/11 केवी सब-स्टेशन अटारी का निर्माण मय 33 केवी लाईन व 11 केवी लाईन खीचने का कार्य निगम एआरसी दर पर करने के लिये UBN:VVN2425WSOB00671। टीएन-23:- सहायक अभियन्ता (एच.टी.एम.), जयपुर डिस्कॉम, करौली के अन्तर्गत करौली वृत में 33/11 केवी सब-स्टेशन रॉउण्ड कलॉ का निर्माण मय 33 केवी लाईन व 11 केवी लाईन खीचने का कार्य निगम एआरसी दर पर करने के लिये UBN:VVN2425WSOB00672। टीएन-24:- सहायक अभियन्ता (एच.टी.एम.), जयपुर डिस्कॉम, डीग के अन्तर्गत डीग वृत में 33/11 केवी सब-स्टेशन रसिया का निर्माण मय 33 केवी लाईन व 11 केवी लाईन खीचने का कार्य निगम एआरसी दर पर करने के लिये UBN:VVN2425WSOB00673। टीएन-25:- सहायक अभियन्ता (एच.टी.एम.), जयपुर डिस्कॉम, डीग के अन्तर्गत डीग वृत में 33/11 केवी सब-स्टेशन जयश्री का निर्माण मय 33 केवी लाईन व 11 केवी लाईन खीचने का कार्य निगम एआरसी दर पर करने के लिये UBN:VVN2425WSOB00674। योग्य निविदादाता सम्पूर्ण निविदा सम्बन्धित दस्तावेज ई-प्रोक्योरमेन्ट पोर्टल http://www.eproc.rajasthan.gov.in पर दिनांक 06.11.2024 से डाउनलोड कर सकते है। निविदाऐं ऑनलाईन ई-पोर्टल पर दिनांक 18.11.2024 (सायं 5:00 बजे) तक ही स्वीकार की जावेगी। निविदा सम्बन्धी जानकारी, कार्य का विवरण इत्यादि जयपुर विद्युत वितरण निगम की वेब साईट www.energy.rajasthan.gov.in/jvvnl, http://www.sppp.rajasthan.gov.in & http://www.eproc.rajasthan.gov.in से प्राप्त की जा सकती है।

जेपीआर-2908 (2024)
राज.संवाद/सी/24/7325

संभागीय मुख्य अभियंता (भरतपुर संभाग)
बिजली शिकायतों के लिए टोल फ्री नम्बर 1800 180 6507

Rajasthan Urban Drinking Water Sewerage and Infrastructure Corporation Ltd.
(A Government of Rajasthan Undertaking) Old Working Women Hostel, Behind Nehru Place, Lal Kothi, Tonk Road, Jaipur
Ph: 0141-2742240; E-mail: rudsico@rajasthan.gov.in, ruifdco@gmail.com; Web: urban.rajasthan.gov.in/rudsico

F18 (52) RUDSICO/AMRUT-2.0/2024-25/Tender/7635 Date :- 30/10/2024

NIB No. 04/2024-25

Notice inviting online bids for Rejuvenation of Water Body Project under AMRUT-2.0

Rajasthan Urban Drinking Water Sewerage & infrastructure Corporation Limited (RUDSICO),a Government of Rajasthan undertaking, invites online unconditional bids on behalf of the Governor of Rajasthan through e-procurement portal **http://eproc.rajasthan.gov.in** from eligible bidders in accordance with the RTPP Act 2012 and RTPP Rules 2013, amended up to date, and under Open Competitive Bidding (OCB) National with single stage-two envelope Bidding procedure for following works:

S. No.	Name of Work	Project Cost	Bid Security	Period of completion
1	Rejuvenation of Water Body projects at Karauli, Basedi, Rajakhera, Khirni & Gangapur City. Package - AMRUT 2.0/RAJ/RWB/02	15.54	0.311	12 months
2	Rejuvenation of Water Body projects at Sumerpur, Jalore, Ahore, Mt. Abu, Sirohi, Pindwara & Takhatgarh. Package - AMRUT 2.0/RAJ/RWB/04	20.88	0.418	12 months
3	Rejuvenation of Water Body projects at Pali. Package - AMRUT 2.0/RAJ/RWB/05	19.44	0.389	12 months
4	Rejuvenation of Water Body projects at Sri Madhopur, Suratgarh & Reengus. Package - AMRUT 2.0/RAJ/RWB/06	9.39	0.188	12 months
5	Rejuvenation of Water Body projects at Rajsamand & Kushalgar. Package - AMRUT 2.0/RAJ/RWB/07	7.73	0.155	12 months
6	Rejuvenation of Water Body projects at Chittorgarh, Nimbahera & Badi Sadri. Package AMRUT 2.0/RAJ/RWB/08	12.47	0.249	12 months

The details of NIB can be seen at e-procurement portal of state government sppp.rajasthan.gov.in and eproc.rajasthan.gov.in from date 07.11.2024 at 1700 Hours till the end date of online submission of bids i.e. 04.12.2024 up to 1800 Hours. Any subsequent addendum/corrigendum shall be published only at the e-procurement portal.

UBN No.: RDP2425WLOB0047 To RDP2425WLOB0052, NIB Code: RDP2425A0021

Executive Director
RUDSICO, Jaipur

Raj.Samwad/C/24/7326

नई सड़क और मैस्टिक डामर के सैंपल फेल होने के बावजूद भी दोषी फर्म और अफसरों पर कार्रवाई नहीं

पुलिस कमिश्नरेट के सामने अजमेर रोड पर बनाई गई डामर सड़क और सोडाला में मैस्टिक फ्लोरिंग की पिछले दिनों जे.डी.ए. की गुणवत्ता प्रकोष्ठ ने की थी जांच

-कार्यालय संवाददाता-

जयपुर । पुलिस कमिश्नरेट के सामने अजमेर रोड पर जे.डी.ए. के जोन-7 द्वारा बनाई गई डामर सड़क और सोडाला में मैस्टिक डामर फ्लोरिंग के सैंपल फेल होने के बावजूद दोषी फर्म और लापरवाह इंजीनियर्स पर कार्रवाई करने के बजाय जयपुर विकास प्राधिकरण प्रशासन चुप्पी साधे बैठा है।

जे.डी.ए. आयुक्त आनंदी ने कार्यभार संभालते ही इंजीनियर्स को चेतावनी तो दी थी, लेकिन सख्ती के अभाव में सड़क निर्माता ठेकेदारों और इंजीनियर्स में उनका भी डर खत्म हो गया है। इसका ताजा उदाहरण यह है कि, अजमेर रोड और सोडाला में डामर और मैस्टिक के सैम्पल फेल होने के बावजूद भी इंजीनियर्स ने लीपापोती कर दी है और अब घटिया काम करने वाली फर्म को पूरा भुगतान करने की तैयारियां चल रही हैं। जबक यहां काम भी अभी तक पूरा नहीं हुआ है।

ज्ञात रहे कि पुलिस कमिश्नरेट के सामने अजमेर रोड से एलीवेटेड रोड तक नई बिछाई गई डामर सड़क और सोडाला में नई सड़क पर बिछाई गई मैस्टिक डामर के सैम्पल गुणवत्ता जांच में फेल हो गए थे। इन दोनों जगहों पर सैम्पल में न तो सड़क पर डामर की मोटाई सही मिली और न ही बिछाई गई बिटुमिन में डामर की मात्रा सही मिली।

सूत्रों की मानें तो जयपुर विकास प्राधिकरण के जोन 7 के अधिशाषी अभियंता ने सड़क निर्माण का यह कार्य 2 वर्ष पुराने वर्क ऑर्डर पर कराया था।

हालांकि यह सड़क अच्छी-खासी स्थिति में थी, लेकिन इस पर बारिश के दौरान कुछ-कुछ जगहों पर खड्ढ़ों पहले तो घटिया पेचवर्क कराए गए और जब पेचवर्क बिखरने लगे तो सड़क टूटी हुई बताकर उस पर डामर की लेयर बिछा दी गई। डामर भी इतनी खराब थी कि सड़क पर बिछाते ही बिखर रही थी। साथ ही सड़क पर डामर की मात्रा भी कम थी। यह काम आरएम कंस्ट्रक्शन कंपनी को मिला था जिसने यह काम लटाला कंस्ट्रक्शन को सबलेट कर दिया था। मजेदार बात यह है कि जिस वर्क ऑर्डर पर इंजीनियर्स ने काम कराया, वह दो साल पहले का था, जिसकी समय सीमा भी खत्म हो चुकी थी।

जे.डी.ए. के जोन-7 द्वारा अजमेर रोड पर पुलिस कमिश्नरेट के सामने डामर सड़क तथा सोडाला में मैस्टिक डामर फ्लोरिंग का कार्य किया गया था।

- सैंपल फेल होने की रिपोर्ट उच्चाधिकारियों के पास पहुंचने के बावजूद भी जे.डी.ए. प्रशासन मूकदर्शक बना बैठा, इससे ठेकेदार और इंजीनियर्स को मिल रही धांधली की शह
- चर्चाएं है कि अब जोन के इंजीनियर्स घटिया सड़क बनाने वाले ठेकेदारों को आनन-फानन में भुगतान करके मामला रफा-दफा करना चाह रहे हैं, दीपावली से पूर्व में भुगतान की तैयारी थी, लेकिन गुणवत्ता जांच में सैंपल फेल होने से मामला अटक गया

रोक के बाद भी करवा दिया सड़क निर्माण

सूत्रों की मानें तो अजमेर रोड पर सड़क वर्ष 2014 में बनाई गई थी। इसके बाद वर्ष 2017 में फिर 6 करोड़ के काम की "ए एंड एफ" जारी करा ली थी। उस समय सड़क की स्थिति बेहतर थी। इस कारण तत्कालीन जेडीसी गौरव गोयल और मंजू राजपाल ने सड़क की बेहत हालत को देखते हुए यहां काम कराने की मंजूरी नहीं दी थी। जेडीए के इंजीनियर्स की कमेटी ने भी सड़क को अच्छी हालत में बताते हुए सिर्फ पेचवर्क कराने की सिफारिश की थी। इन सबके बाद अब जब नई जेडीसी आनंदी आई तो इंजीनियर्स ने मौका देख कर सड़क को रिनोवेट करा लिया। इसी तरह सोडाला, अजमेर रोड, क्वींस रोड तिराहे पर ट्रेफिक जंक्शन में सुधार के बहाने सड़क पर मेस्टिक वाली डामर बिछाई गई। इसकी भी गुणवत्ता खराब थी।

इसके बाद भी जोन 7 के इंजीनियर्स ने काम में लापरवाही बरती। पहले तो इन दोनों कामों का भुगतान दिवाली से पहले करने की तैयारी थी लेकिन सेम्पल रिपोर्ट सही नहीं आने के कारण मामला अटक गया।

जोन 7 के अधिशाषी अभियंता तरूण सिंघल ने व्यक्तिगत रुप से रूचि लेकर भरसक प्रयास भी किए लेकिन भुगतान नहीं करा सके। अब लीपापोती कर रिपोर्ट तैयार की जा रही है।

जांच में डामर और बिटुमिन कंक्रीट कम

जे.डी.ए. के गुणवत्ता प्रकोष्ठ ने पुलिस कमिश्नरेट के सामने अजमेर रोड से एलीवेटेड रोड तक की गुणवत्ता की जांच की थी। संबंधित एक्सईएन तरूण सिंघल को मौके पर बुलाया गया था लेकिन वह नहीं आए। इसके बाद जब इसकी जांच निजी लैब में कराई गई तो सड़क पर बिछाई गई डामर की मोटाई 20 एमएम से भी कम मिली जबकि यह मात्रा 35 से 40 प्रतिशत तक होनी चाहिए।

इसी तरह बिटुमिन कंक्रीट में डामर की मात्रा लगभग 3.5 प्रतिशत ही मिली जबकि डामर की मात्रा 5 प्रतिशत होनी चाहिए। इसी तरह सोडाला अजमेर रोड पर की गई मेस्टिक की मोटाई भी 18 प्रतिशत से भी कम मिली जबकि यह मात्रा 25 प्रतिशत होनी चाहिए।

जयपुर में 1100 किलो मिलावटी पनीर पकड़ा

- बाजार में ढाबों और रेस्टोरेंट में 190 रुपए प्रति किलोग्राम के भाव से बेचते थे आरोपी

जयपुर । राजधानी जयपुर में स्वास्थ्य विभाग की टीम ने मंगलवार को कार्रवाई करते हुए 1100 किलो मिलावटी पनीर पकड़ा गया है। जो बाजार में ढाबों और रेस्टोरेंट में 190 रुपए प्रति किलोग्राम की दर से सप्लाई किया जाना था।

जयपुर सीएमएचओ डॉ. विजय सिंह फौजदार ने बताया कि फूड सेफ्टी डिपार्टमेंट की सेंट्रल टीम और जयपुर सीएमएचओ की टीम ने पहली कार्रवाई दिल्ली बाइपास स्थित मनोहरपुरा पर की गई,जबकि दूसरी कार्रवाई झोटवाड़ा स्थित एक गोदाम पर की गई। दोनों जगह मिले 1100 किलो पनीर को नष्ट करवाया गया।

एडिशनल कमिश्नर पंकज ओझा ने बताया कि झोटवाड़ा स्थित शिवाजी नगर में मेसर्स सिफा मावा पनीर भंडार का गोदाम है। यहां तैयार पनीर और मावा बाजार में सप्लाई किया जाता है। सेंट्रल टीम ने छापा मारा तो पनीर का बड़ा स्टॉक रखा था। इसमें से रेंडम सैंपल लिए और पनीर की जांच की। प्रथम दृश्यता पनीर खराब क्वालिटी का दिख रहा था। तोड़ने के दौरान रबर की तरह खिंच रहा था। इसके अलावा पनीर में अजीब महक आ रही थी।

इस आधार पर टीम ने गोदाम में रखा करीब 350 किलोग्राम खराब पनीर मौके पर नष्ट करवाया। ये पनीर बाजार में 190 रुपए किलोग्राम के हिसाब से बेचा जाता है। जो शहर के अलग-अलग ढाबों पर सप्लाई होता है। वहीं चंदवास अलवर में 750 किलोग्राम नकली पनीर बनाकर जयपुर के विभिन्न क्षेत्रों में बेचने की तैयारी थी। सूचना पर आज स्थानीय पुलिस की मदद से दिल्ली बाइपास पर मनोहरपुरा पर पकड़ा। पनीर के सैंपल लेकर 750 किलोग्राम पनीर नष्ट करवाया।

जयपुर सीएमएचओ डॉ. विजय सिंह फौजदार ने बताया कि अगले सप्ताह से शादी-समारोह का सीजन शुरू हो रहा है। इस दौरान पनीर की मांग बढ़कर डबल हो जाती है। इसकी पूर्ति करने के लिए मिलावटी पनीर बनाकर बाजार में बेचा जाता है। अलवर के एरिया से सबसे ज्यादा पनीर बनकर जयपुर आता है और यहां के बाजारों में बेचा जाता है।

सार-समाचार

रतन टाटा का जीवंत तैल चित्र बनाया

जयपुर । वरिष्ठ चित्रकार चंद्रप्रकाश गुप्ता (देवदास आर्ट्स) राष्ट्र नायकों के लिए हमेशा तत्पर रहते हैं। इसी क्रम में चित्रकार गुप्ता ने मालार्पण में उद्योगपति रतन नवल टाटा का जीवंत तैल चित्र बनाकर अपनी कूँची से श्रद्धासुमन अर्पित किए। यहाँ 40 मिनट तक लाइव पोट्रेट पर निगाहें रतन नवल टाटा के जीवंत स्वरूप को चित्रकार गुप्ता की कूँची के माध्यम से एकटक निहारती रहीं। इस अवसर पर समाजसेवी सुधीर माथुर, कवि रोहित कृष्ण नंदन,माही,संदेश,माला व अन्य गणमान्य जन उपस्थित रहे । उल्लेखनीय है कि चित्रकार गुप्ता पिछले 25 वर्षों से निरंतर शहीद के गांव-ढाणी पहुंचकर उनके परिजनों को तैलचित्र भेंट करते हैं, इसी क्रम में राष्ट्र को समर्पित व्यक्तित्व रतन टाटा के लिए भी यह विनम्र श्रद्धांजलि है ।

'संभव' टाइटल से नया एलबम रिलीज

जयपुर। हाल में जयपुर की सिंगर सरिता राव व नीदरलैंड के ड्रमिस्ट ओटो दी जोंग का संभव टाइटल से नया एलबम रिलीज हुआ है। जयपुर जंक्शन बैंड ने नीदरलैंड में ही इस एलबम की रिकॉर्डिंग की है। गौरतलब है कि यह बैंड जयपुर की सिंगर सरिता राव व नीदरलैंड के ड्रमिस्ट ओटो दी जोंग ने मिलकर बनाया है। यह बैंड खासतौर से राजस्थान की सांस्कृतिक मूल्यों से सराबोर पारंपरिक संगीत और यूरोप के स्वतंत्र रॉक म्यूजिक फ्यूजन की मेलॉडी से देश-दुनिया के दानिशमंद श्रोताओं एक नया अनुभव करा रहे हैं। इस एलबम में तबला और सिंथेसाइजर जैसे साज का मिश्रण बड़ी ही खूबसूरती से किया है जो दिलों को लुभाता है। एलबम के प्रोड्यूसर फनकार ऑटो दी जोंग है। वहीं सिंगर सरिता राव ने गीतों को लिखने के साथ- साथ अपनी सुरीली आवाज से इन्हें संवारा है। सिंथेसाइज़र पर एरविन तुइजल, गिटार पर साहिल बहल और तबले पर इमरान खान ने सुर, लय और ताल का कर्णप्रिए ताना बाना बुना है। गानों का इंग्लिश ट्रांसलेशन दिल्ली की तृप्ति अग्रवाल ने किया है। साल 2019 में बना यह जयपुर जंक्शन बैंड अपने करिश्माई संगीत से दुनियाभर में लोकप्रियता हासिल कर रहा है।

आर.सी.डी.एफ. के तीन कर्मचारी निलंबित

जयपुर (कासं)। राजस्थान कोऑपरेटिव डेयरी फैडरेशन लिमिटेड ने प्रबंध संचालक के आदेशानुसार भ्रष्टाचार के आरोप में तीन कार्मिकों को तत्काल प्रभाव से निलंबित कर दिया है। इस संबंध में जानकारी देते हुए पशुपालन और डेयरी मंत्री जोराराम कुमावत ने बताया कि हमारी सरकार भ्रष्टाचार के खिलाफ जीरो टॉलरेंस की नीति पर काम कर रही है। किसी भी तरह की अनियमितता या भ्रष्टाचार के खिलाफ सख्त कार्यवाही की जाएगी। इन तीनों कार्मिकों के विरुद्ध अनियमितता की शिकायत मिली थी जिससे उनके खिलाफ विभागीय जांच के आदेश दिए गए थे। उनके खिलाफ विभागीय जांच विचाराधीन होने के कारण उन्हें तत्काल प्रभाव से निलंबित कर दिया गया है। उल्लेखनीय है कि मालाराम धानका, कनिष्ठ लेखाकार एमएफ एफएसबी बस्सी, अर्जुन लाल बुनकर, सहायक प्रबंधक संयंत्र, मोना जाट कनिष्ठ लेखाकार मेट्रो डेयरी प्लांट के विरुद्ध अनियमितता के आरोप में विभागीय जांच चल रही है। इन सभी कार्मिकों को निलंबन अवधि के दौरान नियमानुसार 50 प्रतिशत निर्वाह भत्ता देय होगा तथा निलंबन अवधि में इनका मुख्यालय आरसीडीएफ जयपुर होगा।

रिटायर्ड कर्मचारी से 15 लाख रु.ठगे

जयपुर । ज्योति नगर इलाके में एप डाउनलोड कर टास्क पूरा करने के नाम पर एक रिटायर्ड बिजली कर्मचारी से 15 लाख रुपए ठगने का मामला सामने आया है। एएसआई यमुनेश ने बताया कि विनायक अपार्टमेंट निवासी ब्रिजेंद्र सिंह सांखला ने मामला दर्ज करवाया कि उसके पास एक फोन आया और उसने कहा कि आप घर बैठे निवेश कर लाखों रुपए कमा सकते हो। इस पर उसने सोशल मीडिया ऐप मोबाइल में डाउनलोड कर लिया। इसके बाद उस पर काम शुरू कर दिया। टास्क पूरा करते करते उसने करीब 15 लाख रुपए का निवेश कर दिया। इसके बाद उसे और बड़ा टास्क करने के लिए कहा गया, लेकिन उसे रुपए नहीं लौटाए गए। शंका होने पर पीडित ने फिर निवेश नहीं किया और थाने पहुंच कर ममला दर्ज करवाया। पुलिस ने मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। पुलिस ने बताया कि पीड़ित पहले से ऑनलाइन रूम बुक करवा कर अच्छा पैसा कमा रहा था। निवेश कर मोटा रुपया कमाने के लालच में आकर उसने यह राशि गवां दी।

क्रिकेट मैच पर सट्टा लगाने वाला गिरफ्तार

जयपुर । कोटखावदा पुलिस और जिला स्पेशल टीम जयपुर दक्षिण (डीएसटी) ने क्रिकेट लाइन गुरु ऐप से क्रिकेट मैच पर ऑनलाइन सट्टा लगाने वाले आरोपी पवन विजय राम निवासी कोटखावदा को पकडा है और उसके पास से चार लाख तीस हजार रूपये,तीन मोबाइल, लाखों के हिसाब-किताब के दो रजिस्टर सहित अन्य सट्टा सामान जब्त किया है। आरोपी शातिर किस्म का अपराधी है,जो क्रिकेट मैचों एवं अंकों की लॉटरी के सट्टे से प्राप्त होने वाली राशि को हवाला से लेनदेन करता है।

गोविंददेवजी के दरबार में श्याम भजनों की बही रसधार, झूमकर नाचे शहरवासी

महापौर कुसुम यादव, आयुक्त अरुण हसीजा समेत विधायक, जनप्रतिनिधि और व्यापार मंडल के पदाधिकारी भी मौजूद रहे

जयपुर (कासं)। जयपुर स्थापना दिवस की 297वीं वर्षगांठ के अवसर पर नगर निगम हैरिटेज की ओर से मंगलवार को गोविंद देव जी मंदिर प्रांगण में विशाल श्याम भजन संध्या का आयोजन किया गया। जौहरी बाजार व्यापार मंडल के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित भजन संध्या में भजन गायकों ने बाबा श्याम के भजनों की रसधार से भक्तों को भाव विभोर कर दिया। इस संबंध में महापौर कुसुम यादव ने बताया कि हैरिटेज नगर निगम की ओर से जयपुर शहर के स्थापना के अवसर पर 18 अक्टूबर से एक महीने तक लगातार आयोजन किए जा रहे है। मंगलवार को जौहरी बाजार व्यापार मंडल के संयुक्त तत्वावधान में गोविंद देवजी मंदिर के सत्संग हॉल में विशाल श्याम भजन संध्या आयोजित की गई। जिसमें विभिन्न भजन गायक मधुर स्वरों में कीर्तन की है रात.... हारा हूं बाबा.... खाटू वाले उस मोड़ पे... सेठों का सेठ बाबा श्याम....बाबा आयेंगे तेरे द्वार....जैसे श्याम भजनों से श्याम बाबा का गुणगान किया। साथ ही फाल्गुनी चंग धमाल का विशेष आयोजन भी किया गया। कार्यक्रम में विधायक बाल मुकुंद आचार्य, गोपाल शर्मा, विधायक प्रत्याशी चंद्र मोहन बड़वाड़ा, रवि नैय्यर, आयुक्त अरुण कुमार हसीजा, उपायुक्त सतर्कता पुष्पेंद्र सिंह राठौड़, व्यापार मंडल के कैलाश मित्तल सहित पार्षद और निगम अधिकारी भी मौजूद रहे। भजन संध्या में गायक मनीष गर्ग, इति वर्मा, सुमित सैनी सहित अन्य गायकों ने भजनों की प्रस्तुति दी, वहीं चंग धमाल में मनीष शर्मा, अंकुर शर्मा और प्रवीण शर्मा ने सभी श्याम भक्तों को नाचने पर मजबूर कर दिया।

जयपुर स्थापना दिवस की 297वीं वर्षगांठ के उपलक्ष्य में नगर निगम हैरिटेज की ओर से मंगलवार को गोविंद देव जी मंदिर प्रांगण में श्याम भजन संध्या आयोजित की गई।

गलताजी में पिछले 4 माह से पुजारियों को नहीं मिला वेतन

जयपुर (कासं)। उत्तर भारतीय श्री वैष्णव रामानुज संप्रदाय की पीठ गलताजी का कब्जा भले ही जिला प्रशासन ने ले लिया है, लेकिन अब यहां व्यवस्थाएं अफसरों से नहीं संभल रही है। गलताजी के मंदिरों में सेवा-पूजा करने वाले पुजारियों और अन्य कार्मिकों को पिछले 4 माह से वेतन तक नहीं मिला है, ऐसे में इनके सामने जीवनयापन करना भी मुश्किल हो गया है।

मंगलवार को वेतन नहीं मिलने से आहत होकर करीब 25-30 लोगों ने मंदिर के दरवाजे के सामने बैठकर धरना दिया और राज्य सरकार से इस प्रकरण में हस्तक्षेप कर वेतन दिलवाने की मांग की। धरने पर बैठे पुजारियों का कहना था कि वे पिछले कई सालों से गलताजी पीठ के मंदिरों में सेवा-पूजा, अर्चना, भोग, राग साफ-सफाई, गुरूकुल में अध्ययन-अध्यापन, गौ-सेवा, अतिथि सेवा, यज्ञीय सेवा जैसे काम कर रहे हैं। गत जुलाई माह से अब तक पिछले 4 माह में एक पैसा भी बतौर वेतन नहीं मिला। जिला प्रशासन के अफसरों से बात करते हैं तो वे भी दुत्कारते है। कुछ अधिकारी हमें, अज्ञात लोगों से नकद राशि दिलाकर हमें प्रभावित करना चाहते हैं, लेकिन यह हमारी नैतिकता के विरूद्ध है। कई बार जिला प्रशासन को पत्र लिखकर भी शिकायत दे दी है, लेकिन कोई सुनवाई नहीं होती। पिछले 4 माह में रक्षाबंधन, जन्माष्टमी, गणेश चतुर्थी, श्राद्ध पक्ष, नवरात्रि, दशहरा, धनतेरस, दीपावली, गोवर्धन और भाई-दूज जैसे त्यौंहार आए और चले गए, लेकिन वेतन नहीं मिलने के कारण पुजारियों और अन्य कर्मचारियों का जीवनयापन करना मुश्किल हो गया है। पैसा नहीं मिलने के कारण सभी त्यौंहार बेरंग रहे।

- जिला प्रशासन ने गलताजी पीठ का कब्जा तो लिया लेकिन व्यवस्थाएं संभालने में फेल साबित रहा

पुजारियों का कहना है कि एक माह पूर्व भी हमने उपवास करके समाचार पत्रों के माध्यम से सरकार और जनता तक अपनी वेदना पहुंचायी थी, लेकिन इसके बावजूद भी जिला प्रशासन हठधर्मी बना बैठा रहा। मंगलवार को भी हम एक दिन का उपवास करते हुए भगवान के सानिध्य में बैठकर उनके नामों का स्मरण करते हुए अपनी पीड़ा जाहिर कर रहे हैं।

गलताजी मंदिर परिसर में मंगलवार को पुजारियों ने उपवास के साथ धरने पर बैठकर वेतन की मांग की।

जगतपुरा में 26 बीघा बेशकीमती जमीन से जे.डी.ए. ने हटाया अवैध कब्जा-अतिक्रमण

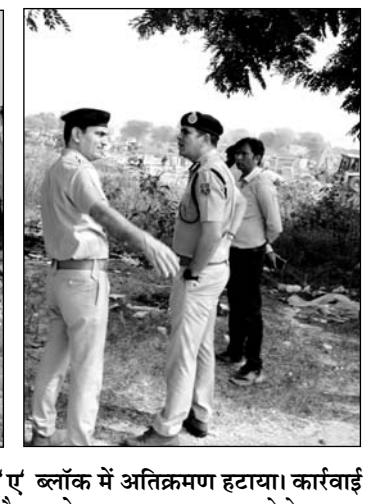

जे.डी.ए. की प्रवर्तन टीम ने मंगलवार को जगतपुरा स्थित अनुमोदित योजना सेन्ट्रल स्पाईन 'ए' ब्लॉक में अतिक्रमण हटाया। कार्रवाई के दौरान पुलिस उप महानिरीक्षक कैलाश चंद्र विश्नोई भी मौके पर पुलिस जाप्ते के साथ मौजूद रहे। फोटो-राष्ट्रदूत

जयपुर । जे.डी.ए. के प्रवर्तन दस्ते ने जगतपुरा में सेन्ट्रल स्पाईन 'ए' ब्लॉक की 26 बीघा बेशकीमती सरकारी जमीन से अवैध कब्जा और अतिक्रमण हटाया। कार्रवाई के दौरान पुलिस उप महानिरीक्षक कैलाश चंद्र विश्नोई और उनकी टीम मौके पर मौजूद रही।

विश्नोई ने बताया कि जगतपुरा 200 फीट महल रोड पर जे.डी.ए. की अनुमोदित योजना सेन्ट्रल स्पाईन 'ए' ब्लॉक में 26 बीघा बेशकीमती सरकारी जमीन पर घूमन्तू लोगों ने 125 झुग्गी-झोपड़ियां, तम्बू, तिरपाल, टीनशैड, झाड़ियां, 60 से ज्यादा थड़ी-ठेले और तीन नर्सरी लगाकर कब्जा कर लिया था। यह बेशकीमती भूमि जे.डी.ए. की थी। जैसे ही इस अवैध अतिक्रमण की जानकारी मिली तो मौके पर मौजूद लोगों को नोटिस देकर सरकारी जमीन खाली करने की चेतावनी दी, लेकिन कोई नहीं हटा। इस पर मंगलवार को जोन उपायुक्त 9 और राजस्व स्टाफ की निशानदेही पर जे.सी.बी. मशीनों और मजदूरों की मदद से इस बेशकीमती भूमि पर पुनः कब्जा लिया।

स्वास्थ्य सुविधाओं के सुदृढ़ीकरण के लिए लागू होगा रैंकिंग सिस्टम

जयपुर । प्रदेशभर में चिकित्सा एवं स्वास्थ्य सुविधाओं के सुदृढीकरण के लिए सभी जिलों की रैंकिंग की जाएगी। इसके लिए नए सिरे से मानक तैयार किए जाएंगे। विभिन्न योजनाओं एवं स्वास्थ्य कार्यक्रमों के आधार पर निर्धारित मानकों की जिलों को पालना सुनिश्चित करनी होगी। प्रदर्शन औसत स्तर से नीचे होने पर संबंधित अधिकारी एवं कार्मिक की जिम्मेदारी तय की जाएगी।

चिकित्सा एवं स्वास्थ्य विभाग की प्रमुख शासन सचिव गायत्री राठौड़ ने मंगलवार को स्वास्थ्य भवन में आयोजित समीक्षा बैठक में इस सम्बन्ध में निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि सभी जिले स्वास्थ्य सेवाओं की प्रदायगी के स्तर को और बेहतर बनाएं। इसमें किसी भी तरह की लापरवाही बर्दाश्त नहीं की जाएगी।

राठौड़ ने कहा कि सभी जिलों में यह सुनिश्चित किया जाए कि जांच उपकरणों एवं मशीनों का समुचित उपयोग हो। मानव संसाधन की कमी से किसी मशीन का उपयोग नहीं हो पा रहा हो तो तत्काल प्रभाव से कॉन्ट्रैक्ट बेसिस पर नियमानुसार कार्मिक लगाए जाएं। साथ ही, नई मशीनों को तुरंत प्रभाव से इंस्टॉल करवाया जाना भी सुनिश्चित किया जाए। जांच मशीनों का समय-समय पर मेंटीनेंस करवाया जाए। प्रमुख शासन सचिव ने कहा कि आमजन को निःशुल्क उपचार उपलब्ध कराने की दृष्टि से मुख्यमंत्री आयुष्मान आरोग्य योजना महत्वाकांक्षी पहल है। इस योजना का प्रभावी क्रियान्वयन करते हुए अधिकाधिक लोगों को इस योजना से जोड़ें। आयुष्मान कार्ड वितरण के शत-प्रतिशत लक्ष्य हासिल किए जाएं। आयुष्मान आरोग्य शिविरों का नियत दिवस पर आवश्यक रूप से आयोजन हो। शत-प्रतिशत टीकाकरण का लक्ष्य हासिल करने के साथ ही यू विन पोर्टल पर इसका नियमित अपडेशन किया जाए। उन्होंने कहा कि प्रदेश में चिकित्सा तंत्र को मजबूत बनाने एवं उपचार में सुगमता के लिए सभी व्यक्तियों की आभा आईडी बनाई जाए। इस कार्य को प्राथमिकता के साथ पूरा किया जाए। उन्होंने लक्ष्य में पिछड़ने वाले जिलों पर कार्रवाई करने के निर्देश दिए। प्रमुख शासन सचिव ने हर विधानसभा क्षेत्र में मॉडल सीएचसी की घोषणा को मूर्तरूप देने के लिए मिशन मोड में कदम उठाने के लिए कहा।

- इसके लिए नए सिरे से तैयार होंगे मानक, परफॉर्मेंस में पिछड़े तो होगी कार्रवाई

ARBiT it happens here...

Wobbly Wednesday

Did you know Wobbly Wednesday is a special day dedicated to raising awareness of nystagmus? This condition causes people's eyes to move uncontrollably, making things look blurry. Imagine trying to read or recognize a friend's face, but your eyes won't stay still. That's what some people deal with every day. Wobbly Wednesday falls on the first Wednesday of November every year. This day is about raising awareness and understanding for those with nystagmus.

राष्ट्रदूत
WEDNESDAY
06 November 2024
A-B

#SLEEP-ROUTINE

Can the 3-2-1 rule help you sleep better?

Despite our best intentions, getting enough beauty sleep can feel impossible. But what if the popular 3-2-1 rule could help improve the quality of your sleep?

After enjoying a nutritious, timely dinner, completing your evening skincare routine, slipping into the comfiest of pyjamas, and setting your phone aside an hour before bed, do you still find yourself tossing and turning, wide awake?

If so, you're not alone. With stress and overthinking constantly on the mind, restful sleep has become elusive for many of us. Quality rest is vital for physical and mental functioning, as it allows the body and brain to recharge. Conversely, poor sleep hygiene can lead to concentration issues, mood swings, a weakened immune system, and an increased risk of chronic conditions like heart disease, obesity, and diabetes.

To combat this, the internet is abuzz about the *3-2-1 sleep* rule, a simple pre-sleep routine, aimed at improving rest by limiting specific activities and food intake before bed. But can this really help you fall asleep more easily?

What's the 3-2-1 rule?

The *3-2-1 rule* is a practical guideline to help improve sleep quality by controlling what we consume before bedtime.

The rule suggests

- **Three:** Stopping alcohol intake three hours before sleep,
- **Two:** Finishing food two hours before sleep, and
- **One:** Ceasing fluids one hour before bed.

This approach has gained popularity because it's simple to follow and address common habits that can disrupt sleep. It's a straightforward way to reduce sleep disturbances and promote a more restful night.

This is the shorter version of the 10-3-2-1-0 rule, which also includes stopping caffeine intake 10 hours before bed and ensuring that the number of times you hit the snooze button in the morning is zero.

Understanding each Step

1. **3 hours before bed, no alcohol:** Alcohol can interfere with the sleep cycle, particularly the REM (rapid eye movement) phase, which is essential for restorative sleep. By stopping alcohol intake well before bed, you allow your body time to process it, reducing the chances of disrupted sleep.
2. **2 hours before bed, no food:** Eating close to bedtime can lead to digestive discomfort, acid reflux, or even a spike in blood sugar, which may interfere with falling asleep or staying asleep. Allowing your body to digest food before bed can promote a more relaxed, undisturbed rest.
3. **1 hour before bed, no fluids:** Avoiding fluids an hour before bed reduces the likelihood of waking up in the middle of the night to use the bathroom, which can interrupt sleep cycles and make it harder to fall back asleep.

Benefits and Downsides

The 3-2-1 rule can help improve sleep quality, reduce night-time awakenings, promote better digestion, and potentially lead to fewer symptoms of morning grogginess. It may also support better long-term health by helping the body establish a healthy routine, positively impacting energy levels, mood, and focus throughout the day. However, one downside is that it may be restrictive for some people, particularly those with schedules that make it difficult to follow the 3-2-1 timeline. Additionally, people with specific health conditions or dietary needs should consult a healthcare professional before making any major changes.

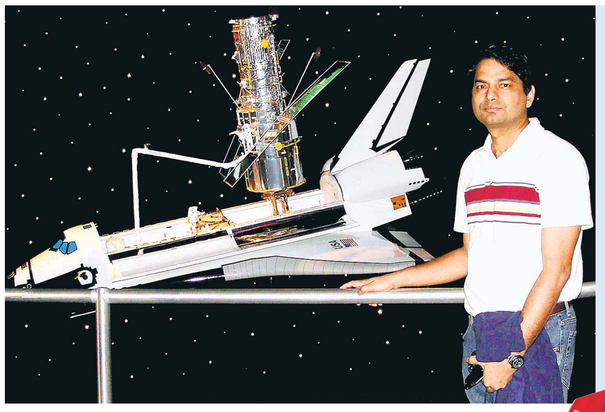

At Kennedy Space Center.

UC Boulder is on the foothills of the Rockies and it gets really cold. It snows a lot. I wasn't at all prepared for the climate. I remember that I had to pick up a job on campus to earn money. I was paid seven dollars an hour for picking up the mail from the PO box of the university and sorting it out for each department. Then, I had to drive around in a van and deliver it to the front desk of each department. So, after the first two classes, I used to deliver the mail. At that time, I used to dress in a shirt, pants, and black leather shoes, which was what I wore in my Indian job. So, I would go around dressed like that in that cold. It was a very different scenario from India, where I, as a railway officer, did not even carry my own file and had an official car to take me everywhere.

Being Valued is what we missed in India!

PART:2

Shailaza Singh
Published Author, Poet and a YouTuber

When you first went to America and then decided to stay there, what was your parents' reaction? Were they supportive?

I think first-generation immigrants always have to face this kind of challenge. Initially, my parents did not support my move. But over time, they have accepted it. I have two sisters who live close to my parents in Delhi and take care of them. I also keep visiting them every couple of years and talk to them frequently.

What was the move to America like?

I did not move to America in a very planned manner. By the time, I decided to move, I had been married and had a one and a half-year-old son but I did not take them along because when I went back to college after eight years, the university said that first, they needed to see my performance, and since I had some experience, they would consider me for some research projects, without which I would not have got any tuition waiver or funding. Moreover, as a government employee, my wages were not enough to save for even one or two semesters' worth of tuition on my own. So, I went there, worked hard, got the research projects and the tuition waiver. It was then I brought my wife and son here.

How was life there?

It was tough. When I went there, I was thirty years old, which is young according to my standards. UC Boulder is on the foothills of the Rockies and it gets really cold. It snows a lot. I wasn't at all prepared for the climate. I remember that I had to pick up a job on campus to earn money. I was paid seven dollars an hour for picking up the mail from the PO box of the university and sorting it out for each department. Then, I had to drive around in a van and deliver it to the front desk of each department. So, after the first two classes, I used to deliver the mail. At that time, I used to dress in a shirt, pants, and black leather shoes, which was what I wore in my Indian job. So, I would go around dressed like that in that cold. It was a very different scenario from India, where I, as a railway officer, did not even carry my own file and had an official car to take me everywhere.

At the demo of Space X Dragon Spacecraft.

#SANJEEV SHARMA

With Hyperloop Swiss team.

How did you start working in Space X?

As I mentioned, I was working in Seagate technologies. There came a time when the computer Hard Disk (HD) drives were replaced by Solid State Drives (SSD) and the industry went through a downturn. I decided to move from Minneapolis to California, primarily to escape the exceedingly cold weather.

I applied to SpaceX on a whim. I did not know much, and at the time, I didn't know anything about aerospace. To my surprise, I got the opportunity to interview and got accepted. I joined SpaceX in 2013, and by that time, they had gained some name by being the only private company to drive a capsule to the International Space Station, dock it and return it with goods. By then, they had a contract with NASA and they were the first private company to pull off such a feat, and it would be able to accomplish that so it had a lot of promise, but it was still a startup with an uncertain future because space business is very risky. I still decided to take a jump, though Seagate people very nicely told me to come back if things didn't work out.

I worked as the dynamics engineer in the structures group, where we were tasked with designing and getting the first stage booster back and reusing it. But I didn't have any experience in space but I was very well-versed in transportation and management of large mechanical structures. I realized that my experience in large structures, weighing tonnes, along with my experience with small hard drives, with spans of millimetres and micrometres came together in Space X. Even to this day, SpaceX has a philosophy of not hiring for experience but hiring for drive and talent. They look at your track record and whatever you have been able to accomplish, especially the hard things. And that's true for entry-level engineers as well as senior engineers with experience. But they don't insist on hey, we have to, you know, design this frame thrust structure of the rocket, do you bring 20 years of thrust structure design experience with you? They don't ask that question. So, that's how I got my foot in the door. And it was a great opportunity to learn and do, but it was a completely unbounded problem. No one in the world, at that time, had recovered a liquid propellant booster after an orbital launch.

There was very little precedent that I could look at, very little research on the project, but as I said, I was working along with a great set of people and learned a lot from that and we kept moving through and I think in the 21st flight, we had already recovered a booster, and then, subsequently from there on, my efforts focused on how to get the maximum kind of reusable life despite the mental fatigue and crack growth in space and manage these things to ensure the reliability of the reuse. Once I had done that, the project was almost complete. So, in 2018, I was looking for a new project. During this time, I decided to move to Northern California since my son was in Berkeley area. So, I started working for Matternet, a company specializing in medical drone deliveries. As the head of engineering, my job was to get them through the process of certification by the Federal Aviation Authority, which is the regulatory body. The certification is a must even if you have to fly a small drone. It was a tough job since it is still not freely permitted in the US to fly an autonomous drone without a human supervisor, or an operator in commercial airspace. Because of those restrictions, it's hard for a company, for a drone startup, to grow at a pace that is required for a startup to grow, to get funded, and to get revenue streams. Our development slowed and then, I told my boss that I needed to look for a different job because my whole focus was to come in and work on something new. In the meantime, in 2022, one of my friends from SpaceX called me back and said that they need people here back in the new Starship project. I had heard about the Starship. I was following every detail of SpaceX because I, kind of, missed the really fast pace and I thought I already had the skills that I needed for the job.

I thought this was one place where I could apply my skills to a new product, which is why I took the jump back again and I'm now back in Los Angeles, working for SpaceX again.

Utah Testing With Drone.

You talk about how engineers are working so hard and coming up with such inventions. Tell me, what will it take for engineers in India to reach a level like you've reached? Probably not going abroad, but in India?

That's a great question. I think before the Industrial Revolution, there was hardly any difference in the technological or scientific understanding of things around the world. India was probably leading the entire world in terms of technology.

With the Industrial Revolution, we saw that there was more and more focus on growth or new technology coming from Europe rather than anywhere else in the world. And it's not because of any other reason, like, people sometimes kind of say, oh, they have more brilliant people over there. Well, people were the same two generations ago, as well. What changes is, I think the principles of intellectual property rights, the principle of capitalism, I grew up in an India, which I regarded as socialist. I think everything was controlled by the government. So, in that scenario, it's very difficult for the individuals who do not have the incentives to make something new and gain from it. So, even if you make something new, you're going to gain nothing. That's what's been holding India and the countries like India back. It's not that they don't have brilliant people. It's the layers that exist in the society of valuing invention, valuing intellectual property rights, valuing, you know, capitalist systems of reward, and accepting failure.

Even in the U.S., I think seven out of ten startups will fail and everyone knows that. But it's not held against you if you have on your resume that you started six startups and all of them failed. It's not at all negative. So, that's one of the fundamental reasons why new growth and development have been held back in India for so long. And now, I see a refreshingly different view from here, in India that we are now seeing a very cultural change, in the society itself. We need to work on that first before we start looking at individuals who become successful out of that. So, you need to make the field fertile before we focus on the crop. The crop is great engineers and great products. The field is to respect intellectual property rights, have a system of reward and risk-reward, and also have, you know, a tolerance to failure and allow people, the resources, to work on new things.

To be continued...

rajeshsharma1049@gmail.com

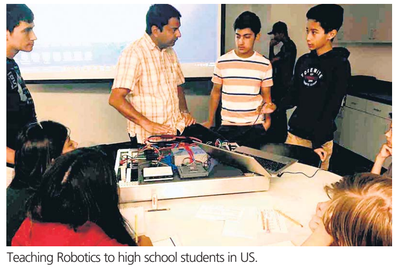

Teaching Robotics to high school students in US.

#TRAVEL

The World's Most Beautiful Cities

Some standards and some surprises, all dazzling destinations to tempt you on your next trip!

How does one narrow down a list of the most beautiful cities? Each city, in every corner of the world, holds its own particular beauty. What sets some cityscapes apart from the rest are their special combinations of the wildness of nature and structure of civilization. Cities possessing natural beauty, marvellous mountains, remarkable rivers, fascinating forests, or captivating coastline, and human-made grandeur, astonishing architecture, graceful green spaces, magnificent monuments, and superb structures, are those that rise above the rest.

These cities are particularly alluring and enchanting. Some that made the list may seem unusual while others will be on every 'beautiful city' list until the end of time. Regardless, each of these cities is a treasure trove of stunning sights.

Lisbon, Portugal

In a city that boasts sunshine 290 days of the year, there's so much beauty to behold, whether it's on the edge of the beach or atop a rolling hill. The hills offer several viewing points called *miradouro* throughout this historic city. Visit its most famous, *Miradouro da Graça*, or the less crowded, yet still radiant, *Miradouro de Monte Agudo* and *Miradouro da Senhora do Monte*.

Sydney, Australia

Between the turquoise oceans and golden sands of *Bondi Beach* to the lush rainforest of the *Ku-ring-gai Chase National Park* and the bush of *Royal National Park*, you're never far from natural beauty in Sydney. One of the best ways to see the sights is to walk-take the *Glebe Foreshore walk*, for example, to enjoy views of Rozelle Bay and Blackwater Bay, the Sydney Harbour, and Anzac Bridge.

For a more leisurely tour, enjoy a ferry or harbour cruise. Climb the *Sydney Harbour Bridge*, the world's largest steel arch, with *BridgeClimb Sydney* for pleasing panoramic views of the city and a breath-taking experience.

Cape Town, South Africa

A port city on South Africa's south-west coast, Cape Town sits beneath Table Mountain, a UNESCO World Heritage Site and one of the New Seven Wonders of the World. Hike or ride a cable car to explore the mountain's flat top and take in the vibrant views of the Mother City, the harbour, and the nearby prison that once held Nelson Mandela.

Kyoto, Japan

Kyoto's exquisite architecture and lush scenery make it a grand city. Located on the island of Honshu, Kyoto is home to many Buddhist temples and Shinto shrines, including the *Kiyomizudera* Temple and *Kinkakuji*. Other jaw dropping sites include the *Togetsukyo bridge* and the *Tenryu-ji temple*. Visit in the spring to see the cherry blossoms or in the fall for the foliage. The *Tango-hanto* Peninsula is a must-visit area, with its white-sand beaches, rejuvenating onsen (hot springs), and superb scenery. One of the most beautiful spots in all of Kyoto is *Arashiyama* in the north-western area, as it's home to a sublime bamboo grove.

Amsterdam, Netherlands

With its historic buildings dating back to the 17th century Golden Age, complex canal system, and charming homes, Amsterdam is a truly stunning city. The ideal way to travel is by bike, but you can also take a boat tour of the historic canal ring, which is a UNESCO World Heritage Site. Walk through *Vondelpark*, the largest city park in Holland's capital. Don't leave Amsterdam without taking a flight with *This Is Holland*. The experience allows you to see Amsterdam from above, over the canals, polders, tulip fields, the *Wadden* Sea, and *Veluwezoom*, the oldest natural park in Holland.

Prague, Czech Republic

As its nickname suggests, the *City of a Hundred Spires* has an abundance of appealing architecture. The best way to experience Prague is on foot. Marvel at the *many towers of Prague*, like the Lesser Town Bridge Towers, the New Mill Water Tower, the Old Town Bridge Tower, and the Old Town Hall Tower, or take steps to the top of one, as each affords a distinctive view of the capital city.

Québec City, Canada

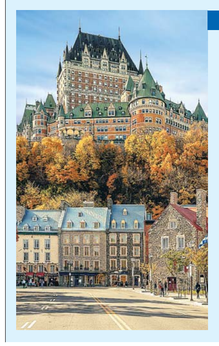

Old Québec is a UNESCO World Heritage site and the only fortified city north of Mexico. Stroll the cobblestone streets to see the beautiful *Basilica Cathedral Notre-Dame de Québec* and take in the ramparts and four gates surrounding the Old City. For views of the *St. Lawrence River* and *Château Frontenac*, walk along the *Dufferin Terrace*. You can also visit the *Fairmont Le Château Frontenac* on Cape Diamond, a Québec City treasure, that's been operational for more than a century. Visit the picturesque streets of Old Port and pick up a boat tour, or explore the *Petit-Champlain* pedestrian street. For natural beauty, visit the *Jacques-Cartier National Park* or the *Montmorency Falls*, a waterfall that is 30 meters higher than Niagara Falls.

Ålesund, Norway

After a fire destroyed most of Ålesund in 1904, the city arose with astounding *Art Nouveau* architecture, with some of the most beautiful examples in all of Europe. Take in the gorgeous city by kayak along the *Brosundet* canal, which winds through the centre of the city. Take a boat along the *Geirangerfjord* or hike to the *Mount Aksla* viewpoint for marvellous views of this unique location.

THE WALL

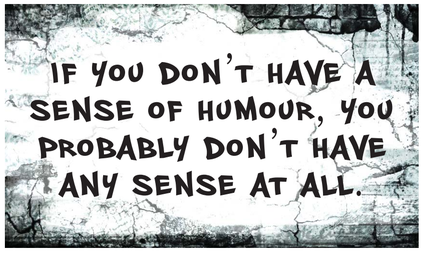

BABY BLUES

By Rick Kirkman & Jerry Scott

ZITS

By Jerry Scott & Jim Borgman

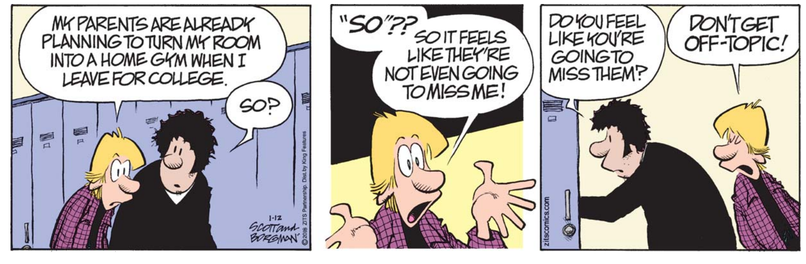

ऑनलाइन सट्टा के खिलाफ कार्रवाई, करोड़ों का हिसाब सहित आठ गिरफ्तार

पुलिस ने आरोपियों को न्यायालय में पेश किया, जिनमें से तीन जनों को रिमांड पर लिया

नवलगढ़, (निसं)। एजीटीएफ व नवलगढ़ पुलिस ने संयुक्त रूप से नवलगढ़ में ऑनलाइन सट्टा कारोबारियों पर बड़ी कार्रवाई की। पुलिस ने आठ जनों को गिरफ्तार किया। पुलिस ने मौके से सट्टा सामग्री के रूप में सात लैपटॉप, 99 मोबाइल फोन, सात माउस, सात की बोर्ड, पांच फोटोन नेट कनेक्ट, आठ लेपटॉप अडेप्टर, आठ चेक बुक-पासबुक, 47 अलग-अलग बैंक के एटीएम कार्ड, एक केलकूलेटर, 13 मोबाइल चार्जर जब्त किए गए। साथ ही ऑनलाइन तीन गेमिंग एप पर आईडी से करोड़ों रुपए का लेखा-जोखा का हिसाब मिला। थानाधिकारी सुगनसिंह ने बताया कि आरोपियों को मंगलवार को न्यायालय में पेश किया गया, जिनमें से तीन जनों विनोद, मुकेश व हेमंत को पीसी रिमांड पर लिया गया है व शेष 5 जनों को जेल भेज दिया गया।

एजीटीएफ व नवलगढ़ पुलिस ने ऑनलाइन सट्टा कारोबारियों पर कार्रवाई कर आठ जनों को गिरफ्तार किया।

- सात लैपटॉप, 99 मोबाइल फोन, आठ लेपटॉप अडेप्टर, आठ चेक बुक-पासबुक, 47 अलग-अलग बैंक के एटीएम कार्ड आदि जब्त किए

एसपी के निर्देशन में अवैध जुआ-सट्टा के खिलाफ जारी अभियान के तहत एजीटीएफ के कांस्टेबल बुलेश कुमार ने फोन पर नवलगढ़ थानाधिकारी सीआई सुगनसिंह को सूचना दी कि कस्बे में मोर गेस्ट हाउस के पीछे वार्ड 42 स्थित आपणी बिल्डिंग के प्रथम तल पर पश्चिम की ओर राजू कोलसिया के फ्लेट में ऑनलाइन अवैध रूप से जुआ की लगाई वाली व खाईवाली की जा रही है। सूचना के बाद सीआई सुगनसिंह के नेतृत्व में नवलगढ़ थाना व एजीटीएफ की 16 सदस्यीय टीम ने फ्लेट पर दबिश दी तो वहां 8 व्यक्ति बैठे हुए लेपटॉप व मोबाइल फोन से ऑनलाइन प्लेटफॉर्म पर जेसीबी ऑनलाइन गेमिंग बुक जिसकी दो सब ब्रांच व जेएलसी लुढ़ो ऑनलाइन गेमिंग चलाकर सट्टा खेलने वाले व्यक्तियों से ऑनलाइन रुपए बैंक खातों में डलवाकर उनके एवज में उनको आईडी के रूप में कोइन डाल रहे थे। मौके पर आरोपियों द्वारा ऑनलाइन सट्टे पर खाईवाली व लगाईवाली दूसरे पक्ष को नाजायज हानि पहुंचाया जाना व इलेक्ट्रीक उपकरणों से धोखाधड़ी करना पाया गया।

पुलिस टीम ने तलाशी में मिले सभी लेपटॉप, मोबाइल व सट्टा उपकरण सामग्री इलेक्टोनिक साक्ष्य के साथ सबूत सहित जब्त किए और मुल्जिमों को गिरफ्तार किया। पुलिस ने राजेश उर्फ राजू कोलसिया पुत्र बनवारीलाल निवासी नवलगढ़, विनोद कुमार पुत्र जगदीशप्रसाद ढाका की ढाणी नवलगढ़, हेमंतप्रसाद पुत्र हरिप्रसाद नवलगढ़, अंकित पुत्र रामावतार हनुमान की ढाणी नवलगढ़, मुकेश पुत्र दुर्गाप्रसाद नवलड़ी, लोकेश कुमार पुत्र शंकरलाल बड़वासी व राहुल शर्मा पुत्र सुशील शर्मा निवासी चूणा चौक नवलगढ़ को गिरफ्तार किया गया है।

पुलिस पर हमला करने वाला एक लाख का इनामी अपराधी गिरफ्तार

कुख्यात आरोपी भजनलाल विश्नोई के विरूद्ध 20 प्रकरण पंजिबद्ध हैं

जालोर, (कासं)। जालोर जिले के भीनमाल पुलिस ने मंगलवार को पुलिस पर जानलेवा हमला करने के मामले में फरार हार्डकोर एक लाख रूपये का इनामी अभियुक्त भजनलाल विश्नोई को प्रॉडेक्शन वांरट पर गिरफ्तार किया।

पुलिस ने बताया कि 21 दिसम्बर 2021 को जरिये मुखबीर सूचना मिली थी कि आरोपी भजनलाल विश्नोई अपने साथियों के साथ गाड़ी लेकर वारदात करने की फिराक में पुनासा में विश्नोई समाज की सांथरी में खड़ा है तथा श्मशान भूमि में जबरदस्ती रास्ता निकालना चाहता है, जिस पर पुलिस थाना झाब को अपने जाब्ता सहित सहायतार्थ के लिए पुनासा पहूंचने के निर्देश देकर मुखबीर की सूचना पर तत्कालिन भीनमाल थानाधिकारी दुलीचंद निरीक्षक पुलिस मय पुलिस जाब्ता के रवाना होकर पुनासा पहुंचे तो थानाधिकारी झाब ने बताया कि भजनलाल वगैराह सांथरी से विश्नोईयों की ढाणी की तरफ गाड़ियां लेकर भाग रहे हैं, हम इनका पीछा कर रहे है, इतने में सामने से पिकअप गाड़ी, सफेद स्कोर्पियों व एक कैम्पर काले रंग की आती दिखाई दी। जिस पर थानाधिकारी द्वारा सफेद पीकअप को रोकने के लिए सरकारी वाहन से रास्ता अवरूद्ध किया तो पिकअप गाड़ी के चालक भजनलाल ने पुलिस जाब्ता को जान से खत्म करने के आशय से पिकअप गाड़ी से सरकारी गाड़ी के सामने टक्कर मारी जिससे सरकारी गाड़ी क्षतिग्रस्त होकर बंद हो गई, तब थानाधिकारी मय जाब्ता ने दूसरे वाहन से पीछा किया व थानाधिकारी झाब ने दूसरे वाहनो का पीछा किया तो स्कोर्पियो चालक जोगाराम ने उनके साथियों के साथ मिलकर थानाधिकारी झाब मय पुलिस जाब्ता को जान से खत्म करने की नियत से हिट फायर किया, मगर झाब पुलिस जाब्ता द्वारा बचाव कर हवाई फायर करने पर जोगाराम के अन्य साथी वहां से भाग गये व पुलिस जाब्ता ने पीछा कर मुलजिम जोगाराम व भागीरथराम को दस्तयाब कर लिया, बाकी लोग घने बबूल देखकर भाग गये।

- वर्ष 2021 में धमकी और मारपीट मामले में मुलजिम को उपकारागृह भीनमाल से गिरफ्तार किया

तत्कालिन भीनमाल थानाधिकारी मय पुलिस जाब्ता ने भजनलाल का पीछा किया मगर भजनलाल अपनी पिकअप गाड़ी को लेकर थानाधिकारी झाब के उपर चढ़ाने की कोशिश कर मौके से भाग गया, जिस पर प्रकरण दर्ज कर अनुसंधान शुरू किया गया। जालोर एसपी ज्ञानचन्द्र यादव जिला पुलिस अधीक्षक जालौर द्वारा उपरोक्त वारदात में शरीक मुलजिमानों को दस्तयाब कर गिरफ्तार करने के निर्देशानुसार मोटाराम गोदारा अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक जालौर एवं अन्नराजसिंह राजपुरोहित वृताधिकारी वृत भीनमाल के सुपरविजन में रामेश्वर भाटी पुलिस निरीक्षक थानाधिकारी भीनमाल के नेतृत्व में गठित पुलिस गनी मोहम्मद उपनिरीक्षक मय पुलिस जाब्ता द्वारा अतिरिक्त मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट भीनमाल से मुलजिम भजनलाल का प्रॉडेक्शन वारंट प्राप्त कर मुलजिम को उपकारागृह भीनमाल से प्राप्त कर गिरफ्तार किया जाकर अनुसंधान किया गया, जिसको आज पुनः न्यायालय में पेश किया जायेगा, मुलजिम कुख्यात आरोपी भजनलाल विश्नोई हार्डकोर है एवं आरोपी के विरूद्ध 20 प्रकरण पंजिबद्ध है।

अनशन पर बैठे युवक की हालत खस्ता, प्रशासन नहीं पहुंचा

भीलवाड़ा, (निसं)। रायपुर पंचायत समिति कार्यालय रायपुर के बाहर बैठे आमरण अनशन पर युवक की हालत बिगड़ती जा रही है लेकिन स्थानीय प्रशासन ने अब तक भी उसकी मांगों पर ध्यान देना तक जरूरी नहीं समझा है।

जानकारी के अनुसार पंचायत समिति रायपुर के सगरेव ग्राम पंचायत में प्रधानमंत्री आवास योजना के अन्तर्गत सत्र 2021 में जिन व्यक्तियों का नाम नीचे पायदान पर था उन नामों में गड़बड़ी कर अपने हितेषी लोगों को फायदा पहुंचाने के कारण सीधे उपर सूची में ले लिया, जैसे देउ कँवर पत्नी दशरथ सिंह बड़वा निवासी सगरेव जो सूची में पहले नम्बर था, उसको सीधे 56 नम्बर पर कर दिया। इसी तरह चौथे नम्बर पर महेन्द्र सिंह बड़वा पिता भंवर सिंह बड़वा का नाम सूची में 4 नम्बर पर था। उसको हटाकर सीधे 36 वें नम्बर कर दिया। इसी क्रम में 5वें नम्बर पर लेहरू गुर्जर पिता देवा गुर्जर का नम्बर था जिसे 45वें नम्बर पर लगा दिया। आमरण अनशन पर बैठे महेन्द्र सिंह बड़वा पिता भंवर सिंह बड़वा ने आरोप लगाते हुए बताया कि पंचायत समिति रायपुर मे कार्यरत कार्मिक व अधिकारियों की मिलीभगत करके प्रधानमंत्री आवास सूची में गड़बड़ी के आरोप लगे हैं। जिसकी शिकायत पूर्व में जिला कलेक्टर के यहां जन सुनवाई में परिवाद दर्ज करवाया चुका है और उपखण्ड अधिकारी, विकास अधिकारी को भी कई बार लिखित में शिकायतें दे चुका है।

- आरोप है कि प्रधानमंत्री आवास योजना के अन्तर्गत सत्र 2021 में जिन व्यक्तियों का नाम नीचे पायदान पर था उन नामों में गड़बड़ी की है

परिवादी का कहना है कि शिकायत पर विकास अधिकारी ने पंचायत समिति रायपुर मे परिवादी को बुलाकर अपनी गलती मानकर परिवादी के नाम मे संशोधित करके प्रधानमन्त्री आवास योजना का लाभ देने की बात कहकर शिकायत का निस्तारण करवा दिया, मगर 3 वर्ष बीत जाने के उपरान्त भी नामों में संशोधन नहीं किया गया जिस पर परिवादी ने आमरण अनशन का फैसला लेते हुए पंचायत समिति रायपुर कार्यालय के बाहर भूखे हड़ताल की शुरुआत की। 24 घंटे से भूखे प्यासे होने कारण परिवादी महेन्द्र सिंह की हालत अब खस्ता होती जा रही है, लेकिन आमरण अनशन पर बैठे युवक की स्थानीय प्रशासनिक अधिकारी सुध तक लेने नहीं पहुंचे है।

हैड कांस्टेबल की संदिग्ध मौत

कोटा, (निसं)। ग्रामीण एडिशनल एसपी ऑफिस में तैनात हेड कॉंस्टेबल ग्रामीण पुलिस लाईन क्वार्टर में अचेत मिला जिसको उपचार के लिए एमबीएस अस्पताल लाया गया, जहां पर चिकित्सक ने जांच के बाद उसे मृत घोषित कर दिया सूचना पर बोरखेड़ा पुलिस मौके पर पहुंची।

बोरखेड़ा थाने के एएसआई करतार सिंह ने बताया कि मृतक हेड कांस्टेबल लालाराम (50) मूल रूप से जोधपुर का रहने वाले थे जो पत्नी और बेटे साथ ग्रामीण पुलिस लाइन में सरकारी क्वार्टर में रह रहे थे। पत्नी और बेटा कोटा से बाहर गए हुए थे। सोमवार शाम को बेटे ने पिता के मोबाइल पर फोन किया। फोन नहीं उठाने पर बेटे ने पड़ोसी मोमराज के मोबाइल पर फोन किया। जिस पर पड़ोसी लालाराम के घर पर पहुंचा जहां पर हेड कांस्टेबल लालाराम अचेत अवस्था मे मिला जिस पर पड़ोसी उसे उपचार के लिए अस्पताल लेकर पहुंचे जहां पर डॉक्टर ने जांच के बाद हेड कांस्टेबल को मृत घोषित कर दिया। इसकी सूचना कोटा से बाहर गए हुये लालाराम के बेटे और पत्नी को दी। मंगलवार को बेटे व पत्नी के कोटा पहुंचने के बाद मृतक के शव का पोस्टमार्टम कराकर शव परिजनों को सौंप दिया। बोरखेड़ा थाने के एएसआई करतार सिंह ने बताया कि पोस्टमार्टम रिपोर्ट आने के बाद ही मृत्यु के कारण का पता चल पाएगा। मामला दर्ज कर जांच की जा रही है।

ई-मित्र चलाने वाले युवक को नकली नोटों के साथ गिरफ्तार किया

जवाजा पुलिस की कार्रवाई, 46 हजार 600 के नकली नोट बरामद किये

अजमेर, (कासं)। ब्यावर जिले के जवाजा थाना क्षेत्र के गांव देवखेड़ा में पुलिस ने बड़ी कार्वाई अंजाम देते हुए नकली नोटों के साथ एक युवक को गिरफ्तार किया है। पकड़े गए आरोपी युवक के कब्जे से पुलिस ने 46 हजार 600 रुपए के नकली नोट जब्त किए हैं। पुलिस आरोपी युवक से गहनता से पूछताछ कर रही है। नकली नोटों के नेटवर्क का पता लगाने में जुटी है।

पुलिस ने ई-मित्र संचालक को नकली नोटों के साथ गिरफ्तार किया।

- पुलिस आरोपी युवक से पूछताछ कर रही है और नकली नोटों के नेटवर्क का पता लगाने में जुटी है

ब्यावर एसपी श्याम सिंह ने वृताधिकारी ब्यावर राजेश कसाना के नेतृत्व में थाना प्रभारी जवाजा महादेव प्रसाद की टीम ने देवखेड़ा गांव में ई-मित्र संचालक के यहां दबिश देकर नकली नोटों खेप पकड़ी है। जवाजा के थानाधिकारी महादेव गुर्जर ने बताया कि चार नवंबर को मुखबिर से सूचना मिली थी कि ग्राम देवखेड़ा निवासी एक युवक जो ई-मित्र चलाता है उसके पास जाली नोट हैं। इस सूचना पर पुलिस टीम ने ई-मित्र संचालक की घेराबंदी कर कार्यवाही की तो युवक के पास जाली नोटों की खेप मिली। जाली नोटों सहित आरोपी सुरेश नाथ को पुलिस ने गिरफ्तार कर नकली नोट जब्त कर लिए। आरोपी सुरेश नाथ से 100 रुपए के 50 तथा 200 रुपए के 208 जाली नोट कुल 46 हजार 500 रुपए के जाली नोट बरामद किए हैं। जाली नोट आरोपी तक कैसे पहुंचे जिसके बारे मे गहनता से पूछताछ की जा रही है व आरोपी के सहयोगियों की गिरफ्तारी हेतु पुलिस टीमें दबिश दे रही है। ई-मित्र संचालक से पूछताछ की जा रही है।

स्कूलों में अर्द्ध वार्षिक परीक्षा की तैयारी शुरू

बीकानेर, (कासं)। प्रदेश भर के सरकारी और प्राइवेट स्कूल में अर्द्धवार्षिक परीक्षा के लिए तैयारी शुरू कर दी है। इस बार राज्य भर में एक ही दिन और एक ही पेपर से परीक्षा होनी है। इसके लिए स्टूडेंट्स की संख्या मांगी जा रही है ताकि पेपर की प्रिंटिंग हो सके। तीन दिन में प्रदेश के सभी सरकारी और प्राइवेट स्कूल को अलग-अलग पोर्टल पर अपने स्टूडेंट्स की संख्या देनी होगी। राज्य सरकार ने एक आदेश जारी करके राज्य के सभी जिलों की समान परीक्षा समितियों को भंग कर दिया था। इसके बाद 'एक दिन-एक पेपर' योजना को लागू किया गया। अब दिसम्बर महीने में अर्द्धवार्षिक परीक्षा होना है। इसके लिए टाइम टेबल अब तक जारी नहीं हुआ है लेकिन दिसम्बर के दूसरे सप्ताह में पेपर शुरू हो सकते हैं। ऐसे में पेपर प्रिंटिंग के लिए निदेशालय स्तर पर निविदा जारी होगी। एक महीने पहले निविदा जारी करने के लिए क्लास वाइज सही संख्या का पता लगाया जा रहा है।

दुष्कर्म के आरोपियों की जमानत खारिज

बौंली-बामनवास, (निसं)। सवाई माधोपुर परिवार व पॉक्सो न्यायालय की विशेष न्यायाधीश मीनाक्षी जैन ने दो अलग-अलग मामलों में नाबालिगों से घर में घुसकर एवं अपहरण कर दुष्कर्म करने के मामले में अजय मीणा एवं दूसरे मामले में विमल योगी का मामले की गंभीरता को देखते हुए जमानत प्रार्थना पत्र खारिज कर दिया।

- दो अलग-अलग मामलों में नाबालिगों से घर में घुसकर एवं अपहरण कर दुष्कर्म करने के मामले में सुनवाई हुई

पीड़िता व राज्य सरकार की ओर से पैरवी करते हुए विशिष्ठ लोक अभियोजक अनिल कुमार जैन ने विशेष न्यायाधीश पोक्सो सुश्री मीनाक्षी जैन को अवगत कराया कि जिले के थाने में नाबालिग पीड़िता के साथ मां ने थाने में पहुंचकर मामला दर्ज कर बताया था कि मैं पीहर गई हुई थी उस समय मेरी नाबालिग 17 साल 5 माह की पुत्री 11 अक्टूबर को रात्रि को करीब 1:50 पर उसे अकेला पाकर अजय मीणाने घर में घुसकर खोटा काम किया। चिल्लाने पर मेरा पति जो कि बाहर सो रहा था अंदर आया तो देखा बेटी रो रही है, आरोपी छुप गया एवं जब उसे पकड़ तो वह धक्का मुक्की करके भाग गया। पुलिस ने मामला दर्ज कर अनुसंधान के बाद आरोपी अजय मीणा को 3 नवंबर को गिरफ्तार कर लिया। तब से ही आरोपी न्यायिक अभिरक्षा में है। दूसरे अन्य मामले में नाबालिग पीड़िता के पिता ने थाने में मामला दर्ज कर बताया कि 6 अक्टूबर की रात्रि को विमलनाथ मेरी नाबालिग पुत्री को बहला फुसलाकर ले गया। नाबालिग पुत्री अपने साथ आधार कार्ड व घर में रखे 20 हजार रुपये भी ले गई है। पुलिस ने मामला दर्ज कर अनुसंधान के बाद आरोपी विमल योगी को 22 अक्टूबर को गिरफ्तार कर न्यायालय में चालान पेश किया तब से ही आरोपी न्यायिक अभिरक्षा में है।

जेईई-एडवांस्ड में अब तीन अटेम्ट, लगातार तीन साल दे सकेंगे परीक्षा

कोटा, (निसं)। देश की सबसे प्रतिष्ठित इंजीनियरिंग प्रवेश परीक्षा जेईई-एडवांस्ड 2025 की वेबसाइट मंगलवार को जारी कर दी गई। इस वर्ष यह परीक्षा आईआईटी कानपुर द्वारा करवाई जाएगी। जारी सूचना में सबसे बड़ा अपडेट ये है कि अब एक विद्यार्थी तीन वर्ष में तीन बार जेईई-एडवांस्ड परीक्षा में शामिल हो सकेगा। अब तक जेईई-एडवांस्ड देने के अवसरों की संख्या अधिकतम दो प्रयास हुआ करती थी। इससे बड़ी संख्या में स्टूडेंट्स को आईआईटी में प्रवेश के लिए एक और प्रयास करने का अवसर मिलेगा।

एलन कॅरियर इंस्टीट्यूट के कॅरियर काउंसलिंग एक्सपर्ट अमित आहूजा ने बताया कि उल्लेखनीय है कि पिछले 14 वर्षों के आंकड़ों के आकलन के आधार पर हर 6 वर्ष बाद रोटेशन में आईआईटी को परीक्षा आयोजन की जिम्मेदारी दी जाती है। वर्ष 2018 में इस परीक्षा के आयोजन की जिम्मेदारी आईआईटी कानपुर को ही मिली थी। दिल्ली, बॉम्बे, खड़गपुर, कानपुर, मद्रास, रूड़की व गुवाहाटी ने अब तक जेईई-एडवांस्ड परीक्षा आयोजित करवाई है। जेईई-मेन के आधार पर श्रेष्ठ 2.50 लाख विद्यार्थी इस परीक्षा में शामिल हो सकेंगे। इसमें 10 प्रतिशत जरनल-ईडब्ल्यूएस, 27 प्रतिशत ओबीसी-एनसीएल, 15 प्रतिशत एससी, 7.5 प्रतिशत एसटी और 40.5 प्रतिशत ओपन कैटेगिरी की सीट्स होंगी। वर्ष 2025 में हो रही जेईई-एडवांस्ड में वर्ष 2023, 2024 और 2025 में कक्षा 12 की परीक्षा देने वाले विद्यार्थी शामिल हो सकेंगे। वर्ष 2022 या इससे पहले 12वीं या इसके समकक्ष परीक्षा उत्तीर्ण करने वाले परीक्षा में शामिल होने योग्य नहीं होंगे। ऐसे विद्यार्थी जिन्होंने पूर्व में आईआईटी में जोसा काउंसलिंग के दौरान प्रवेश ले रखा है वे विद्यार्थी जेईई-एडवांस्ड परीक्षा में शामिल नहीं हो सकेंगे, जबकि जेईई-मेन क्वालीफाई कर एनआईटी में प्रवेश ले चुके विद्यार्थी जेईई-एडवांस्ड परीक्षा दे सकेंगे। जेईई-एडवांस्ड परीक्षा 26 मई या 2 जून 2025 को संभावित है।

- जेईई-एडवांस्ड 2025 की वेबसाइट लांच, आईआईटी कानपुर को मिली जिम्मेदारी
- परीक्षा में पहली बार आयु सीमा तय की गई

आयु सीमा तय-इस वर्ष जेईई-एडवांस्ड परीक्षा के लिए आयु सीमा भी तय की गई है। ऐसे विद्यार्थी जिनका जन्म 1 अक्टूबर 2000 के बाद का है वे ही परीक्षा में शामिल हो सकेंगे। एससी-एसटी, पीडब्ल्यूडी विद्यार्थियों को इस आयु सीमा में 5 वर्ष की रियायत दी गई है, यानी इस वर्ग के विद्यार्थी 1 अक्टूबर 1995 के बाद जन्म लेने वाले विद्यार्थी परीक्षा के योग्य होंगे।

ब्यूटीशियन अनिता हत्याकांड : प्रॉपर्टी डीलर तैयब अंसारी के घर छापा मारा

20 जवानों ने कमला नेहरू नगर में अंसारी के बंगले की तलाश ली और उससे पूछताछ भी की, पुलिस ने लेपटॉप सहित दस्तावेज कब्जे में लिए

जोधपुर, (कासं)। जोधपुर में ब्यूटीशियन हत्याकांड का मुख्य आरोपी गुलामुद्दीन अब भी फरार है। प्रकरण में पुलिस बीते 6 दिन में 24 से ज्यादा लोगों से पूछताछ व बड़ी संख्या मे मोबाइल जब्त कर चुकी है। मंगलवार सुबह पुलिस की टीम ने प्रॉपर्टी डीलर तैयब अंसारी के घर छापेमारी की। करीब 20 जवानों ने कमला नेहरू नगर में अंसारी के बंगले की तलाश ली और उससे पूछताछ भी की। पुलिस ने लेपटॉप सहित कुछ दस्तावेज अपने कब्जे में लिए हैं।

जानकारी के अनुसार अनीता के पति मनमोहन और उसकी सहेली सुमन का ऑडियो सामने आने के बाद तैयब अंसारी का नाम सामने आया था। आरोप है कि अनीता को गायब करने और उसका मर्डर करने में तैयब अंसारी का हाथ हो सकता है। अंसारी पाली, जोधपुर इलाके में प्रॉपर्टी डीलिंग का काम करता है। जानकारी के अनुसार, अंसारी की राजनीतिक दलों से भी अच्छी सांठगांठ है। मारवाड़ के इलाकों में विवादित प्रॉपर्टी को लेकर कई बार तैयब अंसारी का नाम सामने आ चुका है। वहीं, परिजनों ने अनीता का शव अब तक नहीं लिया है। परिवार पांच दिन से सरदारपुरा स्थित तेजा मंदिर पर धरने पर बैठा है। हत्याकांड को लेकर गुलामुद्दीन की पत्नी आबिदा परवीन पुलिस रिमांड पर है। परिजन सरदारपुरा रोड स्थित तेजा मंदिर के बाहर धरने पर बैठे हैं। शहर में अलग-अलग जगह हत्याकांड और मांगों से जुड़े पोस्टर लगाए गए हैं।

- मुख्य आरोपी गुलामुद्दीन अब भी फरार, पुलिस छह दिन में 24 से ज्यादा लोगों से पूछताछ व बड़ी संख्या मे मोबाइल जब्त कर चुकी है

रविवार को परिजनों ने कहा था कि इस हत्याकांड के पीछे लूट का मकसद नहीं है। इसमें कई बड़े खुलासे होने हैं। अनीता के पास कुछ ऐसा था जिसके चलते उसकी हत्या की गई है। धरने पर मौजूद लोगों का कहना था कि जोधपुर पुलिस तो आसाराम जैसे बड़े आरोपी को गिरफ्तार कर लाई थी। सामान्य सा रफू का काम करने वाला (गुलामुद्दीन) उनकी पहुंच से बाहर कैसे हो सकता है। ये कोई बड़ा षड्यंत्र है। धरने पर मौजूद परिजनों ने पांच मांगें रखी है, इसमें 1 करोड़ का मुआवजा, सरकारी नौकरी, मुख्य आरोपी की गिरफ्तारी, हाईकोर्ट के रिटायर्ड जज से मामले की जांच और जिम्मेदार अधिकारियों को पुलिस कमिश्नरेट से हटाने की मांग की है।

महिला के गले से सोने की चेन तोड़ी

अजमेर, (कासं)। शहर में इन दिनों बदमाशों के हौसले बुलंद है, तो वहीं अब महिलाएं अपने घरों से बाहर निकलने में कतराने लगी है। शहर के क्रिश्चियन गंज थाना क्षेत्र में रहने वाली एक महिला के साथ चैन स्नेचिंग की वारदात सामने आई है। मोटरसाइकिल पर सवार दो बदमाश महिला पर झपट्टा मारकर चेन तोड़कर भाग गए। मामले में महिला के पति ने थाने में शिकायत दी है। पुलिस ने मुकदमा दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। क्रिश्चियन गंज थाना पुलिस के मुताबिक फ्लोरेंस बिल्डिंग कोटड़ा निवासी महेश निहलानी ने थाने पर मुकदमा दर्ज करवाया है। पीड़ित ने बताया कि वह अपनी पत्नी भाविका के साथ जनता कॉलोनी की तरफ जा रहा था। उसकी पत्नी ने गले में चेन पहन रखी थी। महेश ने बताया कि शुभम हॉस्पिटल के पास अचानक मोटरसाइकिल पर दो बदमाश आए और पत्नी के गले पर झपट्टा मार दिया। बाद में सोने की चेन तोड़कर भाग गए। महेश की रिपोर्ट पर पुलिस ने मुकदमा दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

मकान का छज्जा भरभरा कर गिरा, दो घायल

भरतपुर, (निसं)। मथुरा गेट थाना क्षेत्र में चौबुर्जा के समीप एक दुकान की पहली मंजिल का छज्जा भरभराकर नीचे आ गिरा। अचानक छज्जा गिरने से दीवार से झालर उतार रहा एक इलेक्ट्रीशियन मलबे के साथ नीचे आ गिरा। वहीं छज्जे के नीचे काम कर रहा एक दर्जी बाल-बाल बच गया। उसकी दुकान पर खड़ा एक युवक मलबा गिरने से घायल हो गया।

स्थानीय निवासियों ने बताया कि मार्केट में कपड़े की दुकान चलाने वाले बंटू ने पहली मंजिल पर दीपावली पर रोशनी के लिए झालर लगाई थी। मंगलवार को को झालर उतारने के लिए रसाला मौहल्ले से एक इलेक्ट्रीशियन भी बुलाया था। इलेक्ट्रीशियन झालर उतार ही रहा था कि इसी दौरान पहली मंजिला का छज्जा भरभरा कर दुकान के टिनशेड पर गिरा। मलबे के साथ इलेक्ट्रीशियन भी सड़क पर आ गिरा। उसी वक्त कपड़े की दुकान के बाहर दर्जी मोहरसिंह सिलाई का कार्य कर रहा था और एक ग्राहक भी वहीं खड़ा था। टिनशेड पर मलबे के गिरने की आवाज सुनते ही दर्जी तो मशीन छोड़कर अलग हो गया लेकिन ग्राहक मलबे की चपेट में आ गया। इस घटना में इलेक्ट्रीशियन व सड़क पर खड़ा ग्राहक चोटिल हो गया। अचानक हुई घटना से बाजार में हडकंप मच गया, जिसने भी इस घटना को देखा तुरन्त मलबे से दोनों घायलों को हटाया गया। हालांकि राहत की बात यह रही कि किसी प्रकार की जनहानि नहीं हुई। छज्जे के नीचे बैठे दर्जी और ग्राहक की जान भी मलबा पहले टिनशेड पर गिरने से बच गई, जिसके बाद नगर निगम की जेसीबी की मदद से मलबे को सडक से हटाया गया।

- नगर निगम की जेसीबी की मदद से मलबे को सड़क से हटाया गया

रेलवे कर्मचारी की संदिग्ध मौत

कोटा, (निसं)। रेलवे कर्मचारी की मंगलवार तड़के संदिग्ध मौत हो गई मृतक रेलवे वर्कशॉप में कार्यरत था। रेलवे कॉलोनी थाने के एएसआई जगदीश प्रसाद ने बताया कि पूनम कॉलोनी निवासी रामेश्वर प्रसाद (56) परिवार के साथ घर पर सो रहा था। मंगलवार तड़के चार बजे करीब रामेश्वर पलंग से नीचे गिर गया। रामेश्वर के पलंग से नीचे गिरने की आवाज सुनकर उसकी पत्नी और बेटा जाग गऐं जिस पर रामेश्वर ने उनसे कहा कि मैंने कोई गोली खाई थी जिससे उसको बेचैनी हो रही है पत्नी और बेटा रामेश्वर को लेकर कोटा के निजी अस्पताल पहुंचे जहां इलाज के दौरान रामेश्वर की मौत हो गई। मृतक के शव को एमबीएस अस्पताल के पोस्टमार्टम रूम लाया गया। रेलवे कॉलोनी थाने के एएसआई जगदीश प्रसाद ने बताया कि सूचना पर अस्पताल पहुंचे और मृतक के शव का पोस्टमार्टम कराकर शव परिजनों को सौंप दिया मामला दर्ज कर मामले की जांच की जा रही है।

प्रथम चरण के दो दिन में 215 मतदाताओं ने किया अपने मताधिकार का उपयोग

- होम वोटिंग के दूसरे दिन 83 वरिष्ठ नागरिकों एवं दिव्यांगजनों ने किया मतदान

अलवर, । रामगढ विधानसभा उप चुनाव के तहत आज प्रथम चरण की होम वोटिंग के दूसरे दिन आज मतदान केंद्र पर पहुंचने में असक्षम कुल 83 मतदाताओं ने अपने मताधिकार का उपयोग किया जिसमें 45 वरिष्ठ नागरिकों (85 वर्ष से अधिक आयुवर्ग) एवं 38 विशेष योग्यजन श्रेणी के मतदाता है। जिला निर्वाचन अधिकारी डॉ. आर्तिका शुक्ला ने बताया कि भारत निर्वाचन आयोग के निर्देशानुसार रामगढ विधानसभा उप चुनाव 2024 में होम वोटिंग के लिए 222 मतदाता चिन्हित किए गए जिनमें से प्रथम चरण के तहत दो दिनों में कुल 215 मतदाताओं ने अपने मताधिकार का उपयोग किया। पहले दिन सोमवार को 132 मतदाताओं ने अपने मताधिकार का उपयोग घर पर ही किया तथा आज 83 मतदाताओं ने अपने मताधिकार का उपयोग किया। उन्होंने बताया कि प्रथम चरण में किसी कारणवश मतदान से वंचित रहने वाले मतदाताओं को 9 व 10 नवम्बर को मतदान कराया जाएगा।

मतदाताओं ने किए अनुभव साझा रामगढ विधानसभा उप चुनाव के तहत होम वोटिंग के प्रति दूसरे दिन मंगलवार को वरिष्ठजन और दिव्यांग मतदाताओं ने मतदान कर अपने मताधिकार का उपयोग कर होम वोटिंग की प्रक्रिया की सराहना की। मतदाता रमेश चंद एवं देवाराम ने बताया कि वह शारीरिक परेशानी के कारण मतदान केंद्र पर पहुंचकर मतदान करने में असमर्थ महसूस कर रहे थे किंतु होम वोटिंग के माध्यम से उन्होंने आज मतदान कर बहुत खुशी हो रही है। इसी प्रकार विजय सिंह एवं अन्य मतदाताओं ने होम वोटिंग के माध्यम से अपने मताधिकार का उपयोग कर कहा कि भारत निर्वाचन आयोग द्वारा होम वोटिंग के माध्यम से घर बैठे ही मतदान करने की अच्छी सुविधा प्रदान की गई है, यह एक सराहनीय कदम है।

होम वोटिंग के दूसरे दिन आज मतदान केंद्र पर पहुंचने में असक्षम कुल 83 मतदाताओं ने अपने मताधिकार का उपयोग किया

19 परिवारो को किया विस्थापित

मालपुरा (निस) नगरपालिका शहरी क्षैत्र मे चलाये जा रहै अतिक्रमण हटाओं अभियान के अन्तर्गत मंगलवार को दुसरे दिन भी शहर मे कार्यवाही जारी रही। कृषि मंडी के सामने फुटपाथ पर लम्बे समय से रह रहै 19 छाबडी वाले परिवारो को फुटपाथ खाली करवा सदरपुरा रोड पर आरक्षित महाराणा प्रताप आवासीय कॉलोनी मे विस्थापित किया गया।

उप चुनाव के मतदान के लिए एरिया मजिस्ट्रेट नियुक्त

अलवर ।जिला निर्वाचन अधिकारी डॉ. आर्तिका शुक्ला ने बताया कि रामगढ विधानसभा उप चुनाव के अन्तर्गत मतदान दिवस 13 नवम्बर को मतदान के दौरान स्वतंत्र व निष्पक्ष चुनाव कार्य सम्पादित कराने एवं कानून व्यवस्था सुनिश्चित करने हेतु एरिया मजिस्ट्रेट नियुक्त किए गए हैं।

जिला निर्वाचन अधिकारी द्वारा जारी आदेशानुसार गढी, नीकच, मुबारिकपुर, डाबरी, नौगांवा (सैक्टर क्रमांक 1 से 5 तक) के लिए उपखण्ड मजिस्ट्रेट अलवर प्रतीक जुईकर को एरिया मजिस्ट्रेट नियुक्त किया गया है।

इसी प्रकार रसगण, बीजवा, अलावडा, तिलवाड, चिडवाई के लिए अतिरिक्त जिला मजिस्ट्रेट खैरथल शिवपाल जाट , दोहली, रामगढ, साहडोली, केसरोली, पिपरोली के लिए नगर विकास न्यास सचिव सुधीगदे स्नेहल नाना, सैंथली, बगड राजपूत, बाम्बोली, खूटेटाकलां के लिए अतिरिक्त जिला मजिस्ट्रेट भिवाडी अश्विनी के. पवांर, घाट, रोणपुर, गण्डूरा, बडौदामेव के लिए अतिरिक्त जिला मजिस्ट्रेट द्वितीय अलवर योगेश कुमार डागुर एवं नसवारी, गोविन्दगढ, फाहरी, न्याणा, भैंसडावत के लिए उपखण्ड मजिस्ट्रेट लक्ष्मणगढ मोहकम सिंह सिनसिनवार को नियुक्त किया

तीये की बैठक

अत्यन्त दुःख के साथ सूचित किया जाता है कि मेरी धर्मपत्नी श्रीमती सुमित्रा देवी का स्वर्गवास दिनांक 04.11.2024 को हो गया है। तीये की बैठक दिनांक 06.11.2024 को सायं 4 से 5 बजे तक खण्डेलवाल सेवा सदन, जनता कॉलोनी, जयपुर पर होगी। शोकाकुल: रामजीलाल जांगिड-से.नि. कार्यालय सहायक, राजस्थान परिवहन निगम, झालाना डूंगरी आगार, जयपुर (पति), नितिन-सीमा (पुत्र-पुत्रवधु), रमेश, सुरेश, बृजेश, राजेन्द्र (भतीजे), सरिता (पुत्री), डिम्पल-नरेन्द्र (पुत्री-दामाद), तनिष्क (दोहिता) एवं समस्त रावत परिवार 9414386586, 9414042873

आम सूचना

मैं कृष्ण मुरारी पारीक पुत्र स्वर्गीय श्री राम गोपाल पारीक उम्र- 71 वर्ष, पता- प्लाट नम्बर- 32 डी, सुर्य नगर प्रथम, नाडी का फाटक, बैनाड़ रोड का निवासी हूं। यह कि मैं मेरे पुत्र विकास पारीक को मेरी समस्त चल-अचल संपत्ति व सम्पूर्ण जायदाद से पूर्ण रूप से बेदखल कर रहा हु। यह कि भविष्य में मेरी किसी भी चल-अचल संपति पर मेरे पुत्र विकास पारीक का कोई अधिकार नही हैं, ना ही विकास पारीक की पत्नी सविता पारीक व इनके और कोई भी वारिस्तान किसी प्रकार के अधिकारी है।

जरिये अधिवक्ता एडवोकेट भास्कर पारीक

आम सूचना सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि भागीदारी फर्म मैसर्स देव टैक्नोक्राट्स, डी-08 एवं 09, प्रथम तल, आर टैक कैपिटल मॉल, महल रोड, एपरेल पार्क, जगतपुरा, जयपुर पंजीयन संख्या RF/JPU/2022/3399 के भागीदारों द्वारा दिनांक 18.09.2024 से फर्म से पार्टनर अभिमन्यू कसाना पुत्र श्री एच आर कसाना रिटायर हो रहे है। सूचित रहे। यदि किसी को आपत्ति हो तो 07 दिवस में रजिस्ट्रार ऑफ फर्म्स जिला उद्योग केन्द्र जयपुर (शहर) में आपत्ति दर्ज करावे।

कृते मैसर्स देव टैक्नोक्राट्स, (प्रशान्त सिंह पोसवाल) भागीदार (अभिमन्यु कसाना) भागीदार (एच.आर. कसाना) भागीदार

आम सूचना

हर आम व खास को सूचित किया जाता है कि मेरे अभिभाष्य मोहम्मद रफीक पुत्र श्री गफूर भाई, पता-मकान नं. 121, महारानी जी की छतरी, पुराना रामगढ रोड, डी.बी.एन. स्कूल के सामने, जयपुर के पुत्र मोहम्मद इरफान मेरे अभिभाष्य के कहने, सुनने में नहीं है तथा मेरे अभिभाष्य के साथ खराब आचरण करता है, इस कारण से मेरे अभिभाष्य ने अपने पुत्र मोहम्मद इरफान को अपनी समस्त प्रकार की चल एवं अचल सम्पत्ति एवं परिवार से बेदखल कर दिया है। मेरे पुत्र मोहम्मद इरफान से कोई भी व्यक्ति/संस्था/फर्म किसी भी प्रकार का कोई संव्यवहार करता है तो उसकी जिम्मेदारी उनकी स्वयं की होगी, इसमें मेरे अभिभाष्य की कोई जिम्मेदारी नहीं होगी।

दिनांक-04.11.2024

(अनिल कुमार शर्मा) एडवोकेट मो. 9875199563

नम्बर मिलाइए 9587884433

सिर्फ एक फोन कॉल पर विज्ञापन घर बैठे बुक करायें।

परिवहन मंत्री को लिखा पत्र

मनोहरपुर । कांग्रेस विधायक मनीष यादव ने शाहपुरा यूनिट को प्रशासकीय एंव वित्तीय शक्तियां प्रदान करने के संबंध में प्रदेश के परिवहन एवं सड़क सुरक्षा मंत्री जी को पत्र लिखकर अवगत करवाया कि दिनांक 25 अक्टूबर 2016 की अनुपालना में प्रशासकीय एंव वित्तीय शक्तियां प्रदान की गई थी, परन्तु राजस्थान परिवहन निगम मु. जयपुर के आदेश द्वारा प्रत्याहरित कर कोटपुतली आगार को प्रदान कर दी गई थी। गोरतलब है कि विधायक ने इससे पहले भी विधानसभा के द्वितीय सत्र में तारांकित प्रश्न के मध्यम से सदन में मुद्दा उठाया था। विधायक ने कहा कि वर्तमान में यूनिट के समस्त प्रशासकीय व वित्तीय दायित्व कोटपुतली आगार के अधीन संचालित हैं।

विधायक ने कहा कि निगम के कार्मिको द्वारा भी अवगत करवाया गया है, कि यूनिट में कार्यरत कर्मचारियों की निजी पत्रावलियां शाहपुरा यूनिट में है, तथा अनुशासनात्मक पत्रावलियां कोटपुतली आगार में है, जिससें कार्मिकों के चयनित वेतनमान, सेवानिवृति से संबधित कार्य व अन्य कार्यों के लिए कर्मचारियों को कोटपुतली जाना पडता है।

अस्पतालों में चिकित्सक की कमी है तो दूसरे अस्पतालों से लगाकर दूर करें : कलेक्टर

- मौसमी बीमारियों की रोकथाम व आम जन के इलाज के लिए जिला कलेक्टर चिकित्सा अधिकारी को दिए निर्देश

खैरथल। खैरथल तिजारा जिला सचिवालय पर मंगलवार को जिला कलेक्टर किशोर कुमार की अध्यक्षता में डीएचएस एवं बकाया पेंशन प्रकरण मौसमी बीमारियों की रोकथाम सहित बिजली पानी आदि सार्वजनिक सेवाओं को लेकर समीक्षा बैठक बैठक हुई। बैठक में जिला कलेक्टर नवाचार स्वस्थ जीवन शैली, तंबाकू फ्री अभियान सीएससी/ पीएससी हेतु भूमि आवंटन, बिजली पानी सहित सरकार द्वारा चलाई जा रही विभिन्न योजनाओं की समीक्षा की और अधिकारियों को बीमारियों की रोकथाम सहित आमजन से जुड़ी सुविधाओं को लेकर आवश्यक दिशा निर्देश दिए।

बैठक में जिला कलेक्टर ने चिकित्सा अधिकारी को आयुष्मान आरोग्य योजना के तहत दी जा रही दवाइयां की अस्पताल पर उपलब्धता सुनिश्चित करने के निर्देश दिए तथा उन्होंने कहा कि अस्पताल स्तर के अनुसार सभी दवाइयां उपलब्ध हो एवं एक्सपायरी दवाइयां का नियमित निस्तारण किया जाए। कलेक्टर सभी अस्पतालों में कार्यरत कर्मचारियों की संख्या की जानकारी लेते हुए निर्देश दिए जिन अस्पतालों में चिकित्सक की कमी है उन अस्पतालों में दूसरे अस्पताल से चिकित्सकों के दिन सुनिश्चित कर लगाया जाए।

सरकारी अस्पतालों में संस्थागत प्रसव संख्या कम होने पर ब्लॉक सीएमएचओ को संस्थागत प्रसव संख्या बढ़ाने व अस्पतालों को समयबद्ध तरीके से संचालित करने के निर्देश दिए। उन्होंने जिले में डेंगू सहित अन्य बीमारीयों की संख्या की जानकारी प्राप्त कर आवश्यक दिशा निर्देश दिए। उन्होंने चलाये जा रहे नवाचार स्वस्थ जीवन शैली के तहत स्कूल के बच्चों को विद्यालय में कैंप लगाकर नवाचार से जोड़ने के निर्देश दिए ताकि बच्चे भी स्वास्थ्य के प्रति जागरूक हो सके।

खैरथल तिजारा जिला सचिवालय पर साप्ताहिक समीक्षा बैठक में अधिकारियों को निर्देशित करते जिला कलेक्टर किशोर कुमार।

इसके अलावा साप्ताहिक समीक्षा बैठक में जिला कलेक्टर ने सम्भावित मौसमी बीमारियों की रोकथाम, बिजली, पानी, सार्वजनिक आवश्यक सेवाओं की सूचारू रूप से आपूर्ति एवं समीक्षा बैठकों की अनुपालना रिपोर्ट, सम्पर्क पोर्टल, सीएमओ आदि की वर्तमान स्थिति एवं प्रगति की विभागवार समीक्षा की और अधिकारियों को समय पर कार्य पूरा करने व आमजन की समस्याओं का तुरंत निराकरण के लिए निर्देशित किया। समीक्षा बैठक में जिला कलेक्टर ने जिला रसद अधिकारी को आधार एवं एलपीजी आईडी सीडिंग के सुचारू संचालन हेतु आवश्यक दिशा निर्देश दिए।

मतदान केन्द्रों पर विद्युत व्यवस्था, पेयजल व्यवस्था के बारे में जानकारी ली

दौसा। जिला निर्वाचन अधिकारी देवेंद्र कुमार एवं जिला पुलिस अधीक्षक रंजीता शर्मा ने मंगलवार को दौसा विधानसभा क्षेत्र के रजवास, खानवास, जैलमपुरा, पीपल्या चैनपुरा, भूडला-भूतपुरिया, देवरी, खानपुरा, गांवली आदि गांवों में मतदान केंद्रों का निरीक्षण कर सुगम मतदान के लिए आवश्यक व्यवस्थाओं का अवलोकन किया।

जिला निर्वाचन अधिकारी देवेंद्र कुमार ने बूथ लेवल अधिकारियों से मतदान केन्द्रों पर निर्बाध विद्युत व्यवस्था, रोशनी, मतदाताओं के लिए पेयजल व्यवस्था, शौचालय एवं दिव्यांग वोटर्स के लिए रैम्प व्यवस्था के बारे में जानकारी ली।

विधानसभा उप चुनाव में 13 नवम्बर को मतदान कर लोकतंत्र में अपनी भागीदारी अवश्य निभाएं। उन्होंने वहां मौजूद आमजन से संवाद कर अधिक से अधिक संख्या में मतदान करने का आ ान किया। जिला पुलिस अधीक्षक रंजीता शर्मा ने कानून व्यवस्था से संबंधित पहलुओ पर चर्चा करते हुए विधानसभा उप चुनाव में स्वतन्त्र, भयमुक्त और निष्पक्ष मतदान के लिए सुरक्षा व्यवस्था के पुख्ता प्रबंध करने के निर्देश दिए। इस अवसर पर उपखण्ड अधिकारी लवाण रविकान्त सिंह, पुलिस उपाधीक्षक चारुल गुप्ता, विकास अधिकारी लवाण, तहसीलदार धीरेन्द्र कर्दम सहित संबंधित अधिकारी, बूथ लेवल अधिकारी व कार्मिक उपस्थित रहे।

मतदान दलो को अवलोकन करते जिला निर्वाचन अधिकारी देवेन्द्र कुमार, पुलिस अधीक्षक रंजीता शर्मा।

सिलेंडर को 450 रुपए में उपलब्ध कराने की योजना का विस्तार किया

पावटा। रसोई गैस सिलेंडर को 450 रुपए में उपलब्ध कराने की योजना का विस्तार किया गया है। प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना और बीपीएल परिवारों को मिलने वाला लाभ खाद्य सुरक्षा के चयनितों को भी बजट घोषणा2024-25के अनुसार दिया जाएगा। खाद्य विभाग ही ओर रसोई गैस सिलेंडर सब्सिडी योजना का खाद्य सुरक्षा लाभार्थियों को लाभ देने के लिए सीडिंग अभियान शुरू किया गया।

इसमें राशन डीलर को गेहूं वितरण से पहले एलपीजी की 17 अंकों की आईडी की सीडिंग करनी होगी। रसोई गैस सिलेंडर को 450 रुपए में उपलब्ध कराने की योजना का विस्तार किया गया है। प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना और बीपीएल परिवारों को मिलने वाला लाभ खाद्य सुरक्षा के चयनितों को भी बजट घोषणा2024-25के अनुसार दिया जाएगा। इस योजना का लाभ सितंबर 2024 से सभी एनएफएसए पात्र परिवारों को दिया जाएगा।

ग्रामीणों ने की मतदान के बहिष्कार की घोषणा, रास्ते की समस्या दूर न होने से नाराज

उनियारा। देवली उनियारा विधानसभा के मोहम्मदपुरा ग्राम पंचायत के अमीरगंज गांव के ग्रामीणों ने मंगलवार को मंदिर के पास पास प्रदर्शन और नारेबाजी करते हुए मतदान के बहिष्कार की घोषणा की।

ग्रामीणों ने इस संबंध में गांव में मतदाताओ को मतदाता पर्चियां वितरित करने आये बीएलओ श्योनारायण गर्जर द्वारा मतदाताओं ने मतदाता की पर्चियां भी नहीं ली गई है।जिससे बीएलओ को मतदाता की पर्चियां बिना वितरण किए वापिस लोटना पड़ा बीएलओ श्योनारायण गुर्जर ने जिसकी सुचना हल्का पटवारी,अजय कुमार बैरवा,सुपरवाइजर ओमप्रकाश चोपदार को दी गई।ग्रामीणों ने बताया है कि मोहम्मदपुरा ग्राम पंचायत के अमीरगंज गांव के लोगों का आने जाने का यही एक मात्र रास्ता है।बरसात के दिनों में या हल्की बारिश होने के बाद रास्ते में पानी भर जाता है।मतदान का बहिष्कार करने से संबंधित में ग्रामीणों का कहना है कि अमीरगंज गांव से ग्राम पंचायत मोहम्मदपुरा मुख्यालय ओर कोटड़ी चोराहा आने वाले लोगों को बरसात के महीने में काफी दिक्कत होती है।आने जाने के लिए मात्र यही एक रास्ता है।इसकी शिकायत कई बार सांसद,विधायक और उनियारा एसडीएम से की गई,लेकिन समस्या का समाधान नहीं हुआ।ग्रामीणों ने कहा कि जब तक समस्या का समाधान नहीं होता है,तब तक वह मतदान करने नहीं जाएंगे।देवली उनियारा विधानसभा के गांव अमीरगंज गांव के रास्ते की मांग को लेकर ग्रामीणों ने उपचुनाव के बहिष्कार का एलान कर दिया है।

अमीरगंज गांव के ग्रामीणों ने मंदिर के पास पास प्रदर्शन और नारेबाजी करते हुए मतदान के बहिष्कार की घोषणा की।

राजस्थान आवासन मंडल, वृत्त- प्रथम, प्रताप नगर, जयपुर
क्रमांक 4597 **जाहिर आम सूचना** दिनांक 05.11.2024

[illegible]

सम्पदा प्रबंधक वृत्त- प्रथम, राज. आवा. मंडल, जयपुर

MUNICIPAL CORPORATION (GREATER), JAIPUR
(Pandit Deendayal Uppadhyay Bhawan Lalkothi Tonk Jaipur 302015)
No. F-6(DCR-FIRST (J.S)/RO.L.C.N.N.J/2024/358,359 Date : 05-11-2024

PUBLIC NOTICE

The licensee M/s/ Indus Tower Limited Jaipur (Particulars of Licensee) has submitted application in this office for granting permission for erection/ installation of telecom tower aboveground telegraph infrastructure on the land or building or location mentioned below :-

Sr. No.	Site ID	Address
1	IN 3304244	Row, Road Side Area, Near Ramdas Park, Block-A, Opp. St. Edmunds, Ward No.131, Malviya Nagar, Jaipur
2	IN 3276351	Row, Road Side Area, Near Mahatma Gandhi Govt. School, Govindpura, Sirsi Road, Kalwar Road, Govindpura, Ward No.46, Jaipur
3	IN 3237287	Row, Road Side Area, Near Govt. Primary School, Uddak Papad, Malhotra Nagar, Near VIKI, Ward No.04, Jaipur

Therefore, it is hereby informed to all concerned that if, any body has any objection or suggestion on granting permission for installation or establishment of above mentioned telecom infrastructure on the land/location above, he may submit objection or suggestion along with supporting documents before the undersigned during office hours on any working day within 7 days of the publication of this notice.

In absence of any objection/ suggestion within above stipulated time it any be deemed that nobody has objection/suggestion and matter will be disposed off accordingly.

Deputy Commissioner (Revenue-I) Municipal Corporation (Greater), Jaipur

उद्घोषणा (इश्तिहार) न्यायालय (राज.)

व्यवहार मिश्रित (मुतफरिक) वाद सं. 342/24

विषय- उत्तराधिकार प्रमाण-पत्र प्रोबेट, लेटर ऑफ एडमिनिस्ट्रेशन प्राप्त करने हेतु प्रार्थना-पत्र। प्रार्थी नाम (1) कविश मीणा पुत्र स्व. राजेश मीणा (2) यशस्वी मीणा पुत्री स्व. राजेश मीणा नाबालिग जरिये प्राकृतिक संरक्षिका माता रविना मीणा पत्नि स्व. राजेश मीणा (3) रविना मीणा पत्नि स्व. राजेश मीणा निवासी 68, मंगला मार्ग, ब्रह्मपुरी, जयपुर हाल धाणी बालाका की धाम, नटाटा तह. जमवारामगढ जिला जयपुर

मृतक राजेश मीणा की सम्पत्ति के विषय में।

पेशी दिनांक- 07.11.2024

सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि उपरोक्त प्रार्थी/प्रार्थीगण ने इस न्यायालय में इस आशय का प्रार्थना पत्र प्रस्तुत किया है कि मृतक, नाम राजेश मीणा पुत्र रामरतन मीणा जाति मीणा निवासी 68, मंगला मार्ग, ब्रह्मपुरी, जयपुर का उत्तराधिकारी स्वीकार कर उसके पक्ष में उत्तराधिकार प्रमाण पत्र, प्रोबेट, लेटर ऑफ एडमिनिस्ट्रेशन, प्रदान किया जावे।

अतः उक्त प्रार्थना-पत्र की स्वीकृति में यदि किसी व्यक्ति को कोई आपत्ति हो तो वह इस न्यायालय में दिनांक 07 माह 11 सन् 2024 को न्यायालय में उपस्थित होकर अपनी आपत्ति प्रमाण सहित प्रस्तुत करें। उक्त दिवस के पश्चात् कोई आपत्ति मान्य नहीं होगी।

आज दिनांक 26 माह 09 सन् 2024 को मेरे हस्ताक्षर एवं न्यायालय मुद्रांकन से जारी किया गया।

मोहर

आज्ञा से
वरिष्ठ मुंसरिम
जिला एवं सैशन न्यायालय
जयपुर महानगर-द्वितीय

आम सूचना

यह कि मेरे अभिभाष्य धन्नालाल चौधरी जरिये संयोजक प्रेमनगर गृह निर्माण सहकारी समिति लिमिटेड रजि० नं. 2625/एल जयपुर, राजस्थान की ओर से सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि ग्राम नरोत्तमपुरा तहसील सांगानेर जयपुर की योजना बालाजी एन्क्लेव में भूखण्ड संख्या 40 व 41 क्षेत्रफल 100-100 वर्गगज को मधु शर्मा पत्नि श्री बजरंग शर्मा पता - मकान नम्बर 87, शिव शक्ति नगर ए खेजडो का बास जयपुर को आवंटित किया गया था जिसको मेरे अभिभाष्य ने मधु शर्मा व उसके पति बजरंगलाल शर्मा के द्वारा किये गये आपराधिक कपटपूर्ण षडयंत्र के कारण उक्त दोनो भूखण्डों के आवंटनो को निरस्त कर दिया दोनो भूखण्डों को लेकर की जाने वाली सिविल व फौजदारी कार्यवाही शून्य व निष्प्रभावी होगी, जो भी कोई व्यक्ति, संस्था, उक्त निरस्तशुदा दोनो आवंटन पत्रों से उक्त दोनो भूखण्डों की खरीद फरोक्त, लेन देन, प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से कोई भी संव्यवहार कर उनका दुरुपयोग करते है जिससे मेरे अभिभाष्य को सदोष हानि कारित होती हो तो उसके विरुद्ध होने वाली सिविल व आपराधिक कार्यवाही के लिये वह स्वयं जिम्मेदार होगा इसमे मेरे अभिभाष्य की कोई जिम्मेदारी नही होगी सूचित रहे।

रोहित कुमावत एडवोकेट 7014995861

खोया-पाया

मेरे मकान नम्बर 76/31 सैक्टर 7 प्रताप नगर, सांगानेर, जयपुर का अलाटमेंट लेटर नम्बर 1243 कहीं खो गया मिलने पर सूचित करें माया शर्मा

मेरा मकान नं. 32/139 मानसरोवर जयपुर का मूल अदेय प्रमाण पत्र व पजेशन लेटर कहीं गुम हो गये है मिलने पर सूचित करें- ठा. हरिसिंह- 9829011226

खसरा नं. 546/2, 547/1 की मेरी असली रजिस्ट्री ग्राम झरना, तहसील, फागी, जिला जयपुर, राजस्थान की पदमसिंह और निखलेश सिंह राठौड के नाम से थी जो कहीं खो गई। जिसकी एफ.आई.आर. नं. 2444270/2024 दिनांक-25.10.2024 को दर्ज करा दी है। किसी को मिले तो सूचित करें- 6375514922

नाम परिवर्तन

मैं सूबेदार मेजर ओनरेरी लेफ्टिनेंट भंवर सिंह राठौड़ पुत्र मूल सिंह पता चितावा तहसील नावां जिला नागौर राजस्थान है। मेरे आर्मी रिकॉर्ड में मेरी धर्मपत्नी का नाम श्रीमती सुप्यार कौर दर्ज है जो कि गलत है सही नाम सुप्यार कंवर है।

मैंने अपना नाम रीना बंसल से बदलकर रीना गुप्ता रख लिया है। भविष्य में मुझे मेरे नये नाम रीना गुप्ता पत्नी श्री विशाल गुप्ता के नाम से जाना जाए। निवासी-55-ए, आनन्द नगर, सिरसी रोड, वैशाली नगर, जयपुर, राजस्थान

मैंने अपना नाम गौरी शंकर से बदलकर गौरी शंकर झाझड़िया पुत्र श्री रतन सिंह झाझड़िया कर लिया है। भविष्य में मुझे इसी नाम से जाना जाये। पता-4/254, एस.एफ.एस., मानसरोवर, जयपुर

मैं, जेसी-700942एच सुबेदार शिव कुमार ने जिला अदालत, जयपुर के समक्षा दिनांक 04.11.2024 के शपथपत्र के माध्यम से अपनी पत्नी का नाम ममता कुमारी (Mamta Kumari) से बदलकर ममता कुमारी Mamata Kumari) निवासी मिलिट्री हॉस्पिटल जयपुर कर लिया है।

सार्वजनिक सूचना/विज्ञप्ति **जयपुर विकास प्राधिकरण, जयपुर**
क्रमांक : जविप्रा/उपा./जोन-4/2024/डी-2031 दिनांक: 25.10.2024

सर्वधारण को सूचित किया जाता है कि आवेदिका श्रीमती कविता पत्नी श्री सुआराम के द्वारा हथरोई गढ़ी गृह निर्माण सहकारी समिति लि. की योजना सरस्वती नगर-एफ के भूखण्ड संख्या एफ-14 का फ्री होल्ड पटटा जारी करवाने हेतु ऑनलाईन आवेदन किया गया है। परन्तु सोसाईटी के द्वारा जारी आवंटन पत्र दिनांक 19.05.1994 को श्री रोहिताश्व यादव पुत्र श्री हनुमान प्रसाद यादव के नाम से जारी किया गया है। श्री रोहिताश्व यादव पुत्र श्री हनुमान प्रसाद यादव ने अपंजीकृत इकारनामा के द्वारा सम्पूर्ण भूखण्ड का बेचान श्री चन्दूलाल बसवाल पुत्र श्री चुन्नी लाल बसवाल को दिनांक 15.12.2000 को बेचान कर दिया गया है। परन्तु श्री चन्दूलाल बसवाल पुत्र श्री चुन्नी लाल बसवाल ने अपंजीकृत इकारनामा के द्वारा सम्पूर्ण भूखण्ड का बेचान श्रीमती कविता पत्नी श्री सुआराम के पक्ष में दिनांक 20.03. 2002 को कर दिया गया है। उक्त संबंध में आवेदिका द्वारा प्रस्तुत आवेदन पत्र एवं दस्तावेजों के आधार पर आवेदिका के पक्ष में उक्त भूखण्ड का पट्टा जारी करने की कार्यवाही करने के सम्बन्ध में किसी भी व्यक्ति, हितधारी, संस्था को कोई आपत्ति हो तो अधोहस्ताक्षरकर्ता को इस सूचना के प्रकाशित होने के 7 दिवस में प्रस्तुत कर देवें। नियत अवधि में कोई आपत्ति प्राप्त नहीं होने पर आवेदिका के पक्ष में नियमानुसार कार्यवाही कर दी जावेगी।

उपायुक्त जोन-4

कार्यालय उपायुक्त (मुरलीपुरा जोन), नगर निगम ग्रेटर, जयपुर
(मुरलीपुरा सब्जी मण्डी के पीछे, सामुदायिक केन्द्र मुरलीपुरा स्कीम, जयपुर)
क्रमांक-मु.जो./ननिज/2024/3313 दिनांक-21.10.2024

सार्वजनिक सूचना

भूखण्ड सं. 88-ए, आनंद विहार-ए, (शंकर भवन गृह निर्माण सहकारी समिति लिमिटेड) जयपुर का जयपुर विकास प्राधिकरण द्वारा श्री गजानंद सैनी पुत्र श्री सूरजमल सैनी को क्षेत्रफल 77.77 वर्गगज भूमि का पट्टा विलेख जारी किया गया था। प्रकरण में आवेदक श्री चन्द्रकांत गुप्ता पुत्र श्री हरी नारायण अग्रवाल द्वारा शपथ पत्र (अण्डरटेकिंग), पंजीकृत पट्टा मय साइट प्लान की फोटो प्रति, रजि. मुख्त्यारनामा आम, रजि. विक्रय पत्र, अपंजीकृत वसीयत पत्र एवं अन्य चैन दस्तावेजों के आधार पर उक्त भूखण्ड का स्वयं के नाम से नाम हस्तान्तरण चाहा गया है। आवेदक द्वारा उपलब्ध कराये गये दस्तावेजों के आधार पर उक्त भूखण्ड श्री चंद्रकांत गुप्ता पुत्र श्री हरी नारायण अग्रवाल के पक्ष में कुल क्षेत्रफल 77.77 वर्गगज का नाम हस्तान्तरण जारी किया जाना है। उक्त भूखण्ड के नाम हस्तान्तरण बाबत किसी भी व्यक्ति, संस्था, फर्म, कम्पनी को किसी प्रकार की कोई आपत्ति हो तो 07 कार्य दिवस में अधोहस्ताक्षरकर्ता के कार्यालय में प्रस्तुत करें, अन्यथा निर्धारित अवधि की समाप्ति के बाद विधिवत नियमानुसार नाम हस्तान्तरण की कार्यवाही सम्पादित कर ली जावेगी।

उपायुक्त- मुरलीपुरा जोन, नगर निगम ग्रेटर, जयपुर

राजस्थान राज्य क्रीडा परिषद
सवाई मानसिंह स्टेडियम, जनपथ, जयपुर
कार्यालय दूरभाष नं0 0141-2744283, फैक्स नं0 0141-2740568, ईमेल आईडी - rsscjaipur@gmail.com

No. :- F.8/AEN/Plantation Work/2024/1826 Dated : 30/10/2024

निविदा सूचना संख्या-76/2024-25

राजस्थान राज्य क्रीडा परिषद, जयपुर की ओर से सवाई मानसिंह स्टेडियम, जयपुर में पौधों, हेज एवं लॉन इत्यादि के रखरखाव कार्य हेतु केन्द्र/राज्य सरकार के अधिकृत संगठनों/विभागों में पंजीकृत संवेदकों से ऑनलाइन निविदाएें आमंत्रित की जाती है।

निविदा से संबंधित अन्य आवश्यक विवरण वेबसाईट http://sppp.rajasthan.gov.in, http://eproc.rajasthan.gov.in & www.rssc.in पर देखा जा सकता है।

UBN No. : RSC2425WSOB00033

राज.संवाद/सी/24/7359 सचिव

उत्तर पश्चिम रेलवे **आवश्यक सूचना**

सर्व सम्बंधित को सूचित किया जाता है कि रेलवे अंडरपास स. 67A KM 105 / 19-20 मध्य सांगानेर - शिवदासपुरा पर स्थित अंडरपास के CC Road कि आवश्यक मरम्मत हेतु दिनांक 06.11.2024 सुबह 08:00 बजे से दिनांक 26.11.2024 को रात्री 12:00 बजे तक पूर्ण रूप से बंद रहेगा।

इस अवधि में नजदीकी रेलवे समपार सं.67 (LC- No.67) बिलवा फाटक का उपयोग रोड यूजर द्वारा किया जा सकता है। असुविधा के लिए खेद है।

व. मण्डल इंजिनियर (मुख्य) /जयपुर

हमें /NWRailways NWRailways_ पर फॉलो करें 1274-AR/24

प्ररूप-10 नियम 6(7) देखिए

प्राधिकृत अधिकारी का कार्यालय नगर परिषद, झुंझुनू

क्रमांक-8886 **लोक सूचना** दिनांक-05.11.2024

श्री रामेश्वरलाल वर्मा/कजोडमल, अमित वर्मा, आदित्य वर्मा/रामेश्वरलाल वर्मा निवासी विज्ञान नगर गुढा रोड झुंझुनू ने इस कार्यालय में नीचे उल्लिखित भूमि का गैर-कृषिक मुख्यमंत्री जन आवास योजना के उपयोग हेतु ऐसी भूमि के अपने अभिधृति अधिकारों के निर्वापन के लिए आवेदन प्रस्तुत किया है-

अर्थात :-

जिले सहित तहसील का नाम	ग्राम का नाम	खसरा सं.	क्षेत्र
झुंझुनू	झुंझुनू	2467	कुल रकबा 6.27 है. में से 28200.00 व.मी.

इसलिए इसके द्वारा समस्त संबंधित व्यक्तियों को सूचित किया जाता है कि यदि किसी व्यक्ति को राजस्थान भू-राजस्व अधिनियम 1956 की धारा 90-क और राजस्थान अभिधृति अधिनियम, 1955 की धारा 63 के अधीन पूर्वोक्त प्रयोजनों के लिए भूमि के उपयोग हेतु अनुज्ञा प्रदान करने और अभिधृति अधिकारों के निर्वापन पर कोई आक्षेप है तो वह इस नोटिस के प्रकाशन के 7 दिन के भीतर-भीतर किसी कार्य दिवस पर कार्यालय समय के दौरान अधोहस्ताक्षर के समक्ष समर्थक दस्तावेजों के साथ आक्षेप प्रस्तुत कर सकेगा। उपर्युक्त नियत समय के भीतर-भीतर किसी आक्षेप के अभाव में यह समझा जायेगा कि किसी को आक्षेप नहीं है और तदनुसार मामले का निपटारा किया जायेगा।

यह सूचना मेरे हस्ताक्षर और मुहर के अधीन आज ...को जारी की गयी।

प्राधिकारी अधिकारी, नगर परिषद, झुंझुनू

कार्यालय पंचायत समिति खण्डार जिला सवाई माधोपुर (राज.)

क्रमांक-2024-25/1146 दिनांक-28.10.2024

खुली निविदा सूचना संख्या

वित्तीय वर्ष 2024-25 के अन्तर्गत पंचायत समिति खण्डार के पंचायत समिति क्षेत्र में स्वच्छ भारत मिशन ग्रामीण योजनान्तर्गत कचरा संठाहण के लिए पशु कार्ट क्रय कार्य हेतु जीएसटी में पंजीकृत साम संवेदक/फर्मो अथवा जो राजस्थान सरकार के विभिन्न निर्माण विभागों में बी-श्रेणी या उच्च श्रेणी में पंजीकृत हो से निम्नानुसार निविदा दरें खुली निविदा आमंत्रित की जाती है।

क्र सं.	पंचायत समिति की ग्राम पंचायतों में	अनुमानित लागत रू. (लाखों में)	धरोहर राशि रू. (प्रतिदेय)	बिड/निविदा प्रपत्र शुल्क रू. (अप्रतिदेय)	निविदा विक्रय दिनांक व समय	अमानत/निविदा शुल्क राशि का डीडी जमा की अन्तिम दिनांक एवं समय	ऑन लाइन निविदा खोलने की दिनांक व समय
1.	पुश कार्ट क्रय कार्य	9.00	18000	1000	29.10.24 प्रातः 11.00 बजे से	08.11.24 शायं 6:00 बजे तक	11.11.24 दोपहर 3:00 बजे

1. बिड की शर्तें-बौली प्रतिभूति राशि के बिना प्राप्त बिड पर कोई विचार नहीं किया जावेगा।
2. पुश कार्ट क्रय हेतु-बिड प्रपत्र, बिड से संबंधित नियम, शर्ते सम्बन्धी दस्तावेज निर्धारित बिड शुल्कलोक उपापन की वेबसाइट http://sppp.rajasthan.gov.in पर देखी जा सकती है।
3. विभिन्न पुश कार्ट क्रय कार्य हेतु निविदा प्रपत्र, अमानता/निविदा शुल्क राशि का डीडी सील बन्द लिफाफे में जिसके उपर संबंधित बिड का विवरण अंकित हो, कार्यालय विकास अधिकारी पंचायत समिति खण्डार में उक्तानुसार दिनांक 08.11.2024 को सायं 6.00 बजे तक पहुंच जानी चाहिए। तकनीकी बिड में सभी आवश्यक दस्तावेज जो निविदा शर्तों में उल्लेखित है, संलग्न होना आवश्यक है, इसके अभाव में तकनीकी बिड को निरस्त मानते हुए वित्तीय बिड पर विचार नहीं किया जावेगा। निर्धारित तिथि व समय के पश्चात प्राप्त बिड स्वीकार्य नहीं होगी।
4. सम्बन्धित क्रय समिति न्यूनतम दर वाली संविदा को स्वीकार किए जाने के लिए बाध्य नहीं है तथा वह किसी भी बिड को या उसके किसी भी भाग को बिना कोई कारण बताये रद्द कर सकेगी। विवाद की स्थिति में क्रय कमेटी का निर्णय अन्तिम होगा जो सभी संवेदकों को मान्य होगा।
5. उपरोक्त शर्तो के अतिरिक्त जहाँ आवश्यक हो इसके साथ ही राज्य में दिनांक 28.01.2013 से राजस्थान लोक उपापन में पारदर्शिता अधिनियम-2012 व नियम-2013 एवं सामान्य वित्तीय एवं लेखा नियम एवं संलग्न शर्ते प्रभावशील है, जो उक्त बिड पर प्रभावशील होंगे।

NIB NO. ZSM 2425A0456
UBN NO. ZSM 2425GSOB00606

विकास अधिकारी
पंचायत समिति खण्डार

श्रीराम फाइनेंस लिमिटेड
पंजीकृत कार्यालय : श्री टावर्स , प्लाट संख्या 14 ए, साउथ फेज, इंडस्ट्रियल स्टेट, गुंदी, चेन्नई - 600032 तमिलनाडु
शाखा कार्यालय :- 65 ए, पहली मंजिल, सूरज नगर (पश्चिम) अजमेर रोड, सोडाला, जयपुर -302006 राजस्थान

प्रतीकात्मक कब्जा नोटिस

जबकि, अधोहस्ताक्षरी वित्तीय संपत्तियों के प्रतिभूतिकरण और पुनर्निर्माण और सुरक्षा हित प्रवर्तन अधिनियम, 2002 (उक्त अधिनियम) के प्रावधानों के तहत और धारा 13 (12) के तहत प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए श्रीराम फाइनेंस लिमिटेड (एसएफएल) का अधिकृत अधिकारी है। सुरक्षा हित (प्रवर्तन) नियम, 2002 (उक्त नियम) के नियम 3 के साथ पढ़े गए उक्त अधिनियम के तहत उधारकर्ताओं को मांग नोटिस जारी किए गए, जिनका विवरण नीचे दी गई तालिका में उल्लिखित है, ताकि उक्त मांग नोटिस में उल्लिखित राशि चुकाई जा सके। उधारकर्ताओं द्वारा ऋण राशि चुकाने में विफल रहने पर, उधारकर्ताओं और सामान्य रूप से जनता को नोटिस दिया जाता है कि नीचे हस्ताक्षरकर्ता ने धारा 13(4) के तहत उसे प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए नवम्बर 2024 के इस 5 वे दिन नीचे वर्णित संपत्ति का प्रतीकात्मक कब्जा ले लिया है। जो की उक्त अधिनियम एवं उक्त नियमों के नियम 8 के साथ पढ़ा गया।

उधारकर्ता का नाम और पता	मांग पत्रके अनुसार देय राशि	संपत्ति का विवरण
1) महेश भयाना पुत्र महेंद्र नाथ भयाना, मालिक मेसर्स हर्कुलस जिम, दुकान नंबर- FS-2, प्रथम तल, ए सी मार्किट, आई सी आई सी आई बैंक के सामने, राजापार्क, जयपुर - 302004 राजस्थान महेश भयाना पुत्र महेंद्र नाथ भयाना, मकान नंबर B-113, उदय मार्ग, तिलक नगर, पोस्ट ऑफिस जवाहर नगर, राजापार्क, जयपुर - 302004 राजस्थान महेश भयाना पुत्र महेंद्र नाथ भयाना, मकान नंबर B-111, गोल्डन टावर, उदय मार्ग, तिलक नगर, पोस्ट ऑफिस जवाहर नगर, राजापार्क, जयपुर- 302004 राजस्थान (उधारकर्ता) 2). नीलम भयाना पत्नी महेश भयाना, दुकान नंबर -FS-2, प्रथम तल, ए सी मार्किट, आई सी आई सी आई बैंक के सामने, राजापार्क, जयपुर- 302004 राजस्थान नीलम भयाना पत्नी महेश भयाना, मकान नंबर B-113, उदय मार्ग, तिलक नगर, पोस्ट ऑफिस जवाहर नगर, राजापार्क, जयपुर - 302004 राजस्थान नीलम भयाना पत्नी महेश भयाना, मकान नंबर B-111, गोल्डन टावर, उदय मार्ग, तिलक नगर, पोस्ट ऑफिस जवाहर नगर, राजापार्क, जयपुर- 302004 राजस्थान (सह उधारकर्ता)	ऋण खाता संख्या :- CDJAITF1512300005 डिमांड नोटिस दिनांक:-29-08-2024 के संदर्भ में रूपए Rs- 10409868/- (एक करोड़ चार लाख नौ हजार आठ सौ अड़सठ रुपये मात्र) का भुगतान करने के लिए गैर निष्पादित शस्तिया (NPA) की दिनांक :- 08 - 08 - 2016	दुकान नंबर एफ.एस.-2 पहली मंजिल पर स्थित, ए सी मार्केट, आई सी आई सी आई बैंक के सामने, राजापार्क, जयपुर-302004, जिला- जयपुर, राजस्थान का वह सारा हिस्सा, जो की 14.55 वर्ग मीटर और 156.55 वर्ग फुट का क्षेत्रफल में स्थित है और निम्नानुसार घिरा हुआ- पूर्व से पश्चिम - 4.77 मीटर उत्तर से दक्षिण - 3.05 मीटर उत्तर की ओर : दुकान संख्या FS-1 दक्षिण की ओर : दुकान संख्या FS-3 पूर्व की ओर : आम रास्ता पश्चिम की ओर : अन्य की दूकान

यह नोटिस बड़े पैमाने पर आम जनता को सावधान करने के लिए भी है कि श्रीराम फाइनेंस लिमिटेड के अधिकृत अधिकारी के पास ऊपर उल्लिखित अचल संपत्ति का वैध प्रतीकात्मक कब्ज़ा है और उधारकर्ता या कोई भी व्यक्ति श्रीराम फाइनेंस लिमिटेड की पूर्व लिखित सहमति के बिना उल्लिखित उपरोक्त किसी भी संपत्ति को पट्टे पर देना /विक्रय करना या अन्यथा निपटान अथवा अलग करना इस नोटिस की प्राप्ति के बाद बिक्री के माध्यम से हस्तांतरण नहीं करेगा।

स्थान: जयपुर Sd/-
दिनांक: 06-11-2024 अधिकृत अधिकारी
श्रीराम फाइनेंस लिमिटेड

AU SMALL FINANCE BANK
Registered Office : 19-A Dhuleshwar Garden, Jaipur, Rajasthan, India, 302001.
www.aubank.in

LOAN AGAINST GOLD - AUCTION NOTICE ON "AS IS WHERE IS" BASIS

The below mentioned borrower/s have been issued notices to pay their outstanding amounts towards the loan against gold facilities availed from AU Small Finance Bank Limited ("Bank"). Since the borrower/s has/have failed to repay his/their dues, we are constrained to conduct an auction of pledged gold items/articles on **11 Nov 2024 between 11:00 AM - 3:00 PM (Time)** at below mentioned branches according to the mode specified therein. In the case of deceased borrowers, all conditions will be applicable to legal heirs. Please note that in the event of failure of the above auction, the bank reserves its right to conduct another auction without prior intimation.

E-Auction Branch Details (E-auction will be conducted by using Weblink https://gold.samil.in)

BANSWARA - 24660000124704 24660000234757 24660000259930 | **BHILWARA** - 24660000167973 | **CHITTORGARGH** - 24660000201280 24660000213767 24660000354681 24660000862994 | **JAIPUR - QUEENS ROAD** - 24660000181625 24660000234817 24660000263032 24660000284872 24660000298315 24660000895652 | **JAIPUR-TRIVENI NAGAR** - 24660000278624 | **JHALAWAR** - 24660000270138 | **JODHPUR ITI CIRCLE** - 24660000191206 | **KOTA -GHODE WALA CIRCLE** - 24660000167673 24660000185878 24660000202728 24660000206331 24660000218208 24660000263512 | **LAXMANGARH** - 24660000291428 |

Note: The auction is subject to certain terms and conditions mentioned in the bid form, which is made available before the commencement of auction.

Sd/-
Manager
AU Small Finance Bank Limited

संक्षिप्त

पंचायत समिति विकास के आदेशो पर रोक

मालपुरा । टोडारायसिंह पंचायत समिति से जुडे एक मामले मे ग्राम पंचायत बस्सी के कनिष्ठ सहायक को कार्य व्यवस्थार्थ लगाने के पंचायत समिति विकास अधिकारी के आदेश पर न्यायालय ने लगाई रोक। राजस्थान सिविल सेवा अपील प्राधिकरण ने आज मंगलवार को विकास अधिकारी के आदेशो पर रोक लगाने के आदेश जारी किये। अधिकरण के सदस्य सुची शर्मा व चेतन राम देवडा की पीठ ने लगाई है रोक। बस्सी ग्राम पंचायत के कनिष्ठ सहायक शंकर लाल धाकड की अपील पर दिये गये आदेश अधिकरण ने राज्य सरकार व टोंक जिला परिषद सीईओ सहित पंचायत समिति विकास अधिकारी टोडारायसिंह अधिकारी व अन्य को नोटिस जारी कर मांगा जवाब। तबादलो व कार्य व्यवस्थार्थ कार्मिको को लगाने पर रोक के बावजूद विकास अधिकारी द्वारा 29 अक्टुम्बर को जारी किये थे आदेश। जिसे अपील मे प्रार्थी पक्ष से पैरवी करते हुये एडवोकेट लक्ष्मीकांत शर्मा ने दी थी आदेशो को चुनौती।

अन्नकुट प्रसादी गौमाता के नाम संतो ने की शिरकत

मालपुरा । रामनारायण गोसेवा समिति के तत्वाधान मे मंगलवार को घाटी रोड घाणा के बालाजी के पास रामनारायण गोशाला के एक विशाल अन्नकुट प्रसादी गौमाता के नाम आयोजित की गई। परम पूज्य संत शिरोमणी मोती गिरी महाराज टोरडी सहित संतो ने अन्नकुट प्रसादी के आयोजन मे शिरकत कर गौरक्षको व गोसेवको का किया उत्साहवर्धन। मोती गिरी महाराज पंच कुण्डा टोरडी सिद्ध क्षैत्र मे गौशाला का अवलोकन कर वहां गोसेवको द्वारा बिमार व असहाय गौमाता की की जा रही सेवा व उपचार का दृश्य देख अदभुत होते हुये सेवा मे जुटे गौरक्षको की पीठ थप-थपाई। गौशाला मे आयोजित अन्नकुट महोत्सव मे बडी संख्या मे गौभक्तो ने अपनी उपस्थिति दर्शा गौमाता की प्रसादी का लुप्त लिया।

दामोदर गोशाला का वार्षिकोत्सव शनिवार को

निवाई। श्रीदामोदर गोशाला का 66 वां वार्षिकोत्सव एवं गोपाष्टमी पर्व शनिवार को आयोजित होगा। गोशाला प्रबंध समिति के अध्यक्ष शिवरतन दरगड ने बताया कि शनिवार की सुबह 8 बजे गोपाष्टमी पर्व पर गोशाला परिसर में मंत्रोच्चार के साथ गायों की पूजा की जाएगी। दोपहर 2 से 4 बजे तक श्री कृष्ण प्रचार सत्संग समिति द्वारा संगीतमय हरिनाम संकीर्तन किया जाएगा। सांय 4 से 5 बजे तक गोशाला के वार्षिकोत्सव में खुला अधिवेशन का आयोजन होगा। राजेंद्र टोडवाल ने बताया कि गोशाला के वार्षिकोत्सव व गोपाष्टमी पर्व को लेकर विभिन्न तैयारियां जोरशोर से की जा रही है।

'एकाग्रता से लेंवे प्रशिक्षण'

निवाई। अतिरिक्त जिला कलेक्टर सुरेश चौधरी ने निवाई में चल रहे चुनाव प्रशिक्षण शिविर का दौरा कर आवश्यक दिशा निर्देश दिए। उन्होंने मतदान अधिकारियों को आवश्यक निर्देश देते हुए बताया कि चुनाव प्रशिक्षण के दौरान एकाग्रता से प्रशिक्षण लेंवे जिससे चुनाव प्रक्रिया के दौरान कोई समस्या नहीं आएगी। राज्य स्तरीय मास्टर ट्रेनर विमलकुमार जैन ने मतदान अधिकारियों को मतदान सामग्री लेते समय हर सामग्री को सूची अनुसार ढंग से देखकर एवं जांच परख कर लेने की अनिवार्यता के बारे में समझाया। उन्होंने विभिन्न प्रकार के लिफाफों की संख्या एवं उनकी उपयोगिता, सील लगाने और लिफाफों की पूर्ति करने के बारे में विस्तार से जानकारी देते हुए आवश्यक दिशा निर्देश दिए।

सवा तीन लाख रूपये की शास्ति आरोपित की

अलवर । खनि अभियन्ता मनोज कुमार शर्मा ने बताया कि जिला कलक्टर डॉ. आर्तिका शुक्ला के निर्देशन पर जिले में अवैध खनन एवं निर्गमन की रोकथाम हेतु चलाए जा रहे विशेष अभियान के तहत आज जांच के दौरान निकटग्राम माधोबास बीजवाड तहसील अलवर में ओरडनरी सैण्ड का अवैध खनन करने पर एक एक्सकेवेटर मशीन, दो डम्पर को जब्त कर 3 लाख 22 हजार 250 पये की शास्ति आरोपित की गई।

कलेक्टर ने अनुपस्थित कार्मिकों को कारण बताओं नोटिस जारी करने के निर्देश दिए

किशनगढ़ बास। खैरथल तिजारा जिले में एक साथ कार्मिकों की उपस्थिति व आमजन की समस्याओं के निस्तारण की गुणवत्ता व कार्य प्रणाली को जांचने व के लिए जिला कलेक्टर किशोर कुमार के निर्देश पर जिलेभर में सरकारी कार्यालय का औचक निरीक्षण किया गया। जिलेभर में एक साथ 53 सरकारी कार्यों के निरीक्षण में 18 कर्मचारी अनुपस्थित मिले। अनुपस्थित मिले कार्मिकों को कारण बताओं नोटिस जारी किए गए।

जिला कलेक्टर किशोर कुमार ने बताया कि मंगलवार को जिलेभर में कार्यालय में कार्मिकों की समय पर उपस्थित जाँचने के लिए एक साथ 53 कार्यालयों का निरीक्षण किया गया। इस दौरान कार्यालय में कार्य प्रणाली, समयबद्ध कार्यालय संचालन तथा आमजन की समस्याओं के निस्तारण प्रणाली, पदस्थापित कार्मिकों की की गुणवत्ता को देखा ई-फाइल संख्या एवं उपस्थित कार्मिकों की संख्या सहित विभिन्न व्यवस्थाओं का जायजा लिया गया। निरीक्षण के दौरान विभिन्न कार्यालयों के 18 कर्मचारी अनुपस्थित पाए गए। निरीक्षण के दौरान अनुपस्थित मिले कार्मिकों को जिला कलेक्टर ने संबंधित विभाग के जिला स्तरीय अधिकारी को कारण बताओं नोटिस देने के निर्देश दिए हैं साथ ही जिला कलेक्टर ने अधिकारियों को निर्देशित करते हुए कहा है आगे भी संबंधित कार्मिक द्वारा इसी प्रवृत्ति को अपनाये जाने पर कठोर कार्यवाही करने के लिए निर्देश दिए।

किशनगढ़ बास में सरकारी कार्यालय का निरीक्षण कर उपस्थिति रजिस्टर चेक करते एसडीएम मनीष कुमार।

- 53 सरकारी कार्यालय का औचक निरीक्षण में 18 कार्मिक अनुपस्थित मिले

फसलों का उचित मुआवजा दिलवाने की मांग को लेकर सौंपा ज्ञापन

निवाई। फसलों के मुआवजे को लेकर तहसील के साथ किए जा रहे भेदभाव को लेकर किसान महापंचायत के पदाधिकारियों ने महापंचायत के अध्यक्ष दशरथसिंह चौहान के नेतृत्व में तहसीलदार नरेश गुर्जर को मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के नाम ज्ञापन सौंपा है।

- उचित मुआवजा नहीं मिला तो किसान महापंचायत करेगी धरना प्रदर्शन

अध्यक्ष चौहान ने बताया कि अन्य वर्षो की अपेक्षा इस वर्ष अत्यधिक वर्षा होने के कारण किसानो की फसले 80 प्रतिशत नष्ट हो गई है लेकिन अधिकारियों द्वारा रिपोर्ट में नुकसान नाम मात्र का ही बताया गया है। उन्होंने आरोप लगाते हुए बताया कि अधिकारियों ने घर बैठकर ही रिपोर्ट बना ली है। जिससे किसानों के साथ अन्याय हुआ है। उन्होंने बताया कि किसान देश के अन्नदाता है उनके साथ विश्वास घात नहीं हो। किसानों ने अति शीघ्र निवाई तहसील के सभी गांव को उचित मुआवजे की मांग की है। ज्ञापन में बताया कि यदि किसानों को उचित मुआवजा नहीं मिला तो धरना प्रदर्शन करके आंदोलन किया जाएगा। इस अवसर पर भंवरलाल , कालूराम, सुरेश चौधरी, कृष्णा चौधरी, तुलसीराम, कमलेश कुमावत, दीपक चौधरी, राजेश गुर्जर, मोहनलाल व मदन कुमार सहित कई किसान मौजूद थे।

तहसीलदार नरेश गुर्जर को फसलों के मुआवजे को लेकर ज्ञापन सौंपते हुए किसान महापंचायत के पदाधिकारी।

मतदान करने का संदेश दिया

दौसा। विधानसभा उप चुनाव में जिला निर्वाचन अधिकारी देवेंद्र कुमार के निर्देशन में स्वीप गतिविधियों के तहत मंगलवार को लवाण, सैंथल, नांगल राजावतान एवं दौसा ब्लॉक में किसान मतदाता सम्मेलन आयोजित कर 13 नवम्बर को बढ-चढ़कर मतदान करने का संदेश दिया।

नोडल अधिकारी स्वीप नरेंद्र कुमार मीना ने बताया कि किसान मतदाता सम्मेलन का उद्देश्य अधिक से अधिक किसान मतदाताओं की लोकतंत्र में भागीदारी सुनिश्चित हो, साथ ही किसानों से अपील की गई कि वे अपने परिवारिक सदस्यों को भी लोकतंत्र के पर्व चुनाव में मतदान करने के लिए प्रोत्साहित करें। जिला समन्वयक स्वीप रामवीर चौधरी ने बताया कि किसान मतदाता सम्मेलनों में किसानों को मतदाता शपथ दिलवाई गई तथा कला जत्था के कलाकारों द्वारा मतदान जागरूकता की सुंदर प्रस्तुतियों एवं नुक्कड़ नाटकों के माध्यम से मतदान का संदेश दिया गया। कृषि विज्ञान केन्द में आयोजित किसान मतदाता सम्मेलन में वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं अध्यक्ष कृषि विज्ञान केन्द्र बीएल जाट ने मतदान के महत्व को समझाते हुए विधानसभा उप चुनाव में किसानों से यादा से यादा मतदान करने की अपील की। इस अवसर पर रामबाबू शर्मा, धर्मराज शर्मा, घनश्याम प्रजापत, दिलीप शर्मा, लोकेश शर्मा संस्कृत, निरंजन चौधरी, जितेंद्र सैनी, गोवर्धन लाल बैरवा, सुरेश प्रजापत, सियाराम नट, भुवनेश कुमार शर्मा, दिलीप कुमार शर्मा, अनिल निर्माण, जेपी मीना, जितेन्द्र शर्मा, सुलोचना गुप्ता, प्रिया मीना उपस्थित रहे।

- किसानों को मतदाता शपथ दिलवाई गई तथा कला जत्था के कलाकारों द्वारा मतदान जागरूकता की सुंदर प्रस्तुतियों एवं नुक्कड़ नाटकों के माध्यम से मतदान का संदेश दिया

अश्लील विडियो बनाकर 60 वर्षिय बुजुर्ग से ठगी करने वाली गैंग के पाँच गिरफ्तार

कोटपूतली। स्थानीय थाना पुलिस ने अश्लील विडियो बनाकर ठगी करने वाली एक गैंग के 5 सदस्यों को गिरफ्तार करने में सफलता हांसिल की है। एएसपी वैभव शर्मा ने जानकारी देते हुए बताया कि बुजुर्ग व्यक्ति के साथ हुई ठगी की वारदात को गंभीरता से लेते हुए जिला पुलिस अधिक्षक राजन दुष्यन्त ने तत्काल प्रभाव से कार्रवाही के के निर्देश दिये थे।

जिस पर एएसपी के सुपर विजन में डीएसपी राजेन्द्र कुमार बुरडक तथा थाना प्रभारी राजेश शर्मा के नेतृत्व में विशेष टीम का गठन किया गया। जिसमें डीएसपी बुरडक, थाना प्रभारी राजेश शर्मा, हैड कानी. राकेश यादव, कानी. रामानन्द, कृष्ण कुमार, जितेन्द्र यादव व सतपाल को शामिल किया गया। एएसपी वैभव शर्मा के मुताबिक विगत 9 अक्टुबर को ग्राम मोलाहेड़ा निवासी एक 60 वर्षिय बुजुर्ग ने मामला दर्ज करवाते हुए बताया था कि विगत 30 सितम्बर को एक महिला ने प्रार्थी को कस्बे के बानसूर रोड़ स्थित एक होटल पर बुलाकर उसको शराब पिलाते हुये उसका अश्लील विडियो बना लिया एवं पीडित को होटल के बाहर लाकर जबरन गाड़ी में डालकर ले गये। जिसके बाद उससे मारपीट करते हुये अश्लील विडियो दिखाकर ब्लैकमेल कर 5 लाख रूपये ठग लिये एवं 15 लाख रूपयों की और भी मांग भी करने लगे। इस पर स्थानीय थाना पुलिस ने सम्बंधित धाराओं में मामला दर्ज कर घटना को अन्जाम देने वाली गैंग का पर्दाफाश कर 5 आरोपियों को बापर्दा गिरफ्तार कर लिया तथा शेष की तलाश जारी है।

- विगत 30 सितम्बर को की थी 5 लाख रूपयों की ठगी, 15 लाख रूपयों की और कर रहे थे मांग

पुलिस गिरफ्त में आरोपी।

मोदी ने हर वर्ग व समुदाय के कल्याण व उत्थान के लिए किया कार्य : मदन राठौड़

जयपुर,। भाजपा प्रदेश अध्यक्ष मदन राठौड़ ने मंगलवार को दौसा विधानसभा क्षेत्र में भाजपा प्रत्याशी जगमोहन मीणा के समर्थन में जनसभा की तो वहीं दूसरी ओर कार्यकर्ताओं के साथ बैठकर चुनावी चर्चाएं भी की। राठौड़ ने सर्वसमाज की बैठक को संबोधित करते हुए कहा कि आज एक ओर विश्व की सबसे बड़ी राजनीतिक पार्टी है, जिसने समाज के हर वर्ग, हर समुदाय के लिए कार्य किया। दूसरी ओर ऐसी पार्टी है जिसने केवल वोट बैंक की राजनीति को बढ़ावा दिया। भाजपा ने अल्पसंख्यक वर्ग की चिंता की और उनको रहने के लिए आवास दिया, मुस्लिम बहनों के लिए तीन तलाक समाप्त करवाया। इतना ही नहीं, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने हर गरीब, किसान, मजदूर, युवा और महिलाओं के कल्याण के लिए योजनाएं बनाई है, फिर चाहे वो किसी भी वर्ग या समुदाय का ही क्यों ना हो। भाजपा प्रदेश अध्यक्ष मदन राठौड़ ने कहा कि कांग्रेस ने आज तक मुस्लिम भाई-बहनों का भला नहीं किया जबकि भाजपा उनकी चिंता कर रही है। समाज के अल्पसंख्यक वर्ग को कांग्रेस की दुकान को बंद करने की जरूरत है। कांग्रेस डरा-डरा कर अल्पसंख्यकों के वोट ले रही है, लेकिन अब जागरूक होने की आवश्यकता है। आज जरूरत है उस पार्टी के साथ जुड़ने की जो हर वर्ग के साथ हर समुदाय के विकास और उत्थान के लिए कार्य करें। प्रतिस्पर्धा के इस युग में उस पार्टी का चयन करना चाहिए जो आमजन की सेवा के लिए कार्य करें। भाजपा में सेवा और हर वर्ग के लिए विकास पर कार्य किया जाता है। भाजपा प्रदेश अध्यक्ष मदन राठौड़ ने कहा कि उपचुनावों में हमसभी को एकजुट होकर भाजपा प्रत्याशी के समर्थन में मतदान करना है और मतदान कराना है। केंद्र में भाजपा सरकार और राज्य में भी बहुमत के साथ भाजपा सरकार चल रही है, लेकिन क्षेत्र के विकास के लिए हम सभी को भाजपा के प्रत्याशी को जीताकर विधानसभा भेजना है जो आम जनता की आवाज बन सके और क्षेत्र में विकास के नए आयाम स्थापित कर सकें। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा लगातार जन हितैषी योजनाओं को लागू कर रहे है। इन योजनाओं का क्षेत्र के लोगों को अधिक से अधिक संख्या में लाभ मिल सकें, इसके लिए हमें एकजुट होकर भाजपा प्रत्याशी के समर्थन में मतदान करना होगा।

पेपर लिक प्रकरण के साथ एम.डी.एम. योजना की भी जांच चल रही : मदन दिलावर

दौसा। प्रदेश के शिक्षा मंत्री मदन दिलावर ने कांग्रेस के प्रदेशाध्यक्ष गोविन्द सिंह डोटसरा पर बडा हमला बोलते हुये कहा कि प्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष गोविन्द सिंह डोटासरा ने पेपर आउट कर, जितना बनाना था उतना माल बना लिया, अब पेपर लिक प्रकरण के साथ एमडीएम योजना की भी जांच चल रही है, वे कब अन्दर चले जायें कोई पता नही।

प्रदेश के शिक्षा मंत्री मदन दिलावर मंगलवार को प्रेसवार्ता में बोल रहे थे। उन्होने कहा कि कांग्रेस ने प्रदेश में बजरी माफिया को संरक्षण दिया, सभी मंत्री एवं विधायकों को लूटने की पूरी छूट दी। अब ऐसे लोग कब शिकंजे में आ जाएं कोई पता नहीं। प्रदेश में भाजपा सरकार बनने के बाद लोगों को भ्रष्टाचार से मुक्ति मिली है। ऐसे में चुनाव में सातों सीट बीजेपी जीतेगी। उन्होने कांग्रेस पर हमला करते हुये कहा कि कांग्रेस घोटाला करने वालों एवं सफेद झूठ बोलने वालों का सबसे बड़ा समूह है, जो देश के साथ धोखाधड़ी करता आया है। लेकिन कांग्रेस नेताओं को यह नहीं दिख रहा, आंखों पर पट्टी बांधकर घूमते हैं। पेपर आउट करने और पैसे लेने की ही सोचते हैं।

आरपीएससी के मेंबर और मंत्री का दर्जा का रखने वालों सबको हमने जेल भेज दिया। जबकि ऐसा करने वालों की कांग्रेस ने कभी निंदा नहीं की। उनको महिमा मंडित करने की कोशिश कर रहे हैं। अब तिलमिल रहे हैं, तड़प रहे हैं, बिललबिला रहे हैं। भ्रष्टाचार का जो माल आता था अब नहीं आ रहा है। मनोरोगी रात को जैसे बड़बड़ाता है, वैसे ही बड़बड़ा रहे हैं। उन्होने कहा कि कांग्रेस ऐसे लोगों का समूह है जो आतंकवादियों को प्रश्रय देता है। उन्होने राहुल गांधी पर हमला बोलते हुये कहा कि बटाला हाउस में आतंकवादियों को मारा गया, तो राहुल ने कहा कि मेरी मां को रात भर नींद नहीं आई। उसके रातभर आंसू टपकते रहे। आतंकवादियों को फांसी की सजा दी गई तो, उन्हें माफी देने की मांग भी कांग्रेस ने ही की। गोधरा कांड में राम भक्तों के हत्यारों को महिमा मंडित करने का कांग्रेस ने पूरा प्रयास किया हैए यह हत्यारों को भी प्रश्रय देती है। उन्होने कहा कि चुनाव के दौरान दोनों ही पार्टियों का राजनीतिक चरित्र जनता के सामने है। कांग्रेस ने देश का और देश की सेना का बहुत अपमान किया है। राष्ट्र के आराध्य देव भगवान श्रीराम का भी अपमान किया है। उन्होंने सुप्रीम कोर्ट में शपथ पत्र दिया था कि भगवान राम का कोई अस्तित्व ही नहीं है, यह कपोल कल्पित है। ऐसा कहकर कांग्रेस ने धर्म ग्रंथों को झूठा साबित कर दिया। हमारे पूर्वज भगवान राम का नाम लेते लेते स्वर्ग सिधार गए, उन्हें भी झूठा साबित कर दिया है। लेकिन पूरा देश झूठा नहीं हो सकता। हमारे देश की सेना हमारी सुरक्षा करती है। उसके बिना हम स्वतंत्रता की सांस नहीं ले सकते। लेकिन सेना की सुरक्षा के बारे में कांग्रेस ने कभी सोचा भी नहीं कि उनका भी सुरक्षा कवच होना चाहिए। हमारे सैनिकों को नुकसान नहीं पहुंचे इसके लिए हमारे पीएम नरेंद्र मोदी ने बीड़ा उठाया है। बुलेट प्रुफ हेलमेट व जैकेट उपलब्ध कराए हैं। उन्होने कहा कि कांग्रेस एससी एसटी की घोर विरोधी है, कश्मीर में एससी-एसटी, ओबीसी, विकलांग में महिला किसी का भी आरक्षण नहीं था। हिंदुओं को वोट देने का अधिकार नहीं था। वहां हिंदुओं को मारकर भगा दिया, बचे जिनको वोट का अधिकार नहीं मिला। धारा 370 लगाकर यह अधिकार छीना है। लेकिन प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने धारा 370 को समाप्त कर देश को एकजुट कर दिया है।

प्रेसवार्ता को सम्बोधित करते शिक्षा मंत्री मदन दिलावर।

विवाह के लिए संस्था देगी रियायती दर पर पूरा दहेज एवं फ्री सौ गज का प्लाट

अलवर। गरीब पिता के लिए बेटी का विवाह करना कितना मुश्किल काम है क्योंकि बेटी का विवाह करने में गरीब पिता का रोम रोम कर्ज में दब जाता है ऐसे में डा. भीमराव अम्बेडकर सामाजिक सेवा संस्थान ने आगे आकर गरीब पिता का बोझ अपने कंधों पर ले लिया है यह संस्था दहेज का सम्पूर्ण सामन रियायती दर पर उपलब्ध करा रही है साथ ही गरीब की बेटी को सौ वर्गगज का प्लाट भी अलवर जिले में निशुल्क उपलब्ध करा रही है।

संस्था के कोषाध्यक्ष महेंद्र सिंह ने जानकारी देते हुए बताया कि संस्था का हैड आफिस अलवर में सूर्य नगर मोड, नारायण स्कूल के पास स्थित है यहां आकर कोई भी जानकारी हासिल कर सकता है संस्था 81 हजार 200 रुपये में बेटी को डबल बेड विद बिस्तर, दीवार घड़ी, हाथ घड़ी दुल्हें, दुल्हन, दुल्हन के कपडे, 5 चांदी के आईटम, एलईडी, अलमारी, फ्रिज,वाषिंग सेट, ड्रेसिंग टेबल,सेंटर टेबल, प्रेस, मिक्सी, सहित बर्तन, गैस चूल्हा,सहित समस्त दहेज का सामान प्रदान करेगी साथ ही बेटी को संस्था अलवर में एक सौ वर्गगज का प्लाट भी देगी ताकि कोई गरीब की बेटी बिना मकान के ना रह सके।

मारुति सखी मंडल का दीवाली स्नेह मिलन

मनोहरपुर । सीकर में धार्मिक कार्यों में अग्रणीय संस्था मारुति सखी का दिवाली स्नेह मिलन समारोह आयोजित किया ये आयोजन समाजसेवी उर्मिला रावत के निवास पे किया गया जहां पे करीब 50 से ऊपर महिलाओ ने भाग लिया । संस्था से सनु मोदी ने बताया कि इस हमारे द्वारा मासिक कीर्तन और सुंदरकांड का पाठ हर सदस्य के घर में किया जाता है जिस से घर का वातावरण भी धार्मिक बनता है ये महिला ग्रुप काफी साल पहले बना था इस की विशेष बात है कि इस में सास भी है बहु भी है उम्र का कोई बंधन नहीं है।

इस में सब मिलकर कीर्तन भी करते है सुंदरकांड के पाठ के बाद सभी महिला सदस्यों में प्रसाद का वितरण किया जाता है। सुंदरकांड करने का बहुत महत्व है हनुमान जी जल्द प्रसन्न होने वाले देवता हैं. वह बल, बुद्धि और कृपा प्रदान करने वाले माने जाते हैं. मान्यता है कि सुंदरकांड का पाठ करने से व्यक्ति को जीवन में कई सकारात्मक बदलाव देखने को मिलते है।

सार-समाचार

उनियारा में भाजपा मीडिया सेन्टर का उद्घाटन

टोक। भारतीय जनता पार्टी टोंक द्वारा देवली-उनियारा विधानसभा चुनावों को लेकर उनियारा में मीडिया सेंटर का उद्घाटन भीलवाड़ा सांसद एवं विधानसभा चुनाव प्रभारी दामोदर अग्रवाल व भाजपा जिलाध्यक्ष अजित सिंह मेहता, प्रदेश मीडिया सह सयोंजक मेहराज चौधरी ने किया। इस अवसर पर मीडिया को सम्बोधित करते हुये चुनाव प्रभारी दामोदर अग्रवाल ने कहा की भाजपा प्रत्याक्षी की चुनावी सभाओ मे उमड़ रहा जन सैलाब चुनाव परिणामो की दिशा बता रहा है और हम बूथ मैनेजमेंट पर ध्यान दे रहे है और अधिक से अधिक मतदान हो यही हमारा लक्ष्य है। जिला मीडिया प्रभारी राहुल शर्मा ने सभी का आभार प्रगट किया।इस अवसर पर जिला महामंत्री महेंद्र चौधरी, सीताराम राम पोसवाल, चंद्रवीर चौहान, शंकर लाल ठाड़ा, नमो गौतम सहित वरिष्ठ भाजपा पदाधिकारी व कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

गौरी शंकर सेवादल के प्रभारी मनोनीत

फुलेरा। राजस्थान प्रदेश कांग्रेस सेवा दल के प्रदेशाध्यक्ष हेमसिंह शेखावत ने जयपुर ग्रामीण उत्तर के जिला प्रभारी पद पर फुलेरा के गौरीशंकर सैनी को नियुक्त किया है। प्रतिनिधियों जन ने जिला प्रभारी गौरी शंकर सैनी की नियुक्ति पर हर्ष जताया है। फुलेरा में सैनी का जगह जगह स्वागत किया। गौरतलब है कि सैनी प्रभारी बनने के बाद पूर्व मुख्यमंत्री अशोक गहलोत तथा प्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष गोविन्द सिंह टोडासरा से आशीर्वाद लिया। इसके साथ ही जिला पदाधिकारी एवं प्रदेश पदाधिकारी, ब्लॉक अध्यक्ष तथा जयपुर ग्रामीण के समस्त कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने गौरीशंकर सैनी को माला साफा पहनाकर एवं मुंह मीठा करवाकर बधाईयां दी।

सरकारी आदेशो कि अवहेलना कर, मनमर्जी कर रहे हैं, रोडवेज के चालक परिचालक

सावरदा । राष्ट्रीय राजमार्ग संख्या 48 पर संचालित राजस्थान परिवहन निगम की बसो का मोखमपुरा से दूदू, किशनगढ़ ,अजमेर, तीन डिपो की बसों का हुआ स्टॉपेज जिनमे वैशाली नगर,अजमेर और ब्यावर आगार कि बसो के आदेशो कि कापी निकलते ही , ग्रामीणों की खुशी का ठिकाना नहीं था । परन्तु सरकारी आदेशो कि चालक परिचालक कर रहे हैं ,अवहेलना आदेश जारी होने के बाद भी मौखमपुरा से जयपुर तथा किशनगढ़ अजमेर की सवारी के लिए नही रोक रहे हैं, बसो को गौरतलब है कि राजस्थान राज्य पथ परिवहन निगम की कार्यकारी निदेशक डॉ ज्योति चौहान (यातायात) के द्वारा एक आदेश जारी कर तीन डिपो की बसो का मौखमपुरा मे सवारी उतारने व बिठाने के आदेश जारी होने के बाद भी संबंधित बसो में सेवाए दे रहे , चालक परिचालक अपनी मनमर्जी से नही तो सवारी बिठा रहे हैं , और ही कोई बैठ जाए तो उसे उतार रहे है। दिव्यागं शिक्षक दानाराम गुर्जर ने बताया कि जयपुर से मौखमपुरा के लिए रोडवेज में बैठे तो मौखमपुरा का नाम लेते ही परिचालक ने बस से नीचे उतर जाने की बात कही शिक्षक द्वारा विभागीय आदेशो कि कापी दिखाने पर बस के परिचालक द्वारा उनके साथ अभद्रता की गई ।

उन्नित गौड का किया सम्मान

अलवर। देश की सर्वोच्च रक्षा सेवा एनडीए परीक्षा में देश भर में 52 वी रैंक प्राप्त करने पर उन्नित गौड का स्वतंत्रता गौरव उत्सव समिति की तरफ से सम्मान किया गया। समिति अध्यक्ष गौरीशंकर विजय ने बताया कि उन्नित गौड के पिता मुकेश पी गौड अलवर जीएसटी विभाग में असिस्टेंट कमिश्नर के पद पर नियुक्त है जबकि उनकी माता अंशु शर्मा प्रधानाध्यापिका का मालाखेड़ा सरकारी स्कूल में नियुक्त है। पढने लिखने में बचपन से ही होशियार उन्नित गौड ने मात्र 18 वर्ष की उम्र में अपने पहले ही प्रयास में उन्नित गौड के द्वारा एनडीए परीक्षा में 52 वां स्थान प्राप्त करते हुए अलवर जिले का देश भर में नाम किया है। यह संपूर्ण अलवर जिले के लिए गर्व की बात है। इस अवसर पर समिति की तरफ से उन्नित गौड को सफल भविष्य की शुभकामनाएं प्रदान करते हुए समिति की तरफ से स्मृति चिन्ह देते हुए उन्हें सम्मानित किया गया।

श्मशान के पास 10 बीघा जमीन की कच्ची रोड़ को जेसीबी से हटाया

अलवर। दीपावली के बाद फिर से एग्रीकल्चर प्लॉटिंग पर अलवर यूआईटी का बुलडोजर चला है। मंगलवार को भूगोर में श्मशान के पास और मंगलम रेजिडेंसी के पीछे करीब 10 से 15 बीघा जमीन पर अवैध प्लॉटिंग के लिए बनाई गई मिट्टी की रोड को हटाया गया। यूआईटी के तहसीलदार अनिल शर्मा ने बताया कि अवैध प्लॉटिंग पर यूआईटी की बराबर कार्यवाही होती है। उसी के अनुसार जेईएन की रिपोर्ट के आधार पर भूगोर में श्मशान घाट से लगती करीब 8 से 10 बीघा जमीन पर अवैध प्लॉटिंग की जा रही थी। इसके पास ही मंगलम रेजिडेंसी के पीछे भी अवैध प्लॉटिंग पर एक्शन हुआ है। जिसको लेकर पहले खातेदार को नोटिस दिया गया। नोटिस का जवाब नहीं आने के बाद नियम के अनुसार अवैध प्लॉटिंग के लिए डाली जा रही कच्ची रोड को जेसीबी से हटाया गया है। इसके अलावा खातेदार को पाबंद भी कर दिया है। ताकि आगे अवैध प्लॉटिंग नहीं हो। यहां मंगलम रेजिडेंसी के पीछे भी अवैध प्लॉटिंग मिली। वहां भी यूआईटी के दस्ते ने अवैध रोड को तोडने का काम किया। ताकि आगे प्लॉटिंग नहीं हो सके। जहां यूआईटी ने अवैध प्लॉटिंग होने से रोका है। उसके चारों तरफ अवैध प्लॉटिंग पहले हो चुकी है। जिस पर मकान भी बन गए। कई जगहों पर मकान तेजी से बन रहे हैं। जिसके कारण यूआईटी प्रशासन पर सवाल उठते हैं। एक बार अवैध प्लॉटिंग को रोका जाता है। कुछ महीनों के बाद उसी जगह कॉलोनी बस जाती है। ऐसा पूरे शहर में होता आ रहा है। हर साल यूआईटी 10 से 15 जगहोंपर एग्रीकल्चर प्लॉटिंग को रोकती है। फिर उस जगह दुबारा प्लॉटिंग होती है और मकान बन जाते हैं। एग्रीकल्चर प्लॉटिंग पर बुलडोजर चलाने की केवल दिखावा मात्र की कार्यवाही है।

प्रिंट मीडिया में विज्ञापन छपने से पूर्व अधिप्रमाणन जरूरी

टोंक। विधानसभा उपचुनाव-2024 के दौरान 13 नवंबर को मतदान दिवस होने के तहत 12 व 13 नवंबर को समाचार पत्रों में छपने वाले राजनैतिक दलों व उम्मीदवारों के विज्ञापनों का प्रकाशन अधिप्रमाणन के बाद ही किया जा सकेगा। जिला निर्वाचन अधिकारी डॉ. सौम्या झा ने बताया कि भारत निर्वाचन आयोग के निर्देशानुसार 13 नवंबर को 2024 को देवली-उनियारा विधानसभा क्षेत्र के लिए मतदान होगा। आयोग के निर्देशानुसार समस्त राजनैतिक दल व देवली-उनियारा विधानसभा क्षेत्र से निर्वाचन में भाग ले रहे सभी उम्मीदवार 12 व 13 नवंबर को प्रिंट मीडिया में विज्ञापन देने से पूर्व जिला स्तरीय विज्ञापन अधिप्रमाणन समिति से प्रिंट मीडिया के विज्ञापनों का अधिप्रमाणन "प्री-सर्टिफिकेशन" करवाकर ही प्रिंट मीडिया में विज्ञापन प्रसारित करवा सकते हैं।

100 मतदान दलों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया

दौसा। पंडित नवल किशोर शर्मा राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय दौसा में विधानसभा उप चुनाव मतदान दलों का द्वितीय प्रशिक्षण आयोजित किया गया। जिसमें 100 मतदान दलों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। प्रशिक्षण में 10 डीएलएमटी, 20 एएलएमटी ने प्रशिक्षण प्रदान किया। प्रशिक्षण में मतदान दलों को पोल प्रोसेस, ईवीएम वीवीपैट, पीएस-05 एवं विभिन्न प्रपत्रें को भरने के सम्बन्ध में दक्ष प्रशिक्षको द्वारा विस्तृत जानकारी प्रदान की गई।

दीपावली स्नेह मिलन समारोह

फुलेरा । कस्बे के निकटवर्ती धार्मिक स्थल भन्दे बालाजी परिसर स्थित ब्रह्म प्रजापति समाज धर्मशाला में मंगलवार को दोपहर 12:30 बजे प्रजापति विकास एवं विवाह समिति के तत्वाधान में प्रजापति समाज का दीपावली स्नेह मिलन समारोह मनाया गया। वहीं विकास कार्यों को लेकर एक बैठक भी आयोजित की गई।

विराट कोहली आप हर बार की तरह इस बार भी दमदार वापसी करो। क्योंकि आपने पहले भी ऐसा किया है।

- युवराज सिंह

पूर्व भारतीय बल्लेबाज, विराट कोहली के जन्मदिन पर बोलते हुए।

खेल जगत

आज का खिलाड़ी

विनेश फोगाट

भारतीय रेसलर विनेश फोगाट विधायक बन चुकी हैं। रेसलिंग में अपनी विरोधियों को पटखनी देने वाली विनेश बीते महीने चुनाव मैदान में प्रचार करती नजर आईं। लोगों से वोट मांगती नजर आईं। इसके बदले में जनता ने उन्हें काफी प्यार दिया और उन्हें जीत भी मिली। इस दौरान उनके अंदर का खिलाड़ी अभी भी जिंदा है, बीते सात दिन में तीन बार इशारा दिया है कि जिससे लगता है कि ये विधायक फिर से रेसलर बन सकती है।सोमवार को विनेश ने पेरिस ओलंपिक की अपनी तस्वीर शेयर की। वह इस तस्वीर में बहुत जोश में नजर आ रही हैं।

क्या आप जानते हैं ?... वर्तमान में 80 से अधिक देश पोलो खेलते है। पोलो 1900 से 1936 तक ओलम्पिक खेल था और इसे अब एक बार फिर अन्तर्राष्ट्रीय ओलम्पिक समिति ने मान्यता प्रदान की है।

बॉर्डर-गावस्कर ट्रॉफी से पहले रोहित शर्मा को गावस्कर की दो टूक

नई दिल्ली, 5 नवम्बर। दिग्गज सुनील गावस्कर का मानना है कि अगर ऑस्ट्रेलिया दौरे पर रोहित शर्मा एक से अधिक टेस्ट मैच मिस करते हैं तो पूरी सीरीज में उन्हें कप्तानी नहीं करनी चाहिए। बतौर खिलाड़ी दौरे पर होना चाहिए। गावस्कर ने दो टूक भारतीय क्रिकेट टीम के प्रबंधन से स्पष्टता की मांग की। उन्होंने जोर देकर कहा कि ऑस्ट्रेलिया दौरे पर भारतीय कप्तान का पहला मैच खेलना अहम है। भारतीय कप्तान रोहित शर्मा निजी कारणों के चलते ऑस्ट्रेलिया सीरीज के पहले टेस्ट मैच से टूक सकते हैं। रोहित शर्मा की अनुपस्थिति में जसप्रीत बुमराह कप्तानी कर सकते हैं। न्यूजीलैंड के खिलाफ टेस्ट सीरीज में वह उपकप्तान थे।

सुनील गावस्कर ने कहा कि, देखिए कप्तान को पहला टेस्ट खेलना जरूरी होता है। अगर इंजर्ड हो गया तो बात अलग है, पर जब आपका जो लीजर है पहले ही बैटल में मौजूद नहीं है तो डिप्टी लीडर पर जो प्रेसर बनता है वो अलग सा प्रेसर होता है। उसको फिर

जिम्मेदारी लेना कप्तानी की वो आसान नहीं होगा।

सुनील गावस्कर ने कहा कि, मुझे पता नहीं हम भी पढ़ते आए हैं कि पहले टेस्ट में नहीं खेलेंगे रोहित शर्मा। शायद आप कह रहे हैं कि दूसरे में भी नहीं खेलेंगे। तो अगर ऐसी बात है तो मैं ये कहता हूं अभी-अभी भारतीय सेलेक्शन कमिटी को ये बोलना चाहिए, अजीत अगरकर को ये बोलना चाहिए भाई आपको जो करना है रेस्ट करना रेस्ट कर लो, जो भई आपकी पर्सनल रीजन है।

सुनील गावस्कर ने कहा कि, अगर आप 2/3 मिस कर रहे हैं तो आप इस टूर के लिए प्लेयर के नाते जाइए। दूसरे टेस्ट तीसरे टेस्ट आपको जब चाहिए जाइए। पर हम इस टूर का कप्तान बदलकर जो वाइस कैप्टन है उसको हम कप्तान बनाएंगे क्योंकि क्लैरिटी होनी चाहिए। कप्तानी की जिम्मेदारी है। खासकर हम यहां 3-0 हार गए हैं तो लीडर को होना जरूरी है। बिल्कुल जरूरी है।

भारतीय मुक्केबाज मनदीप जांगड़ा ने डब्ल्यूबीएफ का विश्व खिताब जीता

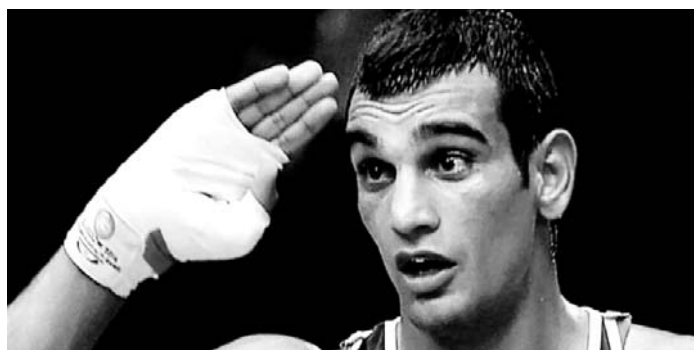

नई दिल्ली, 5 नवम्बर। भारतीय पेशेवर मुक्केबाज मनदीप जांगड़ा ने केमैन आइलैंड में ब्रिटेन के कोनोर मैकिन्टोश को हराकर विश्व मुक्केबाजी महासंघ (डब्ल्यूबीएफ) का सुपर फेदरवेट विश्व खिताब जीता। पूर्व ओलंपिक रजत पदक विजेता रॉय जोन्स जूनियर से प्रशिक्षण लेने वाले 31 वर्षीय जांगड़ा ने अपने पेशेवर करियर में अब तक केवल एक हार का सामना किया है। ब्रिटिश मुक्केबाज के खिलाफ मुकाबले में अधिकतर राउंड में उनका पलड़ा भारी रहा। जांगड़ा ने शुरू से ही दमदार मुक्के जमाए और पूरे 10 राउंड में अपना दमखम बरकरार रखा। दूसरी तरफ ब्रिटिश मुक्केबाज को गति बनाए रखने के लिए संघर्ष करना पड़ा। कॉनर ने वापसी की कोशिश की, लेकिन जांगड़ा ने अधिकतर राउंड में बढ़त बनाए रखी।

जांगड़ा ने मीडिया विज्ञिप्त में कहा, "यह मेरे करियर की सबसे बड़ी जीत में से एक है। मैंने इसे हासिल करने के लिए वर्षों तक कड़ी मेहनत की। यह मेरे लिए गर्व की बात है कि मैं देश का नाम रोशन कर सका।" हरियाणा के रहने वाले जांगड़ा ने 2021 में पेशेवर मुक्केबाजी में पदार्पण किया। उन्हें उम्मीद है कि यह खिताब अधिक भारतीय मुक्केबाजों को पेशेवर बनने के लिए प्रेरित करेगा।

उन्होंने कहा, "मुझे लगता है कि यह खिताब देश के अन्य मुक्केबाजों के लिए रास्ता खोलेगा और वे पेशेवर मुक्केबाजी में अपना करियर बनाने का फैसला भी करेंगे। हमारे मुक्केबाज अच्छे हैं और उनमें प्रतिभा की कोई कमी नहीं है। अगर उन्हें अच्छे प्रमोटर और मैनेजर मिलें तो वे विश्व चैंपियन भी बन सकते हैं।"

जांगड़ा ने अपने पेशेवर करियर में अभी तक 12 मुकाबलों में से 11 जीते हैं, जिनमें सात नॉकआउट जीत शामिल हैं। उन्होंने एमेच्योर मुक्केबाज के रूप में 2014 में राष्ट्रमंडल खेलों में रजत पदक जीता था।

शाकिब अल हसन के एक्शन की होगी जांच

लंदन, 5 नवंबर। काउंटी चैंपियनशिप में सरी के लिए खेलने के दौरान अंपायर्स ने शाकिब अल हसन के गेंदबाजी एक्शन को लेकर दी गई रिपोर्ट के बाद इंग्लैंड एंड वेल्स क्रिकेट बोर्ड (ईसीबी) ने बंगलादेश के ऑलराउंडर शाकिब से अपने गेंदबाजी एक्शन की जांच करवाने के लिए कहा है। हालांकि शाकिब को खेलने से नहीं रोका गया है लेकिन यह पता चला है कि शाकिब के एक्शन की जांच कराने के लिए बातचीत चल रही है। यह जांच अगले कुछ सप्ताह में हो सकती हैं। शाकिब के दो दशक लंबे करियर में यह पहली बार है जब उनका गेंदबाजी एक्शन किसी तरह की जांच का विषय बना है। इस दौरान शाकिब ने अपने अंतरराष्ट्रीय करियर में 447 मैचों में 712 विकेट लिए हैं, जिसमें 71 टेस्ट में 246 विकेट शामिल हैं। सितंबर में टॉन्टन में सोमरसेट के खिलाफ खिताबी मुकाबले में 37 वर्षीय शाकिब ने नौ विकेट चटकाए थे। 2010-11 के बाद शाकिब पहली बार काउंटी चैंपियनशिप में खेल रहे थे। इंग्लैंड के आठ खिलाड़ियों के राष्ट्रीय टीम में होने के कारण, विल जैक्स और डैन लॉरेंस जैसे दो प्रमुख स्पिनरों की अनुपस्थिति में शाकिब ने सरी के साथ कम समय का करार किया था। शाकिब सोमरसेट को 111 रनों से जीत हासिल करने से नहीं रोक सके और सरी लगातार अपना तीसरा चैंपियनशिप खिताब जीतने में सफल नहीं हो पाया। उस मैच में शाकिब ने 63 ओवर से अधिक की गेंदबाजी की थी लेकिन एक बार भी उनकी गेंदबाजी के दौरान थ्रो करने का हवाला देकर किसी गेंद को नो बॉल करार नहीं दिया गया था। अब यह बात निकलकर सामने आई है कि मैदानी अंपायर्स ने उनके गेंदबाजी एक्शन को संदिग्ध पाया था।

गोल्ड मेडलिस्ट की लैंगिक पहचान पर बवाल, ट्रंप ने मुद्दे को दी हवा

पेरिस, 5 नवम्बर। पेरिस 2024 ओलंपिक में काफी विवाद देखने को मिले। इन्हीं में से एक विवाद जो काफी सुर्खियों में रहा, अल्जीरिया की इमान खलीफ अपनी लैंगिक पहचान को लेकर विवादों में रही। वहीं ये मुद्दा एक बार फिर उठा है और अल्जीरियाई मुक्केबाज फिर जांच का सामना कर रही हैं। इस मामले में अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति और 2024 के रिपब्लिकन उम्मीदवार डोनाल्ड ट्रम्प समेत दुनिया भर की जानी-मानी हस्तियों की प्रतिक्रियाएं आ रही हैं।खलीफ को अपने जेंडर को लेकर नए सवालों का सामना करना पड़ रहा है, क्योंकि एक लीग हुई मेडिकल रिपोर्ट में दावा किया गया है कि 25 वर्षीय मुक्केबाज में गर्भाशय नहीं है, अंडकोष हैं और एक बढ़े हुए क्लिटरिस जैसा दिखने वाला माइक्रोपेनिस है। खलीफ ने पेरिस ओलंपिक में महिलाओं के 66 किग्रा वर्ग में गोल्ड मेडल जीता था। इस दौरान उन्होंने इटली की मुक्केबाज को हराया था। ओलंपिक खेलों में उनकी हिस्सेदारी ने बड़े पैमाने पर विवाद पैदा कर दिया था उन्हें कथित तौर पर गुणसूत्र परीक्षण में फेल होने के बाद नई दिल्ली में 2023 विश्व चैंपियनशिप के गोल्ड मेडल मैच से पहले अंतर्राष्ट्रीय मुक्केबाजी संघ ने निलंबित कर दिया था। हालांकि, खलीफ ने अंतर्राष्ट्रीय ओलंपिक समिति ने खलीफ को पेरिस ओलंपिक 2024 में हिस्सा लेने की मंजूरी दे दी थी। बहरहाल लीक हुई मेडिकल रिपोर्ट खलीफ की और अधिक जांच को बढ़ावा देने वाली है। खलीफ को अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प के अंतिम कैंपेन वीडियो में भी दिखाया गया है। वीडिटो में उन चीजों के बारे में बात की गई है जो वर्तमान बिडेन प्रशासन के तहत गलत हो गई हैं। वीडियो में खलीफ की तस्वीर को

2036 ओलंपिक की मेजबानी के लिए भारत ने बढ़ाया पहला कदम

आईओए ने आईओसी को लिखा पत्र

नई दिल्ली, 5 नवम्बर। भारत ने 2036 ओलंपिक और पैरालंपिक खेलों की मेजबानी करने के लिए एक कदम आगे बढ़ा दिया है। भारतीय ओलंपिक संघ ने इस संबंध में अंतर्राष्ट्रीय ओलंपिक समिति को पत्र भेजा है। केंद्रीय खेल मंत्रालय के सूत्रों के मुताबिक, आईओए ने एक अक्टूबर को आईओसी को आधिकारिक रूप से भविष्य में ओलंपिक की मेजबानी करने की इच्छा जताई और पत्र लिखा। भारत लंबे समय से 2036 ओलंपिक की मेजबानी करने की इच्छा जता चुका है। खुद प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भी कई मौकों

पर इस बारे में राय रखी और अपने इरादे जाहिर किए हैं। हालांकि, अब भारत ने इस दिशा में बड़े कदम उठाए हैं।

पीएम मोदी सितंबर में अमेरिका दौरे पर थे उस दौरान उन्होंने वहां न्यूयॉर्क के इनडोर स्टेडियम में आयोजित कार्यक्रम में कहा था कि, अभी कुछ दिन पहले पेरिस ओलंपिक खत्म हुआ है। अगले ओलंपिक का मेजबान अमेरिका है। बहुत जल्द आप भारत में भी ओलंपिक देखेंगे। हम 2036 ओलंपिक की मेजबानी के लिए हर संभव प्रयास कर रहे हैं। इससे पहले पीएम मोदी ने स्वतंत्रता दिवस के मौके पर लाल किले से देश को संबोधित करते हुए ओलंपिक 2036 की मेजबानी पर बड़ी बात कही थी।

उन्होंने कहा था कि भारत ने ओलंपिक 2036 की मेजबानी के लिए प्रक्रिया शुरू कर दी है। पीएम ने जानकारी देते हुए बताया था कि आईओए ने इस आयोजन को भारत में लाने के लिए आईओसी के भावी मेजबान आयोग के साथ बातचीत शुरू कर दी है।

राठी ने लॉन टेनिस चैम्पियनशिप में जीता स्वर्ण

सोनीपत, 5 नवंबर। केन्या में आयोजित इंटरनेशनल लॉन टेनिस चैंपियनशिप में लिटल एंजल्स स्कूल सोनीपत के होनहार खिलाड़ी अर्जुन राठी ने प्रतियोगिता के फाइनल मुकाबले में अर्जुन पंडित को 6-0, 6-3 के सेट स्कोर से हराकर स्वर्ण पदक जीता। इस प्रतियोगिता में देश-विदेश से 32 खिलाड़ियों ने भाग लिया। अर्जुन राठी की इंटरनेशनल स्तर पर यह तीसरी जीत है। अर्जुन राठी के अभिभावक इससे बहुत खुश थे। उन्होंने इस जीत का श्रेय विद्यालय प्रशासन को देते हुये कहा कि विद्यालय द्वारा प्रदान की गई खेल सुविधाओं के कारण आज अर्जुन इन ऊंचाइयों पर पहुंचा है। विद्यालय के अध्यक्ष तरसेम कुमार गर्ग, सचिव डॉ विशाल गर्ग और विद्यालय की प्रधानाचार्य आशा गोयल ने अर्जुन राठी को बधाई दी और उनको भविष्य में भी बेहतर खेल प्रदर्शन के लिये प्रेरित किया।

आईपीएल की मेगा नीलामी सऊदी अरब में 24 और 25 को होगी

नई दिल्ली, 5 नवंबर। इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) 2025 की मेगा नीलामी सऊदी अरब के जेद्दाह में 24-25 नवंबर को आयोजित की जायेगी। यह दूसरी बार है जब आईपीएल की नीलामी विदेश में हो रही है।

हाल ही में सभी फ्रैंचाइजी ने कुल मिलाकर 46 खिलाड़ियों को रिटेन किया था, जिसमें दक्षिण अफ्रीका के विकेटकीपर- ऑलराउंडर हेनरिक क्लासेन को सनराइजर्स हैदराबाद ने 23 करोड़ रूपये सबसे महंगे खिलाड़ी के रूप में रिटेन किया है। भारत के पूर्व कप्तान विराट कोहली (रॉयल चैलेंजर्स बैंगलोर) और वेस्टइंडीज के विकेटकीपर-बल्लेबाज निकोलस पूरन (लखनऊ सुपर जायंट्स) 21करोड़ रुपये की राशि के साथ संयुक्त रूप से दूसरे सबसे महंगे रिटेंशन रहे।

दो दिवसीय नीलामी में राजस्थान रॉयल्स के पास 41करोड़ का सबसे छोटा बजट होगा क्योंकि राजस्थान की टीम उन दो टीमों में से एक थी जिन्होंने अधिकतम छह खिलाड़ियों को रिटेन किया है। मौजूदा चैंपियन कोलकाता नाइट राइडर्स ने भी अपने मुख्य समूह के छह खिलाड़ियों को रिटेन किया है, लेकिन उनके पास 51करोड़ का बजट होगा क्योंकि उनके रिटेंशनों में दो अनकैप्ड खिलाड़ी शामिल हैं। दोनों टीमों के पास नीलामी में राइट-टू-मैच (आरटीएम) कार्ड नहीं होंगे।

पंजाब किंग्स के पास सबसे मजबूत बजट होगा, जो 110.5 करोड़ रुपये है, क्योंकि उन्होंने कुल 120 करोड़ के बजट में से केवल 9.5 करोड़ रुपये अनकैप्ड जोड़ी शशांक सिंह और प्रभसिमरन सिंह को रिटेन करने में खर्च किए हैं। पंजाब के पास नीलामी में अधिकतम चार आरटीएम कार्ड होंगे। मुंबई इंडियंस, चेन्नई सुपर किंग्स, गुजरात टाइटन्स, सनराइजर्स और सुपर जायंट्स ने पांच खिलाड़ियों को रिटेन किया है, जिससे उनके पास नीलामी में केवल एक आरटीएम कार्ड होगा।

राजस्थान - हैदराबाद रणजी मैच आज से एसएमएस स्टेडियम पर

जयपुर 5 नवम्बर , आरसीए एडहॉक कमेटी संयोजक व विधायक जयदीपबिहाणी के अनुसार बीसीसीआई के घरेलू क्रिकेट सत्र 2024 -25 की राष्ट्रियक्रिकेट प्रतियोगिता रणजी ट्रॉफी के अपने पहले तीन रणजी मुकाबलों में राजस्थान रणजी टीम ने शानदार शुरुआत करते हुए जयपुर में खेले गए पहले मैच मेंपॉन्डिचेरी के विरुदपहली पारी की बढ़त व अपने दूसरे मैच धर्मशाला में हिमाचल के विरूद मिली शानदार जीत तथा जयपुर मे गुजरात के विरुद खेला गया तीसरा रणजी मैच ड्रा रहा। कल दिनांक 6 नवम्बर 2024 से जयपुर के सवाई मान सिंह स्टेडियम पर राजस्थान रणजी टीम का चौथा रणजी मुकाबला हैदराबाद के साथ खेला जायेगा।पहले तीन रणजी मुकाबलों में राजस्थान टीम ने बल्लेबाजी व गेंदबाजी दोनों के क्षेत्रों में शानदार प्रदर्शन किया था । आज मैच से पूर्व राजस्थान टीम ने कप्तान दीपक हुड्डा व मुख्य कोच राजेश बिश्नोई व अन्य स्पोर्ट स्टाफ के साथ आरसीए अकादमी पर जमकर अभ्यास किया।राजस्थान के विरुदरणजी मैच के लिए हैदराबाद टीम ने भी जयपुर पहुंचकर आज सुबह आरसीए अकादमी पर अभ्यास किया।

आरसीए स्टैटिशनओ पी शर्मा के अनुसार रणजी ट्रॉफी में पूर्व में राजस्थान - हैदराबाद टीमों में मध्य कुल 11 रणजी मैच खेले गए हैं जिनमे राजस्थान ने 4 मैच में जीत दर्ज की है , गुजरात ने 2 मैचों में जीत दर्ज की व 5 मैच ड्रा समाप्त हुए हैं।

एचआईएल के लिए नई वेबसाइट लांच और कार्यक्रम की घोषणा

नई दिल्ली, 5 नवंबर। हॉकी इंडिया लीग (एचआईएल) के 2024-2025 संस्करण के लिए मंगलवार को एक समर्पित लीग वेबसाइट का शुभारंभ किया गया तथा बहुप्रतीक्षित सीजन के कार्यक्रम की घोषणा की गई। एचआईएल की नई वेबसाइट 'हॉकीइंडियालीगडॉटकॉम' के जरिए दुनिया भर के प्रशंसकों तक लीग की ताजा खबरे, मैचों के कार्यक्रम, पूरी टीम की सूची और एक्सक्लूसिव वीडियो कंटेंट की पहुंच आसान होगी। इस वेबसाइट को एक आकर्षक और इमर्सिव अनुभव देने के लिए तैयार किया गया है। वेबसाइट एचआईएल से जुड़ी सभी चीजें उपलब्ध होगी जो कि प्रशंसकों और खिलाड़ियों को पहले से कहीं अधिक हॉकी के करीब लायेंगी। खिलाड़ियों की व्यापक नीलामी के बाद, आठ पुरुष और चार महिला टीमें इस प्रतियोगिता के लिए तैयार हैं। यह अब तक का सबसे बड़ा और सबसे बेहतरीन एचआईएल सीजन होने वाला है। पुरुषों की लीग 28 दिसंबर को राउरकेला में शुरू होगी, इसके मैच दो चरणों में होंगे और एक फरवरी 2025 को अंतिम मुकाबला होगा।

// अन्डर-15 एवं अन्डर-17 नेशनल रैंकिंग बैडमिन्टन प्रतियोगिता //

राजस्थान के कृष मीणा और भानू प्रताप, शिवम हाड़ा, वेदान्त जोशी ने दूसरा दौर भी जीता

जयपुर, 5 नवम्बर। राजस्थान के कृष मीणा और भानू प्रताप जाटोलिया यहां सवाई इण्डोर स्टेडियम में चल रही अन्डर-15 एवं अन्डर-17 नेशनल रैंकिंग बैडमिन्टन प्रतियोगिता के क्वालिफाइंग राउण्ड के दूसरे दौर में भी जीत दर्ज करन में सफल रहें। कृष मीणा ने लड़को के अन्डर-17 आयु वर्ग में दिल्ली के समित सूद को 15-9, 15-10 से हराया। भानू प्रताप जाटोलिया ने आन्ध्र प्रदेश के कृष्णा कार्तिक को 15-8, 15-13 से शिकस्त दी। अन्य मुकाबलों में राजस्थान के शिवम हाडा ने तेलंगाना के राहुल साई को 15-5, 15-11 से, वेदान्त जोशी ने दिल्ली के भव्य दुहान को 15-12, 155 से, रोहन बिश्नोई ने तमिलनाडु के मोनिश राजाराम को संघर्षपूर्ण मुकाबले में 15-13, 3-15, 16-14 से पराजित किया। लड़कियों के अन्डर-17 आयु वर्ग में राजस्थान की अदविता शर्मा ने हरियाणा की अलिशा गोस्वामी को 8-15, 15-4, 15-12 से पराजित किया। राजस्थान के हेमांक जाखड़, कृष मीणा, खुशी पूनिया, शेरिल चौधरी और

सानिया राव को वॉक ओवर मिला।

लड़को के अन्य मुकाबलों में हर्षवर्धन मान्झु ने पंजाब के तुषार नन्दा को 15-5, 11-15, 15-9 से, हर्ष स्वामी ने दिल्ली के आदित्य अग्रवाल को 15-12, 15-12 से हराया। लड़कियों के अन्य मुकाबलों में देशना जैन ने सिद्धिमा साहू को 15-8, 15-7 से शिकस्त दी। लड़कों के मुकाबलों में सन्यम कोठारी ने गुजरात के प्रज्ञान को 15-5, 15-5 से, आयुष यादव ने गुजरात के श्लोक भालोदिया को 15-8, 15-3 से हराया। लड़कियों के मुकाबलों में रितिका झमनानी ने आन्ध्र प्रदेश की स्टुई ग्रेस रेड्डी को 15-10. 15-8 से तथा अन्वी राठौड़ ने दिल्ली की मिताली बिष्ट को 15-2, 15-6 से पराजित कर तीसरे दौर में प्रवेश किया।

लड़कों के मुकाबलें में सचिन चौधरी ने असम के फलोरिस बरूआ को 15-10, 16-18, 16-14 से, सात्विक अग्रवाल ने राजस्थान के ही सफी खान को 15-8, 15-9 से, अर्थव माहेश्वरी ने मध्य प्रदेश के सिदक सिंह को 15-8, 16-14 से, नेहिल सिंह मेहरा ने हिमचाल प्रदेश के अस्तित्व को 15-7, 15-10 से, निधिश ने महाराष्ट्र अनवीत नेने को 15-7, 15-6 से, जयवर्धन सिंह ने चंडीगढ़ के तेजस देवाली को 15-5, 15-8 से, यश सोनी ने तुस्या को 15-8, 15-5 से, सोनू मीणा ने नील को 15-10, 15-8 से शिकस्त दी।

राजस्थान बैडमिन्टन संघ के उपाध्यक्ष मनोज दासोत के अनुसार बुधवार को 400 से अधिक मुकाबले खेले जायेंगे। मैच सुबह 9 बजे से शुरू होंगे। उन्होंने बताया कि डिप्टी रेफरी लोकेश सोनी, डिप्टी रेफरी चन्द्रकान्त शर्मा और तकनीकी अधिकारी व आरबीए ऑफिस इन्चार्ज विनीत शर्मा बखुबी अपने कार्य निभा रहे है।

जयपुर के टर्फ फुटबॉल ग्राउंड में लगी आग, बेल्जियम से आई करोड़ों की घास खाक

जयपुर 5 नवंबर। कहावत है कि जब रोम जल रहा था, तो नीरो सुख और चैन की बाँसुरी बजा रहा था। ये कहावत साबित होती है राजस्थान की राजधानी जयपुर के विद्याधर नगर स्थित इंटरनेशनल फुटबॉल स्टेडियम में हाल ही में आग लगने की घटना को लेकर। करोडों रुपयों से बने स्टेडियम का फुटबॉल मैदान आग से जल रहा था और जिम्मेदार अधिकारियों को इसकी खबर तक नही लगी, वो दिवाली की छुट्टी मनाने में व्यस्त थे। दिवाली के समय आतिशबाजी के कारण ये आग लगी है, ये कहना मुश्किल है। इस घटना का कोई गवाह नही है। स्टेडियम के एक गोल पोस्ट की तरफ लगी सिंथेटिक घास जलकर राख हो गई।

फीफा द्वारा मान्यता प्राप्त भारत के इस दूसरे फुटबॉल ग्राउंड में राजस्थान सरकार ने करोड़ों रुपए खर्च करके बेल्जियम से आर्टिफिशियल ग्रीन घास मंगवाई, लेकिन उसको अच्छे से संभाल नहीं सकी। बेल्जियम से लाई गई घास में दिवाली के दिन आग लग गई और फीफा ने इस ग्राउंड को इंटरनेशनल सर्टिफिकेट जारी किया है, जो 12 जुलाई 2027 तक मान्य है। इस ग्राउंड पर लगभग 3000 दर्शक मैच का आनंद ले सकते हैं और लगभग 20 हजार दर्शकों के खड़े रहने की व्यवस्था की गई।

राज्य सरकार की ओर से इस फुटबॉल ग्राउंड को तैयार किया गया।

मुख्यमंत्री भजन लाल शर्मा द्वारा अक्टूबर में फुटबॉल लीग का उद्घाटन किया गया था। इस फुटबॉल ग्राउंड को 13 करोड़ की लागत से तैयार किया गया है। फीफा मानकों से एप्रूव्ड है। उद्घाटन के बाद से स्टेडियम में कई टूर्नामेंट का आयोजन हो चुका है। फुटबॉल ग्राउंड के चारों तरफ सिंथेटिक ट्रैक भी बिछाए गए हैं, जिससे खिलाड़ी अच्छी तरह से प्रैक्टिस कर सकें और ताज्जुब की बात यह है कि इंडियन फुटबॉल लीग का कैम्प और खिलाड़ियों की प्रैक्टिस इस जली हुई घास में करवाना फुटबॉल फैंस के लिए चिंता का विषय बताया जा रहा है।

राजस्थान फुटबॉल एसोसिएशन के सचिव दिलीप सिंह ने बताया कि इस बारे में उन्हें जानकारी मिली है और जल्द ही इस ग्राउंड को फिर से दुरुस्त करवाया जाएगा। यह फुटबॉल ग्राउंड यूनाइटेड फुटबॉल क्लब का होम ग्राउंड है। इतनी महंगी घास की सुरक्षा और रखरखाव में इतनी बड़ी लापरवाही नहीं होनी चाहिए थी।

अब देखना ये है कि क्या राज्य सरकार, राजस्थान फुटबॉल संघ, राजस्थान यूनाइटेड फुटबाल क्लब जल्द से जल्द मैदान को ठीक करवा कर संतोष ट्रॉफी जयपुर के विद्याधर नगर स्टेडियम में करवा सकती है या हैदराबाद के फुटबाल मैदान पर जाने देगी?

संतोष ट्रॉफी का आयोजन वैशाली नगर स्थित रॉयल फुटबाल क्लब मैदान पर कराने का विचार

जयपुर 5 नवंबर। आरएफए सचिव दिलीप सिंह ने बताया कि इस मैदान पर राजमाता जीजाबाई राष्ट्रीय महिला प्रतियोगिता का आयोजन किया गया था। भारतीय

महासंघ की ओर से इस ट्रॉफी का आयोजन किया गया जिसमें राजस्थान फुटबाल संघ, राजस्थान खेल परिषद और राजस्थान यूनाइटेड फुटबाल क्लब की संयुक्त मेजबानी थी। इसके बाद राजस्थान को संतोष ट्रॉफी और आई लीग फुटबॉल चैंपियनशिप की मेजबानी भी मिली है। अब मैदान पर आग लगने के कारण मैच के आयोजन पर संकट खड़ा हो गया। लंबे समय बाद कोई बड़ी प्रतियोगिता की मेजबानी राजस्थान को मिली थी, लेकिन ग्राउंड पर आग लग जाने के कारण अब मैचों के आयोजन को लेकर संकट खड़ा होता नजर आ रहा था लेकिन जयपुर में ही संतोष ट्रॉफी टूर्नामेंट कराने का प्रयास कर रहे है। राजस्थान फुटबाल संघ के सचिव दिलीप सिंह शेखावत ने साफ किया कि अगर हम किसी कारण संतोष ट्रॉफी जयपुर के विद्याधर नगर स्टेडियम में नही करवा पाए तो वैशाली नगर स्थित रॉयल फुटबाल क्लब मैदान पर करवा सकते है। जिसके मालिक डॉ. दिलीप चुण्डावत है, उनसे बातचीत हो गई है साथ ही मैदान को संतोष ट्रॉफी टूर्नामेंट कराने के लिए तैयारियां जोर-शोर से चल रही है। कुछ दिनों बाद ऑल इंडिया फेडरेशन की तरफ से रॉयल फुटबाल मैदान को जांचने के लिये टेक्निकल अधिकारी अमित जयपुर आने वाले है।

'ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ मजबूत वापसी कर सकता है भारत'

सिडनी, 5 नवम्बर। आस्ट्रेलिया के तेज गेंदबाज जोश हेजलवुड का मानना है कि न्यूजीलैंड से श्रृंखला में करारी हार से भारत का आत्मविश्वास डगमगा गया होगा, लेकिन

उन्होंने अपनी टीम को आगाह करते हुए कहा कि भारतीय टीम अधिक आक्रामक होकर 22 नवंबर से शुरू होने वाली बॉर्डर-गावस्कर ट्रॉफी में जोरदार वापसी कर सकती है। भारत को न्यूजीलैंड से तीनों मैच में हार का सामना करना पड़ा। यह पहला अवसर है जबकि घरेलू धरती पर तीन या इससे अधिक टेस्ट मैच की श्रृंखला में उसका सूपड़ा साफ हुआ। हेज़लवुड ने सिडनी मॉर्निंग हेराल्ड से कहा, "वह (भारत) घायल शेर की तरह वापसी करने के लिए प्रतिबद्ध होगा। श्रृंखला शुरू होने पर ही हमें पता चलेगा की चीजें कैसे आगे बढ़ रही हैं।" घरेलू धरती पर हार न केवल भारत के टेस्ट क्रिकेट इतिहास के सबसे बुरे दौर में से एक है, बल्कि इससे रोहित शर्मा की अगुवाई वाली टीम की अगले साल के विश्व टेस्ट चैम्पियनशिप (डब्ल्यूटीसी) फाइनल के लिए क्वालीफाई करने की संभावनाओं को भी करारा झटका लगा है। लगातार तीन हार का मतलब है कि भारत ने डब्ल्यूटीसी तालिका में ऑस्ट्रेलिया से अपना शीर्ष स्थान गंवा दिया है।

अमेरिका में रहने वाले भारतीय मूल के वोटर्स ट्रम्प के समर्थन में

हालांकि हैरिस भारतीय मूल की हैं पर इण्डो अमेरिकन वोटर्स को वे पसंद नहीं हैं

-अंजन राय-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 5 नवंबर। अमेरिका की जनता मतदान करने जा रही है, ऐसे में एक स्पष्ट निर्णय यह सामने आया है कि अमेरिका के लोग डॉनल्ड ट्रम्प तथा कमला हैरिस के बीच आधे-आधे बंटे हुए हैं।

राष्ट्रपति चुनाव अभियान के दौरान कुछ आश्चर्यजनक बातें भी हुई हैं- पारंपरिक जनाधार बदल रहे हैं और नई वफादारियाँ उभर रही हैं। उदाहरण के लिए, अश्वेत मतदाताओं को लें, वे पारंपरिक रूप से हैरिस की डैमोक्रैटिक पार्टी के उम्मीदवारों के लिए मतदान करते थे।

लेकिन, इस बार मतदान ट्रम्प व हैरिस के बीच विभाजित है। इस बार कई अश्वेत मतदाता, डैमोक्रैटिक उम्मीदवार के लिए अपनी पारंपरिक पसंद के बजाय ट्रम्प के पक्ष में हैं।

दूसरी स्पष्ट बात यह है, बुद्धिजीवियों का समर्थन, हैरिस की तरफ इकट्ठा हो गया है और डॉनल्ड ट्रम्प का डटकर विरोध कर रहा है। इन लोगों को हैरिस का समर्थन करने की ज़रूरत नहीं थी, लेकिन ऐसा लगता है कि इन्होंने मुख्य रूप से ट्रम्प के प्रति नफरत के कारण ऐसा किया है। इस बार सभी बुद्धिजीवी हैरिस के झण्डे के पीछे एकजुट हो गए हैं।

- **इसका कारण यह भी है, कि कमला हैरिस अपने भारतीय मूल के होने का जिक्र करने से प्रायः कतराती हैं और भारतीय मूल के अमेरिकन वोटर्स पर भी प्रायः मौन ही रहती हैं। शायद उन पर, खुद को अमेरिका के प्रति पूर्ण निष्ठावान साबित करने का दबाव है।**
- **चुनावों में जहां बुद्धिजीवी वर्ग पूरी तरह से हैरिस के पक्ष में एक जुट है, वहीं, अश्वेत मतदाता, जो अब तक डैमोक्रेट्स का वोट बैंक था, ट्रम्प के पक्ष में दिख रहा है।**

भय यह है कि यदि ट्रम्प सत्ता में आ गए तो अमेरिकी लोगों की स्वतंत्रता पर अंकुश लगेगा। वहीं, हैरिस स्वतंत्रता को बढ़ावा देंगी, जिससे हर क्षेत्र में मतभेद की गुंजाइश बढ़ सकती है।

भारतीय दृष्टिकोण से देखा जाए तो, आश्चर्य की बात यह है कि भारतीय मूल के अमरीकी ट्रम्प के पीछे एकजुट हो रहे हैं। भारतीय अमरीकी जनता अब डैमोक्रैटिक पार्टी के मापदंडों के पीछे इकट्ठी नहीं हो रही है। कई भारतीय ट्रम्प के साथ हैं और उनका समर्थन कर रहे हैं।

भारतीय प्रवासियों को लुभाने के लिए ट्रम्प काफी समय से भारत समर्थक लाइन आगे कर रहे हैं। कुछ ही हफ्ते पहले ट्रम्प ने भारतीयों की कड़ी मेहनत करने की संस्कृति, शिक्षा में विश्वास तथा जन्मजात उद्यम को अमेरिका के लिए "ऐसेट" (संपत्ति) बताया था।

दूसरी तरफ, हैरिस ने हिन्दुओं और उनके उद्यमी गुणों के बारे में चुप्पी साध रखी है। हो सकता है कि हैरिस खुद को एक सच्ची अमेरिकी नागरिक के रूप में प्रोजैक्ट करने की उत्सुक रही हों। उन्होंने बार-बार कैलिफोर्निया में अपने स्कूल के दिनों का जिक्र किया और बताया कि कैसे वो नियमित रूप से बस से स्कूल ट्रिप्स पर जाया करती थीं।

उनकी कहानी मध्यम वर्ग के अमेरिका की है, जो बाद में बड़ी सफलता हासिल कर लेता है। दूसरी तरफ डॉनल्ड ट्रम्प को अपने पिता से हज़ारों-करोड़ों की संपत्ति विरासत में मिली थी और वे "वाइट सुप्रिमेसी" (श्वेत वर्चस्व) जैसे आंदोलनों में सबसे आगे रहे थे।

अपने कठोर रूढ़िवादी रूख के साथ, डॉनल्ड ट्रम्प एम.ए.जी.ए. (मेक अमेरिका ग्रेट अगेन) मूल्यों की बात कर रहे हैं और इन मूल्यों को बढ़ावा देने की बात कर रहे हैं। उधर हैरिस, यूरोप में अमेरिका के पारंपरिक मित्रों के प्रति अधिक उदार है।

माना जाता है कि हैरिस का चीन के साथ व्यवहार अधिक नरम है, जबकि ट्रम्प चीन को अमेरिका का "नम्बर वन" दुश्मन मानते हैं।

वे चीन के खिलाफ, हैरिस की तुलना में कहीं अधिक कठोर उपायों की बात कर रहे हैं, जैसे कि चीनी वस्तुओं और सेवाओं पर इतना अधिक उच्च स्तर का टैरिफ (शुल्क), जितना कि हैरिस सोच नहीं पातीं।

भारतीय मूल की होने के कारण, हैरिस को अपने अडॉप्टेड होम (दत्तक घर) के प्रति अपनी निष्ठा साबित करने के लिए अधिक मेहनत करनी पड़ती। अमेरिका के प्रति निष्ठा साबित करना हैरिस के लिए अधिक मुश्किल होगा।

इमिग्रेशन (अप्रवासन) के मुद्दे पर, हैरिस की तुलना में ट्रम्प अधिक सख्त होंगे। हैरिस, संसाधनों को जुटाने तथा अपमानता को कम करने के लिए उच्च आयात की बात करती हैं।

आर्थिक नीति में 'हैरिस, डॉनल्ड ट्रम्प की तुलना में, अमेरिकी अर्थव्यवस्था एवं एक्शन प्रोग्रामों की अधिक सकारात्मक तस्वीर पेश करती हैं।

संसद सत्र 25 नवम्बर को शुरू होगा

नयी दिल्ली, 05 नवंबर। सरकार ने संसद का शीतकालीन सत्र 25 नवंबर से 20 दिसंबर तक आयोजित कराने की मंगलवार को घोषणा की। इस दौरान 26 नवंबर को संविधान दिवस पर संसद के केन्द्रीय कक्ष में संविधान दिवस समारोह का आयोजन किया जायेगा।

- **शीतकालीन सत्र 20 दिसम्बर तक चलेगा।**

संसदीय कार्य मंत्री किरण रिजिजू ने सोशल मीडिया मंच एक्स पर एक पोस्ट में यह जानकारी देते हुये कहा, भारत सरकार की सिफारिश पर माननीय राष्ट्रपति ने संसद के दोनों सदनों के शीतकालीन सत्र 25 नवंबर से 20 दिसंबर 2024 तक आहूत करने के प्रस्ताव को स्वीकृति प्रदान की है।

संसद की कार्यसूची के अनुसार, शीतकालीन सत्र की अवधि में संशोधन भी किया जा सकता है।

रिजिजू ने बताया कि 26 नवंबर को संविधान दिवस पर संविधान को अंगीकार किये जाने की 75वीं वर्षगाँठ के उपलक्ष्य में एक समारोह संसद के केन्द्रीय कक्ष में आयोजित किया जायेगा।

फिर से भाजपा के हिंदुत्व आइकन बने योगी आदित्यनाथ

योगी का "बटेंगे तो कटेंगे" नारा काफी चर्चित हो रहा है

- श्रीनन्द झा -
- राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो -

नई दिल्ली, 5 नवम्बर। लोकसभा चुनावों में उत्तर प्रदेश में भाजपा के खराब प्रदर्शन के बाद, मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की प्रतिष्ठा में भले ही कमी आ गई थी, लेकिन उन्होंने फिर से वापसी करते हुए, भाजपा में हिन्दुत्व के प्रतीक के रूप, अपना पूर्व कद फिर से हासिल कर लिया है।

- **योगी ने हरियाणा की एक चुनावी सभा में यह नारा दिया था, समझा जाता है कि इससे भाजपा को भारी लाभ हुआ हरियाणा में और अब महाराष्ट्र व झारखंड में भी योगी व उनका यह नारा काफी लोकप्रिय हो रहा है।**
- **संघ प्रमुख मोहन भागवत, महासचिव दत्तात्रेय होसबाले और प्रधानमंत्री मोदी तक योगी के इस नारे के प्रशंसक हैं तथा उन्होंने इसका समर्थन किया है।**

झारखण्ड और महाराष्ट्र विधान सभा चुनावों के प्रचार में योगी की जबरदस्त मांग हो रही है तथा उनका "बंटेंगे तो कटेंगे" नारा भाजपा के हल्कों में जबरदस्त हिट हो रहा है। मथुरा में 22 अक्टूबर को आर.एस.एस. प्रमुख मोहन भागवत के साथ हुई उनकी मीटिंग के दो दिन बाद, आर.एस.एस. के महासचिव दत्तात्रेय होसबाले योगी की इस टिप्पणी को, उनके इस नारे को दोहराया था, जो योगी ने हरियाणा चुनावों में काम लिया था और काफी असरदार रहा था। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने भी योगी के इस नारे का समर्थन किया बताते हैं।

रोचक बात यह है कि लोकसभा के चुनाव परिणामों के बाद, योगी 3 नवम्बर को प्रधानमंत्री से पहली बार मिले थे। इससे पूर्व, गत माह हरियाणा के मुख्यमंत्री के शपथ ग्रहण समारोह के बाद, प्रधानमंत्री द्वारा बुलाई गई एन.डी.ए. के मुख्यमंत्रियों की मीटिंग में, वे प्रधानमंत्री के श्रोता के रूप में शामिल जरूर हुए थे। उस दिन, योगी ने गृहमंत्री अमित शाह तथा भाजपा अध्यक्ष जे.पी. नड्डा के साथ लम्बी मीटिंग भी की थीं।

लोकसभा चुनावों में उत्तर प्रदेश में हुई भाजपा की घोर पराजय के बाद के महीनों में, योगी कटघरे में खड़े कर दिये गये थे तथा पार्टी के खोजी लोग यह कहने लगे थे कि 2027 के उत्तर प्रदेश विधानसभा चुनावों में भाजपा उन्हें पार्टी के चेहरे के रूप में प्रोजेक्ट नहीं करेगी। हाल ही में, आर.एस.एस. और भाजपा के शीर्ष नेताओं के साथ हुई मुख्यमंत्री योगी की मीटिंग ऐसे संकेत दे रही हैं कि उन्होंने, कम से कम फिलहाल तो, अपने अस्तित्व के संकट पर विजय पा ली है।

योगी ने आज झारखंड में अपना प्रचार-अभियान कर दिया। उन्होंने एक दिन में तीन जनसभाएं संबोधित कीं। हजारी बाग की सभा में उन्होंने अपना नारा दोहराया : "ये समय बंटने का नहीं है। कांग्रेस ने 1947 से देश को बांटा है।" योगी का "बंटेंगे तो कटेंगे" नारे के महाराष्ट्र में भी गूंजने की संभावना है। महाराष्ट्र में योगी की सभाओं की तिथियों एवं स्थानों को अंतिम रूप दिया जा रहा है।

23 नवम्बर ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

लायेंगी। इसके परिणामस्वरूप, राहुल और प्रियंका की टीमों में टकराव की स्थिति भी बन सकती है।

संगठन में बदलाव अपेक्षित भी है तथा जब भी यह बदलाव होगा, उस समय यह देखना बड़ा रुचिकर होगा कि कौनसा नेता किस खेमे से जुड़ा हुआ है।

अमेरिका में राष्ट्रपति चुनाव के बाद...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

हासिल करना होगा। वर्तमान में 50 स्टेट्स हैं इसलिए जीतने के लिए 26 वोटों की जरूरत होगी। बारहवे संशोधन के इस प्रावधान का अमेरिका के इतिहास में सिर्फ एक बार सन् 1800 के चुनावों में इस्तेमाल हुआ था। यह एक दुर्लभ असाधारण घटना है। लेकिन समान मत मिलने की स्थिति से निपटने के लिए यह व्यवस्था की गई है।

ए.आई. ने चुनाव नतीजे आने के दौरान असंतोष बढ़ने की संभावना बताई। और चेतावनी दी है कि विरोध प्रदर्शन, मार्च, रैली जैसी घटनाएं हो सकती है। ए.आई. ने तनाव बढ़ने, हिंसा होने की चेतावनी दी। हाल ही में आए ए.बी.सी. न्यूज/इप्सॉस सर्वे के अनुसार सिर्फ 29 प्रतिशत अमेरिकन मानते हैं कि ट्रम्प हार स्वीकार कर लेंगे, इससे आशंका है कि चुनाव नतीजों के बाद हिंसा होगी। इसी के चलते वॉशिंगटन डी.सी. में सुरक्षा व्यवस्था बढ़ा दी गई है। विशेषज्ञों ने चेतावनी दी है। चुनाव देश को एकजुट करने की बजाय देश को बांट रहे हैं और अनिश्चितता बढ़ा रहे हैं। रॉयटर्स ने बताया कि जिन राज्यों में कडा मुकाबला है वहां के अधिकारी अफवाहों, साजिशों की खबरों, धमकियों व हिंसा की आशंका वाली खबरों पर भरोसा कर रहे हैं। फिलाडेल्फिया डैट्रॉयट और एटलांटा राज्य जिनके लिए ट्रम्प अक्सर फर्जी वोटिंग के दावे करते हैं, वहां अधिकारियों ने मतगणना प्रक्रिया की सुरक्षा के उपाय किए हैं। फिलाडेल्धिका में जहां मतगणना होनी है उस जगह की सुरक्षा के लिए कांटेदार बाड लगाई गई है। डैट्रॉयर और एटलांटा में मतदान केन्द्रों के खिड़की, दरवाजों पर बुलेटप्रूफ कांच लगाए हैं। विस्कोन्सिन में चुनाव कर्मियों को डीएस्केलेशन टैक्नीकस का प्रशिक्षण दिया गया है तथा मतदान केन्द्रों में बच निकलने का रास्ता बनाया। माहौल खराब होने की स्थिति को देखते हुए। एरिजोना, जहां 2020 में चुनाव में फर्जीवाडे के दावे किए गए थे, में प्रशासन झूठी अफवाहों से निपटने के लिए विशेष प्रयास कर रहा है, खासकर फर्जी वोटर्स की काल्पनिक तस्वीरों से। अन्य राज्यों को भी सुरक्षा को लेकर भारी चिंता है। रॉयटर्स ने बताया कि वॉशिंगटन के गवर्नर ने नैशनल गार्ड यूनिट्स को अलर्ट कर दिया है। यहां कमला हैरिस के भारी अंतर से जीतने की उम्मीद है। यह गत दिनों बैलेट बॉक्स जलाने की खबर आई थी। सी.एन.एन. ने बताया कि नेवाडा और ओरैगॉन में नैशनल गार्ड यूनिट्स को तैयार रखा गया है।

गार्जियन ने ऐसी कई घटनाओं का उल्लेख किया जिसमें चुनाव प्रक्रिया को बाधित करने की कोशिश की गई थी, जिसमें ओरैगॉन व वॉशिंगटन की बैलेट बॉक्स जलाने, पैनसिल्वेनिया में बम की धमकी दिए जाने, सैन एंटोनियों में चुनाव कर्मी व वोटर के बीच हाथा पाई, और एरिज़ोना शेयर में हथियार बन्द आदमी की गिरफ्तारी घटनाएं प्रमुख हैं। उक्त व्यक्ति की साजिश बडे पैमाने पर हिंसा करने की थी।

इन्टरनैशनल क्राईसिस ग्रुप (आई.सी.जी.) ने चेतावनी दी है कि चुनाव सम्बन्धी हिंसा की संभावना बहुत ज्यादा है। बडे पैमाने पर दलगत ध्रुवीकरण होने से नतीजों को अस्तित्व से जोड़ कर देखा जा रहा है। राजनैतिक हिंसा के प्रति समर्थन बढ़ता जा रहा है। अप्रैल में हुए एन.पी.आर./पी.बी.एस. पोल के अनुसार 20 प्रतिशत अमेरिकन मानते है कि देश को ठीक करने के लिए हिंसा जरूरी है।

एजुकेशन प्री-समिट में मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा भाग लेंगे

जयपुर, 5 नवंबर। राइज़िंग राजस्थान से पूर्व, उच्च शिक्षा, स्कूल शिक्षा, संस्कृत शिक्षा, तकनीकी शिक्षा, कौशल एवं उद्यिमता विभाग तथा खेल एवं युवा मामलात के संयुक्त तत्वावधान में 6 नवंबर को "एजुकेशन प्री-समिट 2024" का आयोजन होगा।

होटल इंटरकॉन्टिनेंटल, टोंक रोड, जयपुर में होने वाले इस शिक्षा सम्मेलन में मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा मुख्य अतिथि होंगे तथा उप मुख्यमंत्री प्रेमचंद बैरवा, कर्नल राज्यवर्धन सिंह राठौड़, उद्योग एवं वाणिज्य, सूचना प्रौद्योगिकी एवं संचार, युवा मामले एवं खेल, कौशल, योजना एवं उद्यिमता विभाग और शिक्षा मंत्री मदन दिलावर भी शिरकत करेंगे।

समिट का मुख्य उद्देश्य, शिक्षा क्षेत्र में नवाचार, डिजिटल तकनीकों का उपयोग और निवेश की संभावनाओं पर गहन चर्चा करना है। प्री-समिट की सभी तैयारियां पूरी कर ली गई हैं। तैयारियों के मद्देनज़र, कृष्ण कुणाल, स्कूल शिक्षा, भाषा एवं पुस्तकालय, पंचायती राज (प्रारंभिक शिक्षा) विभाग, नीरज के. पवन, शासन सचिव खेल एवं युवा मामले विभाग, डॉ.आरुषी ए. मलिक शासन सचिव, उच्च एवं तकनीकी शिक्षा विभाग, अविचल चतुर्वेदी, राज्य परियोजना निदेशक एवं आयुक्त स्कूल शिक्षा परिषद सहित विभाग के उच्चाधिकारियों ने आयोजन स्थल पर पहुंचकर तैयारियों का जायजा लिया।

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा

- **आज हो रहे इस प्री-समिट में शिक्षा के क्षेत्र के नवाचार, डिजिटल तकनीकों का उपयोग तथा निवेश की सम्भावनाओं पर गहन चिन्तन होगा।**

'यूपी मदरसा ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

हुए, इससे संबंधित इलाहाबाद उच्च न्यायालय के आदेश को रद्द कर दिया।

शीर्ष अदालत ने कहा कि मदरसा एक्ट मदरसा शिक्षा के लिए वैध ढ़ांचा उपलब्ध करा रहा है, जिसमें एन.सी.ई.आर.टी. के पाठ्यक्रम के अलावा, धार्मिक शिक्षा का भी प्रावधान किया गया है।

अदालत ने कहा कि मदरसों द्वारा उच्च शिक्षा की डिग्री देना गैर कानूनी है क्योंकि यह यूनिवर्सिटी ग्रान्ट्स कमीशन (यू.जी.सी.) एक्ट, 1956 के प्रावधानों के अनुकूल नहीं है।

मुख्य न्यायाधीश डी.वाई. चन्द्रचूड़, न्यायमूर्ति जे.बी. पारदीवाला तथा मनोज मिश्रा की बैंच ने कहा कि जहां "मदरसा एक्ट राज्य विधायिका की वैधानिक क्षमता के अन्दर है", वहीं अधिनियम में "फाजिल" और "कामिल" के तेहत उच्च शिक्षा की डिग्री देना राज्य के दायरे में नहीं है यह यू. जी. सी. एक्ट की धारा 22 के प्रतिकूल है। यू.जी.सी. एक्ट उच्च शिक्षा के मानक एवं स्तर निर्धारित करता है तथा राज्य की विधायिका यू.जी.सी. एक्ट के प्रतिकूल उच्च शिक्षा को नियंत्रित करने की कोशिश नहीं कर सकती।"

सर्वोच्च न्यायालय ने कहा, "राज्य सरकार के अनुमोदन के साथ, बोर्ड ऐसे नियम बना सकता है, जो यह सुनिश्चित करें कि धार्मिक अल्पसंख्यक संस्थाएं, अपने अल्पसंख्यक चरित्र को नष्ट किए बिना, अपेक्षित स्तर की धर्मनिरपेक्ष शिक्षा प्रदान करेंगी।"

सी.बी.आई. ने छापों में 50 लाख रुपए बरामद किये

रांची, 05 नवंबर। झारखंड में विधानसभा चुनाव से आठ दिन पहले मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन के करीबी और उनके विधायक प्रतिनिधि पंकज मिश्रा की मुश्किलें और बढ़ गई हैं। सी.बी.आई. ने पंकज मिश्रा के करीबियों के 20 ठिकानों पर छापेमारी कर 50 लाख रुपये कैश जब्त किया है। सीबीआई सूत्रों ने बताया कि अवैध खनन मामले में झारखंड, पश्चिम बंगाल और बिहार सहित 3 राज्यों में 20 स्थानों पर छापेमारी की गई। छापेमारी के दौरान 50 लाख रुपये नकद, एक किलो सोना और चांदी के कुछ आभूषण बरामद किए गए हैं। जानकारी के अनुसार, साहिबगंज के 11 जगहों पर छापेमारी हुई तो रांची में 3 और कोलकाता और पटना में एक-एक जगह पर रेड किया गया।

- **जिन पर छापे पड़े वे सभी हेमन्त सोरेन के करीबी, पंकज मिश्रा के नज़दीकी सहयोगी हैं।**

पंकज मिश्रा बरहट विधानसभा के विधायक हेमंत सोरेन के प्रतिनिधि हैं। पंकज मिश्रा और कई लोगों के खिलाफ अवैध खनन मामले में सी.बी.आई. ने 2023 में एफ.आई.आर. दर्ज की थी।

योगेन्द्र पवार को नेतृत्व सौंपने का संकेत दिया शरद पवार ने

उन्होंने कहा, 30 साल मैंने जिम्मेवारी निभाई, 30 साल अजित को सौंपी, अब 30 साल योगेन्द्र को देने का समय आ गया

मुबंई, 05 नवंबर। महाराष्ट्र में एक तरफ 20 नवंबर को मतदान होना है। वहीं दूसरी तरफ एन.सी.पी. (एस.पी.) के नेता शरद पवार ने अपने भाषण के माध्यम से अलग ही संकेत दिया है। बारामती जिले के सुपा गांव में चुनाव प्रचार के दौरान अपने संबोधन में शरद पवार ने स्पष्ट संकेत दिया कि अब बारामती, के लिए विकास के लिए अगले 30 साल की व्यवस्था करनी होगी। इसलिए अब यूगेंद्र पवार जैसे नए नेतृत्व की जरूरत है। बातों ही बातों में उन्होंने संकेत देते हुए कहा कि जिस तरह 30 साल पहले मैंने अजित पवार पर बारामती की जिम्मेदारी सौंपी थी, अब एक बार फिर वक्त आ गया है कि यूगेंद्र पवार अगले 30 साल बारामती का प्रतिनिधित्व करें।

- **शरद पवार ने कहा कि मैं 14 बार चुनाव लड़ चुका हूँ, और कितनी बार लडूंगा, कहीं न कहीं तो रूकना ही पड़ेगा।**

अपने भाषण में शरद पवार ने कहा, मैं लोकसभा में आप लोगों के दम पर चुनकर गया हूं। लेकिन मैंने तय किया अब लोकसभा चुनाव में नहीं लडूंगा, 25-30 साल लगातार चुनाव जीतने के बाद नई पीढ़ ी को जिम्मेदारी सौंपनी चाहिए। इसलिए 30 साल पहले मैंने यह फैसला किया कि अब मैं लोकसभा का चुनाव नहीं लडूंगा और यहां की राजनीति पर अब मैं ध्यान नहीं दूंगा और मैंने सारी जिम्मेदारी अजित दादा पवार को सौंप दी थी। बीते 25-30 साल से यह जिम्मेदारी अजित दादा पर है। यानी कि पहले के 30 साल यह जिम्मेदारी मुझपर थी और उसके बाद अगले 30 साल अजित दादा पर थी।

उन्होंने कहा, यही कारण है कि अब अगले 30 साल की व्यवस्था करने की जरूरत है। अगर यह व्यवस्था करनी है तो फिर लोगों के बीच जाकर लोगों की समस्या को समझने और नज़रिया होने की जरूरत है। शरद पवार ने कहा कि वह 14 बार चुनाव लड़ चुके हैं, और कितनी बार चुनाव लड़ेंगे। उन्होंने कहा कि कहीं न कहीं जाकर तो उन्हें रुकना ही पड़ेगा।

शरद पवार ने कहा कि मैं सत्ता में नहीं हूं, लेकिन राज्यसभा में जरूर हूं। अभी डेढ़ साल और बाकी हैं। लेकिन इस डेढ़ साल के बाद अब राज्यसभा में जाना है या नहीं, इसका विचार करना पड़ेगा। मैं लोकसभा चुनाव तो नहीं लडूंगा और ना ही कोई अन्य इलेक्शन लडूंगा। कितनी बार चुनाव लड़ेंगे?

"जे.एम.एम...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

डागा की जनसभाओं में रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने कहा, सत्तारूढ़ झारखण्ड मुक्ति मोर्चा, जे.एम.एम. का वास्तव में अर्थ "जमकर मलाई मारो" है, अन्यथा जे.एम.एम. के नेताओं और उनके पी.ए. ने करोड़ों रुपए कैसे जमा किए होते।

उन्होंने कहा, नया राज्य बनने के बाद से अब तक झारखण्ड में 13 मुख्यमंत्री बन चुके हैं और उनमें से कई जेल गए, जबकि, भाजपा का एक भी मुख्यमंत्री जेल नहीं गया। उन्होंने कहा, जे.एम.एम. की डूबती नाव पर कोई नहीं चढ़ना चाहता, और इसीलिए नई सरकार भाजपा के नेतृत्व वाले एन.डी.ए. की होगी।

राजनाथ सिंह ने पिछड़े आदिवासियों के लिए बनाई गई प्रधानमंत्री जनमन योजना की बात की। उन्होंने कहा, साठ हजार आदिवासी गांवों को विकसित करने के लिए एक विशेष कार्यक्रम लॉन्च किया गया है। उन्होंने कहा, इस बात की जांच होनी चाहिए कि आदिवासी, जो राज्य में सबसे ज्यादा थे, उनकी आबादी घटकर 28 प्रतिशत ही कैसे रह गई है।

उन्होंने यह भी खुलासा किया कि पूर्ववर्ती कांग्रेस सरकार ने लंदन के बैंक में 102 टन सोना "गिरवी" रखा था, जिसे मोदी सरकार धनतेरस के बाद वापस ले आई है।

रक्षा मंत्री ने यह घोषणा भी की कि गोगो दीदी योजना से हर महिला को हर महीने ग्यारह तारीख को 2100 रूपए मिलेंगे। इसके अलावा महिलाओं को 500 रूपए में रसोई गैस सिलैण्डर तथा 2 सिलैण्डर मुफ्त मिलेंगे।

धारीवाल पर फिर से चलेगा एकल पट्टे का मुकदमा

जयपुर, 5 नवंबर। प्रदेश के चर्चित एकल पट्टा प्रकरण में पूर्व मंत्री शांति धारीवाल की मुश्किलें एक बार फिर बढ़ गई हैं। सुप्रीम कोर्ट ने मामले में राजस्थान हाईकोर्ट के उन आदेशों को रद्द कर दिया है, जिनके तहत तत्कालीन यू.डी.एच. मंत्री शांति धारीवाल के खिलाफ दर्ज एफ.आई.आर. और अदालती कार्रवाई को निरस्त करने के साथ ही. पूर्व आई.ए.एस. जी.एस. संधू सहित अन्य अधिकारियों के खिलाफ मुकदमा वापस लेने को हरी झंडी दी गई थी। जस्टिस सूर्यकांत और जस्टिस उज्ज्वल भुइयां की खंडपीठ ने यह आदेश अशोक पाठक की स्पैशल लीव पिटीशन (एस.एल.पी.) पर सुनवाई करते हुए दिए। अदालत ने हाईकोर्ट को कहा है कि वह प्रकरण की पुन: सुनवाई कर छह माह में उचित आदेश पारित करे।

- **सुप्रीम कोर्ट ने शांति धारीवाल व अधिकारियों को राहत देने वाले राजस्थान हाईकोर्ट के आदेश को निरस्त कर हाईकोर्ट को पुनः सुनवाई कर 6 माह में उचित आदेश पारित करने को कहा।**

सुप्रीम कोर्ट में राज्य सरकार की ओर से पक्ष रखने वाले अतिरिक्त महाधिवक्ता शिव मंगल शर्मा ने बताया कि गत अप्रैल माह में राज्य सरकार की ओर से सुप्रीम कोर्ट में पेश शपथ पत्र में प्रकरण में कोई आपराधिक मामला नहीं बनने की बात कही थी, लेकिन इस दौरान उनसे सलाह नहीं ली गई। वहीं, अब नया शपथ पत्र पेश कर हाईकोर्ट के आदेशों को रद्द करने की गुहार की गई थी। अति. महाधिवक्ता शर्मा ने बताया कि मामले में ए.सी.बी. ने तीन क्लोजर रिपोर्ट अदालत में पेश की थीं, वे धारीवाल सहित अन्य अधिकारियों से प्रभावित थीं। इन रिपोर्ट में सभी तथ्यों को शामिल नहीं किया गया था। ऐसे में ए.सी.बी. कोर्ट ने दो क्लोजर रिपोर्ट को खारिज कर दिया था और तीसरी पर कोई निर्णय नहीं हुआ था। इस दौरान मामला हाईकोर्ट चला गया। हाईकोर्ट ने गत जनवरी माह में पूर्व आई.ए.एस. जी.एस. संधू, निष्काम दिवाकर और ओंकार मल सैनी के खिलाफ मुकदमा वापस लेने को सही माना और धारीवाल के खिलाफ प्रकरण खारिज कर दिया। हाईकोर्ट के इस आदेश के खिलाफ आर.टी.आई. कार्यकर्ता अशोक पाठक ने सुप्रीम कोर्ट में एस.एल.पी. दायर की थी, जिसमें कहा था कि शिकायतकर्ता से राजीनामे के आधार पर केस को रद्द नहीं किया जा सकता।

मामले के अनुसार, साल 2014 में रामशरण सिंह की ओर से गणपति कंस्ट्रक्शन कंपनी को एकल पट्टा जारी करने में धांधली का आरोप लगाते हुए ए.सी.बी. में शिकायत दी गई थी। ए.सी.बी. ने यू.डी.एच. के तत्कालीन सचिव जी.एस. संधू, जे.डी.ए. ज़ोन-10 के तत्कालीन उपायुक्त ओंकारमल सैनी और निष्काम दिवाकर सहित अन्य के खिलाफ मामला दर्ज किया था। हाईकोर्ट ने 15 नवंबर, 2022 को आदेश जारी कर ए.सी.बी. में दर्ज एफ.आई.आर. और ए.सी.बी. कोर्ट में चल रही कार्रवाई तक को रद्द कर दिया था। इसके बाद हाईकोर्ट ने संधू सहित अन्य अधिकारियों के खिलाफ लंबित मुकदमा वापस लेने को हरी झंडी दे दी थी। इन दोनों आदेशों को अशोक पाठक ने सुप्रीम कोर्ट में चुनौती दी थी।

'जातिगत जनगणना हाशिये पर पड़े लोगों को न्याय दिलायेगी'

हैदराबाद, 05 नवंबर। कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने मंगलवार को कहा कि तेलंगाना की जाति जनगणना पूरे देश के लिए एक मिसाल कायम करेगी।

गांधी आज यहां बोवेनपल्ली में गांधी विचारधारा केंद्र में जाति जनगणना पर बुद्धिजीवियों और पिछड़े वर्ग समुदाय के सम्मेलन को संबोधित करते हुए कहा कि जातिगत भेदभाव असमानता को कायम रखता है। उन्होंने जोर दिया कि जातिगत जनगणना सभी समुदायों, खासकर पीढ़ि यों से हाशिए पर पड़े लोगों को न्याय दिलाने में मदद करेगी। उन्होंने विश्वास जताया कि जाति आधारित जनगणना निष्पक्ष प्रतिनिधित्व सुनिश्चित करेगी और दलितों, ओबीसी और महिलाओं को प्रभावित करने वाली सामाजिक-आर्थिक असमानताओं को उजागर करेगी।

- **राहुल गाँधी ने कहा कि तेलंगाना की जनगणना पूरे देश में मिसाल कायम करेगी।**

राष्ट्रदूत (एच.यू.एफ.) के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक सोमेश शर्मा द्वारा वतन प्रेस, सुधर्मा, एम.आई.रोड़, जयपुर एवं सुधर्मा-II, लालकोठी शॉपिंग सेंटर, टोंक रोड़, जयपुर से मुद्रित एवं प्रकाशित। संपादक:- राजेश शर्मा । आर.एन.आई. नं. 3641/57, ई-मेल-rastrdut@gmail.com कोटा कार्यालय:-पलायथा हाउस, छत्रपति शिवाजी मार्ग, कोटा। फोन:2386031, 2386032, फैक्स:0744-2386033 बीकानेर कार्यालय:-कुंम्भाना हाउस, हनुमान हत्था, बीकानेर। फोन:2200660, फैक्स: 0151-2527371 उदयपुर कार्यालय:-आयड, मेन रोड आयड, उदयपुर। फोन: 2413092, 2418945, फैक्स: 0294-2410146 अजमेर कार्यालय:-घूघरा घाटी, जयपुर रोड,अजमेर। फोन: 2627612, फैक्स:0145-2624665 जालोर कार्यालय :- जी 1/63, इन्डस्ट्रीयल एरिया, फेस प्रथम, जालोर। फोन: 226422, 226423, फैक्स: 02973-226424 हिण्डौनसिटी कार्यालय :- जी -1-201, रीको औद्योगिक क्षेत्र, हिण्डौनसिटी। फोन: 230200, 230400, फैक्स: 07469-230600 चूरू कार्यालय: एच-150, रीको औद्योगिक क्षेत्र, चूरू, फोन: 256906, 256907, फैक्स:01562-256908